इकाई -1सामाजिक विज्ञान की अवधारणा प्रकृति और सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अंतर

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 विज्ञान और सामाजिक अध्ययन की अवधारणा
1.4 सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान को शामिल करने का औचित्य
1.5 सामाजिक विज्ञान का अर्थ और परिभाषा
1.6 सामाजिक विज्ञान की प्रकृति
1.7 सामाजिक विज्ञान की विशेषताएँ
1.8 सामाजिक विज्ञान का विषय क्षेत्र
1.9 सामाजिक विज्ञान की पृष्ठभूमि
1.10 सामाजिक अध्ययन की वास्तविक अवधारणा
1.11 सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषा
1.12 सामाजिक अध्ययन की अवधारणा एवं प्रकृति
1.13 सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र
1.14 सामाजिक अध्ययन और सामाजिक विज्ञान में अन्तर
1.15 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

भारत में स्वतन्त्रता से पहले सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन का स्तर और क्षेत्र फैला हुआ नहीं था। परंतु धीरे-धीरे हमारे देश में सामाजिक विज्ञान और अध्ययन विषय की लोकप्रियता बढ़ने लगी। आज सामाजिक अध्ययन विषय के नाम को भी परिवर्तित करके सामाजिक विज्ञान कर दिया गया है। क्योंकि दर्शन शास्त्रियों के द्वारा माना गया है, कि यह भी एक वैज्ञानिक विषय है। इसमें अनेक प्रायोगिक कार्य को शामिल किया गया है। पिछले कुछ वर्षों से सामाजिक विज्ञान

विषय ने काफी वृद्धि कि है। इस विषय से समाज में काफी प्रगति हुई है। जिससे समाज एवं विज्ञान के प्रति अच्छे दृष्टिकोण का विकास हुआ है। सामाजिक विज्ञान के विकास से समाज विज्ञान एवं प्रकृति के सहसम्बध को समझ पाया। सामाजिक विज्ञान ने समाज में एक विकास की क्रांति के रूप में अपनी पहचान बनाई। सामाजिक विज्ञान ने अच्छी आदतों, आचरण, कौशलो का विकास अन्तः निर्भरता की भाव का विकास, समाजवादी दृष्टिकोण, सामाजिक जटिलताओं को समझने में विकास, राष्ट्रीय सद्भावना का विकास, वर्तमान को समझने का विकास और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास किया।

आशा है कि यह इकाई सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं लाभकारी सिद्ध होगी। यदि इकाई में सुधार के लिए सुझाव दिए जाए तो लेखक सम्भव प्रयास करेगा कि उन्हें अगले संस्करण में शामिल किया जाए। वर्तमान समय में विभिन्न विष्वविद्यालयों में ने बी0 एड0 और डी0 एड0 के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करने का प्रयास किया गया है। इस इकाई में सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान षिक्षण में समय-समय पर अध्यापक प्रषिक्षकों तथा प्रषिक्षण प्राप्त करे रहे। षिक्षकों की कठिनाईयों को दूर करने का एक लघु प्रयास हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास है कि आपको सामाजिक विज्ञान की प्रकृति एवं अवधारणा तथा इसके विभिन्न अंगों से परिचित कराना। सामाजिक विज्ञान एवं सामाजिक अध्ययन की अवधारणा को बताना तथा इनमें पाए जाने वाले अंतरों से परिचित कराना सामाजिक विज्ञान की समुचित परिभाषा तक पहुँचने के लिए हमने इस क्षेत्र के विभिन्न विचारकों के विचार आपके लिए प्रस्तृत करना। सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र एवं विशेषताओं से परिचित कराना। इस इकाई के माध्यम से हमने सामाजिक विज्ञान की समाज में भूमिका के बारे में बताने का प्रयास किया है। सामाजिक विज्ञान के माध्यम से समाज में होने वाले बदलाव को समझाने का प्रयास किया गया है। इस ईकाई के द्वारा आप सामाजिक विज्ञान की समाज में आवश्यकता को समझ सकेगें। और इस ईकाई के द्वारा समाज में पायेगे। सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन की उपलब्धियों पर चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि आप बता सके।

1. सामाजिक विज्ञान की अवधारणा और अर्थ को बता पायेगे।
2. सामाजिक विज्ञान की परिभाषा व प्रकृति को समझ पायेगे।
3. सामाजिक विज्ञान का विषय क्षेत्र समझ पायेगे।
4. सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत कुछ विशयों को षामिल करने का औचित्य का स्वरूप समझ पायेगे।
5. सामाजिक अध्ययन की ऐतिहासिक पृश्ठभूमि का वर्णन कर पायेगे।
6. सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के अंतर को स्पष्ट कर सकेगे।

1.3 विज्ञान और सामाजिक अध्ययन की अवधारणा

सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन से अभिप्राय ऐसे विषय से है जो मानवीय सम्बन्धों की जानकारी प्रदान करता है। राजनीति, इतिहास, सामाजिक अध्ययन का जन्म अमेरिका में हुआ जिसमें भूगोल शास्त्र तथा अर्थशास्त्र का समावेष था । कमेटी आफ टेन ने इस समाज शास्त्र से जोड़कर सामाजिक अध्ययन बना दिया। धीरे धीरे यह विषय इंग्लैंड तथा यूरोप के अन्य देशों में भी पूर्ण रूप से विकसित हो गया। आज भारत में सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन विषय देषभर के स्कूलों में किसी न किसी रूप में पढ़ाए जा रहें हैं। पहले आमतौर पर ऐसी स्थिति नहीं थी। आजादी के पहले समाजशास्त्र , राजनीति विज्ञान और यहाँ तक कि अर्थशास्त्र की षिक्षा भी मुख्य रूप से विष्वविद्यालयों तक सीमित थी। आजादी के बाद सामाजिक विज्ञान सामाजिक अध्ययन के विशयों की षिक्षा में निरन्तर विस्तार हुआ तथा जल्दी ही इन्हें स्कूलों में पढ़ाए जाने की माँग बढ़ने लगी। सामाजिक विज्ञान का वर्णन कभी-कभी नीति विज्ञान के रूप में किया जाता हैं। हालाँकि नीति-निर्धारण में समाजशास्त्र और राजनैतिक विज्ञान जैसे विशयों का योगदान परोक्ष व सीमित ही रहता है। वैसे भी, स्कूली विद्यार्थियों को नीति-निर्माता या फिर नीति-निर्माण में परामर्षदाता बनाने का लक्ष्य रखना अपने आप में बहुत ही अव्यावहारिक बात होगी। पर अर्थव्यवस्था राजनीति और किस तरह काम करते हैं, इसके बारे में सामान्य जानकारी होने से विद्यार्थियों को उनकी आगे की जिन्दगी में यह समझने में मदद मिलेगी कि सार्वजनिक जानकारी में नीतियों की क्या भूमिका होती हैं। यह उन्हें इस बारे में एक षिक्षित दृश्टिकोण बनाने का आधार प्रदान कर सकता है कि कुछ खास नीतियाँ ही क्यों अपनाई जाती हैं। सामाजिक विज्ञान का ज्यादा महत्वपूर्ण योगदान नीति-निर्धारण के लिए प्रषिक्षित करने में नहीं हैं बल्कि षिक्षित व समझदार नागरिक तैयार करने में हैं। लोकतंत्र के अच्छे संचालन के लिए षिक्षित नागरिक वर्ग का होना अपरिहार्य है। कोई व्यक्ति अच्छे नागरिक होने के गुण अनायास हवा में से नहीं पकड़ता, उन्हें हासिल करके ग्रहण करना और बढ़ावा देने के लिए एक खास प्रकार की षिक्षा की जरूरत होती हैं। एक अच्छा नागरिक होने के लिए सिर्फ भौतिक व जैविक क्रियाकलापों का जानकार होना ही काफी नहीं होता, अच्छे नागरिक को उस सामाजिक संसार के बारे में भी समझ होना जरूरी है जिसका वह हिस्सा है। आधुनिक समय में सामाजिक अध्ययन विषय के नाम को भी परिवर्तित करके सामाजिक विज्ञान कर दिया गया। क्योंकि यह माना जाता है कि यह भी एक वैज्ञानिक विषय है।

1.4 विज्ञान के अन्तर्गत सामाजिक विज्ञान को शामिल करने का औचित्य

मनुश्य पैदा होने के बाद से ही ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है। ज्ञानार्जन की प्रक्रिया जाने-अनजाने जीवन पर्यन्त चलती रहती है। ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन होते हैं। कुछ ज्ञान वह व्यक्गित

अनुभव से प्राप्त करता है और कुछ दूसरों के अनुभवों से। इस प्रकार यह प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। मनुश्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समूह मे रहना पसन्द करता है। समूह व्यक्तियों का एक सगंठन है जो स्वनिर्मित विभिन्न द्वारा संचालित होता है जिससे सभी के हित सुरक्षित रह सकें। यही समूह संगठित स्वरूप में समाज कहलाते हैं। प्रारम्भ में मनुष्य एक साधारण, प्राकृतिक एवं सरल जीवन जीता था, किन्तु विकास के पथ पर मनुश्य का यह साधारण एवं सरल जीवन क्रमषः जटिल होता गया। परिणामः इन समूहों में होने वाली व्यक्ति की अन्त क्रियाएँ भी कालान्तर में जटिल से जटिलतम होती गई जिसके कारण उसके व्यवहार को जानने एवं नियन्त्रित करने के लिए समाज को नये सिरे से सोचना पड़ा। आज मनुश्य विज्ञान की गोद में खेल रहा है, इण्टरनेट पर बैठकर वह दुनिया को आमने-सामने से देख रहा है और महसूस कर रहा है। वह सारे संसार को global village का स्वरूप देने से अधिक दूर नहीं है। आज जीवन की रफ्तार बहुत तेज है और ऐसे में मानवीय मूल्यों की उपेक्षा स्वाभाविक है। मनुश्य मानवीय मूल्यों की चिन्ता से दूर भौतिकवादी अर्थवाद के प्रांगण में बैठा स्वच्छंद अट्टाहस कर रहा है। अर्थवाद के इस युग में मनुश्य का भौतिकवादी होना स्वाभाविक है। मनोविज्ञान ने इसे स्पश्ट कर दिया है कि भौतिकवादी वातावरण में मनुश्य के भीतर सहिश्णुता, सौहार्द एवं सहयोग तथा त्याग के स्थान पर व्यक्तिवादी भावना सिर उठाती है जो उसे स्वार्थी बनाने के साथ समाज में आपसी सम्बन्धों की मधुरता को प्रभावित करती है। इससे समाज का बुनियादी ढं ाचा प्रभावित होता है। अतः समाज की बुनियाद मजबूत बनाने के लिए समाज के नये सदस्यों को ऐसे प्रषिक्षण की आवष्यकता होती है जो उसे मानवीय गुणों से युक्त बनाये रखने के साथ समाज में उसके पारस्परिक सम्बन्धों की मधुरता का आधार प्रदान करता है।

सामाजिक प्राणी होने के नाते उसे सामाजिकता की शिक्षा प्राप्त करना आवष्यक हो जाता है। जीवन की सफलता बहुत कुछ सामाजिकता पर निर्भर करती है। भारत एक प्रजातान्त्रिक देष है। साथ ही यहाँ अनेक धर्मों, भाशा व जाति के लोग रहते है। देश की शान्ति व समृद्धि के लिए यहाँ के नागरिकों में सामाजिकता व सहयोग की भावना व श्रेश्ठ नागरिक के गुणों का विकास केवल समुचित षिक्षा के द्वारा विशयों में विशेष रूप से इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र व अर्थशास्त्र के विषय आते हैं। भारत के उज्ज्वल भविश्य हेतु एक ऐसी षैक्षिक संरचना की आवष्यकता है जो बालकों में उचित सामाजिक मूल्यों व दृश्टिकोणों का निर्माण कर सके, माननीय सम्बन्धों की व्याख्या कर सके, भारत की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति गौरव की भावना का विकास कर सके, रूढ़िवादी विचारधारा के स्थान पर व्यापक दृश्टिकोण को निर्मित कर सकें। अर्थात् षिक्षा द्वारा ऐसे सक्षम नागरिक उत्पन्न हो जो देष के संरचनात्मक विकास में अपना भरपूर योगदान दें। शैक्षिक पाठ्यक्रम के समस्त विषयों में से एक विषय ऐसा है जो उपर्युक्त वर्जित कार्यों को सम्पादित करने का प्रयास करता है और वह विषय सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन है।

1.5 सामाजिक विज्ञान का अर्थ और परिभाषा

सामाजिक विज्ञान अंग्रेजी के Social Science का हिन्दी रूपान्तर है। Social Science शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। Social+Science सोशल (Social) शब्द का अर्थ है सामाजिक और साइंस (Science) का अर्थ है- विज्ञान। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान से अभिप्राय मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उनके सामाजिक समूहों में क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन है।

सामाजिक विज्ञान विषय क्षेत्र हैं जो समाज और समाज के भीतर व्यक्तियों के बीच यह संबंधों का अध्ययन करता है। समाजिक विज्ञान में इस तरह के भूगोलपृथ्वी का अध्ययन किया और इसकी विशेष ताओं, निवासियों, और घटना (मानव विज्ञान मनुश्य का अध्ययन), इतिहास के रूप में कई षाखाओं में वर्गीकृत किया जाता है (अतीत के अध्ययन), अर्थशास्त्र उत्पादन, वितरण और माल की खपत का अध्ययन और सेवाओं, राजनीति विज्ञान सिद्धांत और राजनीति और विवरण और राजनीतिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवहार। सामाजिक विज्ञान समाज, लोग, व्यवहार, संस्कृतियों और नजरिए के साथ सौदों का एक क्षेत्र हैं। इसमें अर्थव्यवस्था और इतिहास का अध्ययन शामिल हैं | मानव एक सामाजिक प्राणी है मानव समाज में रहकर अपना और समाज का विकास करता है समाज में उन्नति और विकास के लिए मानव का सहयोग आवष्यक हैं मानव का विकास भी समाज के विकास पर निर्भर करता है। सामाजिक विज्ञान एक सामान्य आदमी के वैज्ञानिक अध्ययन को पूर्ण करता हैं। यह एक अनुषासन या विज्ञान की षाखा है कि मानव व्यवहार के सामाजिक सं ास्कृतिक पहलुओं के साथ संबंधित है। सामाजिक विज्ञान में आम तौर पर सांस्कृतिक नृ ृविज्ञान, अर्थशास्त्र , राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र , अपराध, और सामाजिक मनोविज्ञान षामिल हैं। सात सामाजिक विज्ञान हैं मानव विज्ञानः अर्थशास्त्र , भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान हैं।

सामाजिक विज्ञान का शाब्दिक अर्थ है। मानवीय परिप्रेक्ष्य में समाज का अध्ययन यह एक ऐसा विषय है जिसमें मानव की उन्नति, वर्तमान तथा भविश्य में वातावरण सम्बन्धी अन्तः क्रियाओं का वर्णन किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में प्रदान किए जाने वाला ज्ञान मानवीय सम्बन्धों संस्थाओं तथा समस्याओं के बारे में महत्वपूर्ण सामन्यीकरणों से सम्बधित होता है जिसे पर्याप्त तथ्यों के आधार पर प्रदान किया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। सामाजिक विज्ञान व्यक्ति को जीवन के बारे में विभिन्न प्रष्न पूछने के लिए अवसर तथा प्रेरणा प्रदान करता है। प्राकृतिक विज्ञानों के मानव की प्रकृति आश्चर्यपूर्ण है। जिसके परिणामस्वरूप यातायात अनुसंधान निर्माण तथा अन्य क्षेत्रों में निरन्तर परिवर्तन होते रहे है। जबकि मनुश्य ने भौतिक सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। परन्तु वह जटिल युग की समस्याओं को सुलझाने में अपनी योग्यताओं का प्रयोग करने में सफल नहीं हो पाया है। षिक्षा-षब्द कोश के अनुसार, ‘‘सामाजिक विज्ञान मानव समाज के विशेष क्षेत्रों जैसे- अर्थशास्त्र और राजनीति शास्त्र से व्यवहार रखने वाला विज्ञान का एक समूह है।

गिलिन एवं गिलिन के अनुसार, ''समस्त सामाजिक विज्ञान मुख्य रूप से मानव क्रियाओं और व्यवहारों का उसके सामाजिक समूहों के रूप में अध्ययन करता है। वे आपस में मुख्य रूप से अपनी रूचियों की व्यवस्था के कारण अलग हैं।

जॉनबी माइकेलिसः- सामाजिक विज्ञान मानव तथा उसके सामाजिक एवं भौतिक वातावरण से सम्बन्धित अन्तः क्रियाओं का अध्ययन है। यह मानवीय सम्बंधों से सम्बन्धित है। सामाजिक विज्ञान का प्रमुख कार्य षिक्षा के प्रमुख उद्देश्य के अनुरूप है। लोकतांन्त्रिक नागरिकता का विकास।

जेम्स हैमिंगः- सामाजिक विज्ञान ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक सम्बन्धों तथा अन्तः सम्बन्धों का अध्ययन है।

1.6 सामाजिक विज्ञान की प्रकृति (Nature of social science)

इस अनुशासन की वास्तविक प्रकृति को अच्छी तरह से ऊपर परिभाषाएँ का विष्लेशण करके समझा जा सकता है।

1. एक विभिन्न विषयों की अद्वितीय संयोजन।
2. मानवीय रिश्तों के अध्ययन में योगदान।
3. उम्र के माध्यम से मनुश्य से मनुश्य के विकास अध्ययन।
4. एक अध्ययन के पाठ्यक्रम यथार्थवादी।
5. यह कोर पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
6. यह कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्धता शामिल है।
7. पौष्टिक सामाजिक जीने के लिए शिक्षार्थी की तैयारी करना है।

1.7 सामाजिक विज्ञान की विशेषताएँ

सामाजिक विज्ञान की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं सामाजिक विज्ञान सांस्कृतिक ज्ञान के वे अंग हैं, जो विषिश्ट क्षेत्रों में मनुश्य की क्रियाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव रखते हैं।

1. इसमें सत्य तथा ज्ञान की खोज पर बल दिया जाता है।
2. यह ज्ञान का वह भाग है जिसका किसी भी क्षेत्र में मानव की क्रियाओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
3. सामाजिक विज्ञान मानव समाज का उन्नत अध्ययन है, जो युवा छात्रों के लिए तैयार किया गया है।

4. सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य मानवीय सम्बन्धों के विषय में नये सत्य की खोज करना है, जिससे सामाजिक उपयोगिता के लिए योगदान दिया जा सकें।
5. सामाजिक विज्ञान परम्परागत विषयों से विषयवस्तु को अंगीकृत करता है, जो मनुश्य और समाज से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है।
6. यह उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाने वाला मानव समाज का अनुवर्ती अध्ययन है।
7. मिश्रण की अपेक्षा एकीकृत (Integrated rather than a mixture)- सामाजिक विज्ञान मानव से सम्बन्धित विभिन्न विषयों का संश्लेषण है। यह देखने में विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, राजनैतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि का मिश्रण प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में यह एक विशिष्ट विषय है।
8. सम्बन्धों का अध्ययन (Study of Relationships)- यह लोगों के पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों तथा वातावरण के साथ उनके अर्न्तसम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह सामाजिक विचारधारा के रूप में व्यक्ति का अध्ययन करता है अर्थात् यह मानव को सामाजिक मानव मानता है।
9. वास्तविक अध्ययन (Realistic Study)- सामाजिक विज्ञान वास्तविकता पर आधारित है क्योंकि यह जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में मानवीय अन्तः क्रियाओं, सहयोग, सम्बन्धों तथा क्रियाओं-प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। इस तथ्य की पुष्टि 'शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोष' के इन शब्दों से भी की जा सकती है, ''सामाजिक विज्ञान वह अध्ययन है जो मानव जीवन के रहन-सहन के ढंगांे, मूलभूत आवश्यकताओं, क्रियाओं जिनमें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संलग्न रहता है। तथा संस्थाओं, जिनका उसने विकास किया है, का ज्ञान प्रदान-करता है।

"The Social Sciences are those studies provide understanding of man's way of living, of the basic needs of the man, of the activities in which he engages to meet his needs and of the institutions he has develop."- Encyclopaedia of Educational Research.

10. जीवन के लिए तैयारी (Preparation for Life)- यह मनुष्य की आधारभूत क्रियाओं से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करता है। यह विषय सामाजिक, आर्थिक तथा व्यावसायिक रूप से उपयोगी है। यह विद्यार्थियों की अपने देश, विश्व तथा भावी जीवन में सुनहरा जीवन व्यतीत करने के लिए सहायता करता है।

11. मानव का अध्ययन (James Hemmings) के अनुसारए ''सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत हम जिस तथ्य का अध्ययन करते हैं, वह किसी विशेष समय पर, किसी विशेष स्थान में मनुष्य का जीवन है। सामाजिक विज्ञान के मुख्य उद्देश्य -मानव का अतीत तथा वर्तमान में अपने वातावरण के साथ संघर्ष, मानव का अपनी शक्तियों का तथा संसाधनों का प्रयोग या दुरूपयोग, उसका विकास तथा सभ्यता की आवश्यक एकता है।''

"What we study in Social Sciences is the life of man in some particular place at some particular time. Man's struggle with his environment yesterday and today, man's use or misuse of his powers resources, his development, the essential unit of civilization these are in main themes of Social Sciences."

12. जागरूकता विकसित करना (Create Awareness)- यह विषय सामाजिक तथ्यों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करता है तथा इस बात की भी जानकारी प्रदान करता है कि प्रकृति ने किसी सीमा तक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में अपना योगदान दिया है, समाज किस प्रकार इसके विकास के लिए इसकी शक्ति तथा संसाधनों का प्रयोग कर रहा है तथा मानवीय जीवन के विकास तथा निर्माण में आने वाली रूकावटों तथा दैनिक जीवन में समाज को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।
13. व्यावहारिक अध्ययन (Practical Study)- सामाजिक विज्ञान सामाजिक विज्ञान की व्यावहारिक शाखा है क्योंकि इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों में कौशलों, रूचियों, अभिवृत्तियां तथा उचित दृष्टिकोण का विकास होता है।

जे. एफ. फोरेस्टर के शब्दों में- ''सामाजिक विज्ञान आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है, जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओं को संग्रहित या एकत्रित करने की अपेक्षा मानव की कृत्तियों आदर्शों तथा रूचियांे का निर्माण करना है।''

"Social Science are part of the modern approach to education the aim of which is the formation of standards, attitudes, ideals and interests rather than the accumulation of factual information."

14. प्रयोजनवादी दर्शन पर आधारित (Based on pragmatic philosophy)- प्रयोजनवादी दर्शन क्रियाओं तथा अनुभवों से सम्बन्धित है। सामाजिक विज्ञान की सहायता से विद्यार्थी वर्तमान के अनुभवों के आधार पर अपने भविष्य को विकसित करना सीखते हैं। इस प्रकार यह विषय केवल सैद्धान्तिक ज्ञान न देकर

प्रायोगिक ज्ञान भी प्रदान करता है। अतः स्थानीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों के मिलजुल कर जीवनयापन करने तथा साथ-साथ काम करने का अध्ययन सामाजिक विज्ञान कहलाता है। मनुष्य द्वारा अपने अतीत की जानकारी में वृद्धि करना तथा अपनी स्वयं प्रवृत्तियों की व्याख्या करना और समाज का प्रभावी सदस्य बनने के लिए अपने कौशलों का विकास करने का अध्ययन ही सामाजिक विज्ञान है। वास्तव में देखा जाए तो सामाजिक विज्ञान समस्त समाज के लोगों के जीवन का अध्ययन है- उस समाज का जिसका हर व्यक्ति एक अंग होता है। इन सारे अंगों को एक-दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है।

1.8 सामाजिक विज्ञान का विषय क्षेत्र (Scope of Social Sciences)

सामाजिक विज्ञान विषय क्षेत्र से हमारा तात्पर्य सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के विस्तार, विभिन्नता, अधिगम अनुभवों की सीमा तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में उपयोगिता से है। विषय की महत्ता उसकी विषय सामग्री के साथ-साथ विद्यार्थियों में विकसित किए जाने वाले कौशलों से भी है, जिसके परिणामस्वरूप वे समाज के उत्तरदायी नागरिक बन सकें। इस प्रकार यह केवल मात्र शाब्दिक तथ्यों का स्मरण नहीं है बल्कि अनुभवों का विस्तार भी है। सम्पूर्ण विश्व बहुत छोटा है तथा अन्तः निर्भर है। ग्लोब के किसी भी क्षेत्र में घटित घटना हमें पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। विश्व संचार, यातायात तथा भविष्य के लिए भय के क्षेत्र में एकीकृत है। विश्व यद्यपि विभिन्न देशों में बँटा हुआ है, परन्तु सभी लोग तथा राष्ट्र किसी विचारधारा के पक्ष या विपक्ष में, आर्थिक सहयोग में या किसी सैनिक प्रणाली में एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। माइकैलिस के शब्दों में सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र इतना विशाल होना चाहिए कि विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के अनुभव मिल सकें और उनका ज्ञान भी विस्तृत हो सके जिससे वे महत्वपूर्ण समस्याओं पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार कर सकें। इसके अतिरिक्त सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र इतना विशाल होना चाहिए कि वह व्यक्ति तथा समाज दोनों की ही आवश्यकताओं को पूरा कर सके और दैनिक जीवन की समस्याओं तथा परिस्थितियों से उसका पूर्ण रूप से सम्बन्ध हो। अन्ततः एक व्यक्ति वर्तमान विश्व का एक अच्छा नागरिक तब तक नही बन सकता, जब तक उसमें विश्व की प्रमुख वास्तविकताओं की सामान्य सूझ-बूझ न हो। किसी भी राज्य या राष्ट्र को पृथक् रूप से नहीं पढ़ाया जा सकता। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र बहुत व्यापक है क्योंकि वह जीवन के हर क्षेत्र जैसे- सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक आदि के ज्ञान को सम्मिलित करता है, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

1.9 सामाजिक अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी में विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र , राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र का अध्ययन एक-दूसरे से पृथक विषय के रूप में होता था। वास्तव में, सामाजिक अध्ययन विषय का प्रादुर्भाव सन् 1892 में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। कमेटी ऑफ दी सोषल स्टडीज ऑफ दी नेषनल एजूकेषन ऐसोसियेषन्स कमीषन ऑफ दि रिऑर्गेनाइजेषन ऑफ सेकेण्डरी एजूकेषन (Committee of the social studies of the national education association commission on the reorganization of secondary education) के प्रतिवेदन में सन् 1916 में इस विषय को मान्यता मिली तथा इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकार करने हेतु सुझाव दिया गया। 1921 में इस विषय के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन करने के लिए अमेरिका में राष्ट्रीय परिषद् का निर्माण किया गया। सोशल स्टडीज (सामाजिक अध्ययन) के विकास के लिए 1934 में एक कमीषन की नियुक्ति की गई। इसके बाद सामाजिक अध्ययन विषय के क्षेत्र में बहुत-से अनुसंधान कार्य किये गये जिनके फलस्वरूप सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप का विकास हुआ और इसको क्षेत्रीय विषय (Field Subject) के रूप में मान्यता प्रदान की गई। भारत में सामाजिक अध्ययन विषय का चयन महात्मा गाँधी की बेसिक षिक्षा के साथ प्रारम्भ हुआ। गांधीजी विभिन्न विशयों के समन्वित रूप पर जोर देते थे। इसके उपरान्त विष्वविद्यालय कमीषन, माध्यमिक षिक्षा आयोग (मुदालियर कमीषन) तथा कोठारी कमीषन ने समन्वित ज्ञान के महत्व को समझा व उस पर प्रकाष डाला। उन्होंने आधुनिक षैक्षिक परिवेष में सामाजिक अध्ययन को महत्व प्रदान कर एक आवष्यक विषय के रूप में प्रतिपादित कर इसको मान्यता प्रदान की।

1.10 सामाजिक अध्ययन की वास्तविक अवधारणा

स्कूल बोर्ड विक्टोरिया (यू. एस. ए.) की सामाजिक अध्ययन गठन (समिति) ने अपने प्रकाषन स्कूलों के लिए सामाजिक अध्ययन में सामाजिक अध्ययन की अवधारणा कोअग्र प्रकार से स्पश्ट किया है- ‘‘सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत मानव के जीवन का स्थान-विशेष व समय-विशेष के अनुसार अध्ययन करते हैं। इसके लिए हम उन सभी विशयों का प्रयोग करते हैं, जो उनकी समस्याएं जानने तथा समझने में हमारी सहायता करते हैं कि मानव पहले उन समस्याओं से कैसे निपटता था या अब कैसे निपटता है? सामाजिक अध्ययन का लक्ष्य मानव से जुड़ी वर्तमान समस्याओं को अच्छी तरह से समझना हैं, इसके द्वारा भावी युग पीढ़ी को यह बात समझाने की कोषिष करते हैं कि मानव जाति का विकास कैसे करते हैं? युगों से मानव कैसे विकसित होता आया है, उसने अपने परिवेश (वातावरण) को किस प्रकार से अपने अनुकूल करना सीखा और उसका किस प्रकार उपयोग किया और उसके जीवन पर आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए क्या परिवर्तन हुए और मानव के जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया ? सामाजिक अध्ययन के प्रमुख अंग हैं- पिछले तथा वर्तमान वातावरण

से मानव का संघर्श, स्वयं की अपनी षक्तियों, संसाधनों का उचित व अनुचित प्रयोग, विकास का क्रम तथा सभ्यता की अनिवार्यता एकता''।

प्रो. एम. पी. मुफात (**M.P. Moffatt**) के अनुसार- ''सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र हैं, जो युवकों को आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता देता है। ऐसा करने के लिए वह अपनी विषय-वस्तु को समाज-विज्ञानों तथा सामाजिक जीवन से प्राप्त करता है।

1.11 सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं परिभाषा

सामाजिक अध्ययन शब्द अंग्रेजी के 'Social Studies' का हिन्दी रूपान्तर है। यहाँ Social से तात्पर्य 'समाज' का तथा Studies से तात्पर्य 'अध्ययन' से है। इस प्रकार Social Studies' का अर्थ हैं- 'समाज का अध्ययन' अर्थात् मानवीय परिप्रेक्ष्य में समाज का अध्ययन। मानवीय ज्ञान प्राकृतिक विज्ञानों और सामाजिक विज्ञानों में वर्गीकृत किया गया है। प्राकृतिक विज्ञानों में भौमिक विज्ञान, भूगर्भशास्त्र , रसायनशास्त्र , नक्षत्र विज्ञान, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान इत्यादि सम्मिलित हैं और सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत वे विषय आते हैं जो मानव के उद्भव, संगठन तथा विकास से सम्बन्धित हैं। मानवीय क्रियाओं एवं उसके प्रभावों का अध्ययन इतिहास, नागरिकशास्त्र , अर्थशास्त्र , मानवशास्त्र , समाजशास्त्र एवं भूगोल इत्यादि के समन्वित रूप में सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत किया जाने लगा है। इसीलिए स्कूल विशयों में सामाजिक अध्ययन विषय को विशेष महत्व दिया गया है। सामाजिक अध्ययन विषय की अवधारणा को स्पश्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार प्रस्तुत हैं-

NCERT के अनुसार, ''सामाजिक अध्ययन, मनुश्यों तथा सामाजिक भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है।''

एम. पी. मोफरत के अनुसार, ''जीने की कला बड़ी सुन्दर कला है, सामाजिक अध्ययन द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होता है।''

ई. बी. वेस्ले के अनुसार, ''सामाजिक अध्ययन, सामाजिक विज्ञानों के आधारभूत तथ्यों का अध्ययन है।''

जारोलिमिक के अनुसार, ''सामाजिक अध्ययन, मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है।''

1.12 सामाजिक अध्ययन की अवधारणा एवं प्रकृति

षिक्षण एक आजीवन प्रक्रिया है एवं स्कूल विविध विशयों का ज्ञान प्रदान करता है। कला, भाशा, गणित इत्यादि सदृष विषय मानवीय मूल्यों एवं अनुभवों का अध्ययन करते हैं किन्तु इसकी विषयसामग्री के रूप में लोगों को अध्ययन कराना सामाजिक अध्ययन का एक विशेष कार्य है

इस प्रकार हम सामाजिक अध्ययन की अवधारणा को निम्न प्रकार से परिभाशित कर सकते हैं। कुछ साधारण षब्दों में हम सामाजिक अध्ययन को समझने की कोषिष करेंगें।

1. यह लोगों एवं उनके पर्यावरण का अध्ययन है।
2. यह अध्ययन करता है कि पूरी दुनिया में लोग मितव्ययी एवं राजनीतिक रूप से स्वतंत्र वास कैसे करते हैं।
3. यह कौषल विकसित करने के क्रम में वर्तमान प्रवृति की व्याख्या करने के लिये किसी के (मानव) अतीत की समझ को बढ़ाता है जिससे कि वह किसी समाज में जीवित रह सके।
4. यह मानव को अपने जीवन को समझने मे सहायता करता हैं।

1.13 सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र

सामाजिक अध्ययन क्षेत्र के विषय में यह सबसे बड़ी जटिलता है कि इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि उसकी विषय-वस्तु के स्वरूप के विषय में अनेकों भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सामाजिक अध्ययन का कोई निष्चित क्षेत्र नहीं है। व्यक्ति और समाज की आवष्यकताएं और क्रियाकलाप ही सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। इसका सीधा सम्बन्ध मनुश्य (मानव) की मूलभूत आवष्यकताओं से हो व जिनका उदेद्ष्य क्रियात्मक मूल्य हो तथा जो विषय के बीच की मानव निर्मित दीवारों को समाप्त करके उनको एकीकृत रूप प्रदान करता है। आज के बदलते परिदृष्य को ध्यान में रखते हुए आधुनिक विचारधारा के अनुसार सामाजिक अध्ययन में निहित ही न केवल सामाजिक अध्ययनों को सरलकृत एवं पुनः संगठित सामग्री को माना जाता है बल्कि अन्तर्राश्टीय सम्बन्ध नागरिकता की षिक्षा, विवादास्पद मामले, अन्तर सांस्कृतिक सम्बन्ध आदि विशयों को भी स्थान प्रदान किया जाता है। अतः संक्षेप में इसके क्षेत्र अग्रलिखित हैं-

निकलसन तथा राइट के अनुसार, ‘‘वस्तुतः इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक और सम्पूर्ण विष्व में मानव का वर्तमान सामाजिक जीवन ही इसका मूल है।’’

समाजिक अध्ययन की आवष्यकता सामाजिक अध्ययन आधुनिक विष्व एवं उसकी सभ्यता को स्पश्ट करने में सहायक हैं। इस कारण इस बदलते हुए समाज को समझने के लिए सामाजिक अध्ययन की आवष्यकता है, क्योंकि यह उसकी वर्तमान परिस्थितियों को स्पश्ट करने तथा उसमें व्यवस्थित होने की क्षमता उत्पन्न करने में समर्थ हो सकेगा

1.14 सामाजिक अध्ययन और सामाजिक विज्ञान में अन्तर

सामाजिक अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान दोनों ही विषय समाज से सम्बद्ध हैं और दोनों ही विशयों का मूल आधार मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन है। इस प्रकार उक्त दूश्टिकोण से सामान्यता

लोग सामाजिक अध्ययन और सामाजिक विज्ञान को एक ही अर्थ में लेते हैं परन्तु यथार्थ रूप में इन दोनों विशयों में अन्तर है। इस अन्तर को सार संक्षेप में अग्रवत् प्रस्तुत किया जा रहा है-

क्रम सं.	क्षेत्र प्रमुख तत्व	सामाजिक विज्ञान	सामाजिक अध्ययन
1.	उदेद्ष्य	सामाजिक उपयोगिता	षैक्षणिक उपयोगिता
2.	षैक्षिक स्तर	माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए	निम्न-माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए
3.	बौद्धिक स्तर	प्रौढ़ावस्था, मानवीय सम्बन्धों का उच्चत्तर व विद्वतापूर्ण अध्ययन	बाल्यावस्था, माननीय सम्बन्ध प्रसंग आधारित व सरल अध्ययन व्यावहारिक
4.	प्रस्तुतीकरण	सैद्धान्तिक	व्यावहारिक
5.	क्षेत्र	व्यापक, ज्ञान के भण्डार	सीमित, सामाजिक विज्ञानों की प्रस्तावना हेतु
6.	गहनता	सम्प्रत्यय आधारित (गूढ़ रहस्यात्मक व अनुसंधानात्मक)	उदीपक आधारित (सुलझे रहस्यों व खोजे, तथ्यों की प्रयोगषाला)
7.	प्रयोजन	विषय-वस्तु का संष्लेशण	विषय-वस्तु का विष्लेशण
8.	प्रयोग एवं व्यवहार	मानवीय सम्बन्धों को नये तथ्यों व दृश्टिकोणों तथा व्यवहारों की खोज करना	सामाजिक विज्ञानों द्वारा खोजे गये तथ्यों व दृश्टिकोणों व व्यवहारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करना
9.	विषय	इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र , अर्थशास्त्र , समाजशास्त्र	सम्बन्ध स्थापना

		, मानवशास्त्र , न्यायशास्त्र , दण्डशास्त्र	
10.	स्वरूप	परिवर्तनषील / अनिष्चित	स्थायी / निष्चित
11.	षिक्षण विधि	व्याख्यान व प्रयोग आधारित	प्रस्तुतीकरण व Illustration (उदाहरण) आधारित

उपर्युक्त विवेचन से स्पश्ट है कि सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में सैद्धान्तिक रूप से कोई विशेष अन्तर नहीं है परन्तु व्यावहारिक दृश्टि से कुछ अन्तर अवष्य परिलक्षित होता है। इस सम्बन्ध में वैस्ले महोदय ने अपना मत प्रस्तुत करते हुए लिखा है- ‘‘सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय सम्बन्धों की विवेचना करते हैं परन्तु प्रथम (सामाजिक विज्ञान) प्रौढ़ावस्था पर तथा दूसरा (सामाजिक अध्ययन) बालकों के स्तर पर। अतः स्पश्ट है कि सामाजिक अध्ययन मूलतः सामाजिक विज्ञानों से अपनी विषय-वस्तु पर। अतः स्पश्ट है कि सामाजिक विज्ञान है, जिसको निर्देषात्मक अभिप्रायों के लिए सरलीकृत एवं पुनः संगठित किया गया है। अतः सामाजिक विज्ञानों तथा सामाजिक अध्ययन में दार्षनिक या सैद्धान्तिक अन्तर नहीं है वरन् केवल व्यावहारिक एवं सुविधा के दृश्टिकोण से अन्तर है।

सामाजिक अध्ययन मूल रूप से मनुश्य एवं उनके सामाजिक पर्यावरण से संबंधित है जब कि सामाजिक विज्ञान मानवीय व्यवहार के सामाजिक सांस्कृतिक आकांक्षाओं का अध्ययन करता है। उनका पुनः इस प्रकार अंतर कर सकते हैं

1. दोनों के दृश्टिकोण भिन्न हैं। सामाजिक विज्ञान एक वयस्क दृश्टिकोण प्रस्तुत करता है तथा यह मूलतः सामाजिक विज्ञान का सरलीकृत भाग है।

2. सामाजिक विज्ञान मानवीय मामलों का वृहत् ज्ञान देता है जबकि सामाजिक अध्ययन मानव एवं समाज की विविध आकाक्षाओं की हमें अंतर्दृश्टि देता है।

3. सामाजिक विज्ञान का मुख्य उद्देश्य मानव संबंधों के बारे में नई सच्चाई की खोज करना है जबकि सामाजिक अध्ययन अपने चुनिंदे षिक्षण भागों में किषोरों को मार्गदर्षन प्रदान करता है।

4. सामाजिक विज्ञान में सामाजिक उपयोगिता प्रारम्भिक उद्देश्य है एवं सामाजिक अध्ययन में अधिक बल निर्देषात्मक उपयोगिता पर दी जाती है।

सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान

सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान अन्तः अम्बन्धित है। उनकी विषय सामग्री लगभग एक जैसी है। दोनांे का केन्द्र बिन्दू मनुश्य का मनुश्य से तथा उसके वातावरण से एवं उसकी आवष्यकताओं की पूर्ति से सम्बधिंत है। यद्यपि सामाजिक विज्ञान अपनी विषय सामग्री विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से प्राप्त करता है। परन्तु यह विभिन्न सामाजिक विज्ञानों का मिश्रण न होकर स्वयं में एक एकीकृत विषय है। यह ऐसा ज्ञान अनुभव तथा गहनता प्रदान करता है जिसके चारों और अन्य विशयों का संगठित ढंग से निर्माण किया जा सके।

1. अभिवृत्तियों में भिन्नता (Difference in the Attitude)- सामाजिक अध्ययन की अभिवृत्ति बालकों के लिए उपयोगी है जबकि सामाजिक विज्ञान की अभिवृत्ति व्यक्ति सम्बन्धित है। बालक सामाजिक विज्ञान की विषिश्ट विषय सामग्री को समझने के योग्य नहीं होते हैं, इसलिए दसवीं कक्षा तक स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के समक्ष इसका एकीकृत रूप प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक विज्ञान समाज की विभिन्न वैज्ञानिक दृश्टिकोणों से सम्बन्धित होता है। यह विस्तृत ज्ञान प्रदान करता है और इसकी विषय सामग्री व्यस्कों के स्तर के अनुरूप होती है। सामाजिक विज्ञान में प्रमुख उद्देश्य सामाजिक योग्यता का विकास है जबकि सामाजिक विज्ञान में प्रमुख उद्देश्य अनुदेषनात्मक योग्यता का विकास है।

2. कठिनाई स्तर में भिन्नता (Differences in Difficulty Level)- सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान का सरल तथा पुनः संगठित रूप है। सामाजिक अध्ययन सरल तथा व्यावहारिक होने के कारण माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयुक्त है जबकि सामाजिक विज्ञान अधिक सैद्धान्तिक तथा अनुसंधान केन्द्रित होने के कारण उच्च कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है। माध्यमिक स्तर तक विद्यार्थियों के लिए सामाजिक विज्ञान की विषय सामग्री को समझना कठिन होता है।

3. उद्देश्य में भिन्नता (Difference in Aim)- सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य आधुनिक ज्ञान प्रदान करना है जबकि सामाजिक अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न कौषलों तथा अभिवृत्तियों के विकास के द्वारा बच्चों को अच्छा नागरिक बनाना है। वे यह सीखते हैं कि समाज में कैसे रहना है तथा इसका विकास किस प्ररकार करना है। समाज का अध्ययन करना ही इसका उद्देश्य होता है।

4. षैक्षिक मूल्य में भिन्नता (Difference in Educational Value)- सामाजिक अध्ययन की सम्पूर्ण विषय सामग्री षैक्षिक होती है क्योंकि इसका निर्माण कक्षा-कक्ष में ज्ञान प्रदान करने के आधार पर किया जाता है जबकि सामाजिक विज्ञान के सभी तथ्यों का अधिगम कक्षा-कक्ष में प्राप्त नहीं किया जा सकता। विद्यार्थियों को अपने अनुभवों से उनकी खोज करनी पड़ती है।

5. क्षेत्र में भिन्नता (Difference in Scope)- सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा अधिक विस्तृत है क्योंकि विद्यार्थी एक समय में केवल सामाजिक अध्ययन के एक या दो विशयों का अध्ययन करता हैं जबकि सामाजिक विज्ञान में वे सामाजिक विज्ञान के सभी अनुषासित विशयों का एक साथ अध्ययन करते हैं।

6. प्रस्तुतीकरण में भिन्नता (Difference in Presentation)- सामाजिक अध्ययन एक समय में एक ही विषय का विस्तृत ज्ञान प्रदान करता है जबकि सामाजिक विज्ञान एकीकृत ज्ञान प्रदान करता है। सामाजिक अध्ययन समाज के विभिन्न पक्षों का विष्लेशण के द्वारा इसका अध्ययन करता है जबकि सामाजिक विज्ञान समाज के एकीकृत भाग का अध्ययन करता है। सामाजिक अध्ययन मानवीय क्रियाओं का सैद्धान्तिक भाग है और सामाजिक विज्ञान मानव समाज का व्यावहारिक पक्ष है। मार्टोरेला ने कहा भी है, ''सामाजिक विज्ञान को प्रयोगात्मक सम्बन्ध के साथ सम्बन्धित करना अधिक उचित होगा क्योंकि इसमें वैज्ञानिक ज्ञान को उन नैतिक, दार्षनिक, धार्मिक तथा सामाजिक विचारों के साथ समन्वित किया जाता है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में नागरिकों के सामने आते हैं।''

7. प्रयोग में भिन्नता (Difference in Application)- सामाजिक विज्ञान पहले से किए जा चुके खोजों के व्यावहारिक प्रयोग की षिक्षा देता है जबकि सामाजिक विज्ञान नवीन तथ्यों, नवीन विचारों, सिद्धान्तों आदि की खोज करता है। मार्टोरेला ने सही कहा भी है, ''सामाजिक विज्ञान को एक व्यावहारिक क्षेत्र के रूप में सोचना अधिक उचित होगा।''

8. स्तरों के भिन्नता (Difference in Levels)- सामाजिक अध्ययन का अध्ययन करना प्रत्येक के लिए आवष्यक है जबकि सामाजिक विज्ञान को केवल उन विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन किया जाता है जो अपनी षिक्षा को उच्च माध्यमिक स्तर, महाविद्यालय स्तर तथा विष्वविद्यालय स्तर तक ले जाना चाहते हैं तथा सामाजिक विज्ञान के किसी अनुषासित विषय का चयन करते हैं।

निष्कर्श रूप में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान पारस्परिक रूप से सम्बन्धित है। सामाजिक अध्ययन एक आधार के रूप में कार्य करता है, जिस पर सामाजिक विज्ञान के रूप की संरचना की गई है और सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से अपनी विषय सामग्री प्राप्त करता है। सामाजिक अध्ययन साधारण, सरल, रूचिकर, अधिगम योग्य तथा व्यावहारिक है जबकि सामाजिक विज्ञान का अपना एक विषिश्ट स्तर है जिसे सभी बालकों के लिए समझना आसान नहीं होता है। सामाजिक अध्ययन स्कूल स्तर पर विभिन्न विशयों का आधारभूत ज्ञान प्रदान करता है और इसके पश्चात् विद्यार्थी महाविद्यालय स्तर पर किसी भी अनुषासित विषय को अध्ययन के लिए चुन सकते हैं तथा विषिश्टीकरण प्राप्त कर सकते हैं। सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञान का ही सरल रूप है, जिसे स्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना और उपयोगिता करने के लिए पढ़ाया जाता है

1.15 अभ्यास प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान के अर्थ की व्याख्या करें ?

2. सामाजिक विज्ञान को परिभावित किजिए? सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के अंतर को स्पष्ट किजिए ?

3. सामाजिक विज्ञान के विद्यानायी पाठ्यक्रम के अन्य विषयों से सम्बन्ध की विवेचलना कीजिए ?

4. स्कूल में सामाजिक विज्ञान का विषय क्यों पढ़ाया जाना चाहिए ?

1.16 Bibliography / Refference

1. All India Council for secondry education

2. Bagley, William C. & Alexander T. The teacher of social science.

2. Binning D.H. Teaching the social studies in a changing world).

3. David J. A hangbook of social studies.

4. J.C Agarwal. Teaching of social science.

5. **B.D. Shaida** सामाजिक अध्ययन तथा सामाजिक विज्ञान षिक्षण

इकाई .2 सामाजिक विज्ञान के उद्देश्य एवं महत्व

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 शिक्षण उद्देश्यों का अर्थ
2.3.1 परिभाषा
2.4 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, उद्देश्य एवं महत्व
2.5 सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों वर्गीकरण
2.6 समाजिक विज्ञान अध्यापक तथा उद्देश्य
2.7 प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य
2.8 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य
2.9 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य का परिचय
2.10 सारांश
2.11 Bibiliography
2.12 अभ्यास प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

छात्रों को विषय के माध्यम से क्या सिखाना है तथा उनके किन कौशलों का विकास करना है। इस से पहले जो लक्ष्य को पूर्वनिश्चित किया जाता है। उसी लक्ष्य को उद्देश्य कहते हैं। छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षित करने के लिए उदेश्यों को सुनिश्चित करना अति आवश्यक है। उदेश्यों के आधार पर ही गुणात्मक शिक्षा प्रदान कि जाती है। उदेश्यों का आंकलन करके लक्ष्य की प्राप्ति की जाँच की जा सकती है। यदि लक्ष्य स्पष्ट तथा निश्चित है तो इसको प्राप्त करने के लिए क्रियाएँ चलती रहती है। जैसे-जैसे छात्र लक्ष्य की पूर्ति करता है। या निकट पहुँचता है तो क्रियाओं में भी परिवर्तन होता रहता है। उद्देश्य एवं लक्ष्य की प्राप्ति के साथ ही यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति हो गई है। छात्रों के व्यक्तिगत स्तर एवं शिक्षण को देखकर इसके लक्ष्य को निश्चित कर लेना चाहिए। लक्ष्य और उद्देश्य हमें दिशा प्रदान करते है। और उदेश्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाने में सहायता करते हैं। उद्देश्य शिक्षक को पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम का चयन शिक्षण पद्धतियों के लिए, शिक्षण तकनीकों, विधियों का चयन और शिक्षण का मूल्यांकन करने में सहायक होते है। विद्यालय में कोई भी विषय और पाठ्यक्रम स्वयं में साध्य नहीं होता उसको कुछ उद्देश्य एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित किया जाता है। साधारण शब्दों में किसी भी कार्य को करने के लिए उदेश्यों का ज्ञान होना आवश्यक है

2.2 उददेश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास है आप को सामाजिक विज्ञान के शिक्षा उदेश्यों से परिचित कराना। विद्यालय के विभिन्न स्तर पर शिक्षा के लिए लक्ष्यों एवं उदेश्यों की पहचान कराना। सामाजिक विज्ञान के विषय के शिक्षण के लिए उदेश्यों की योजना बनाना सिखाना। इकाई के माध्यम से छात्रों के व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर उदेश्यों का निर्माण और उद्देश्य में बदलाव करने के बारे में समझाना। लक्ष्यों एवं उदेश्यों की आवश्यकता से परिचित कराना। छात्रों एवं शिक्षकों को महत्वपूर्ण उदेश्यों के बारे में पता चलेगा। शिक्षक के लिए निर्धारित किए गए उदेश्यों के महत्व के बारे में बताना इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेगे कि आप बता सके।

1. शिक्षण उद्देष्यों का अर्थ एवं सामाजिक विज्ञान अध्यापक के समाज में योगदान को बता पायेगे।

2. सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्यए उद्देश्य एवं महत्व को समझ पायेगे।

3. प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य समझ पायेगे।

4. सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण एवं विशेष ताएं समझ पायेगे।

5. विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य का वर्णन कर पायेगे।

2.3 शिक्षण उद्देश्यों का अर्थ एवं परिभाषा

उद्देष्य शिक्षण उद्देष्य के मापदण्ड होते हैं जिनको छात्रों द्वारा विद्यालयीय क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जा सकता है। उद्देष्य छात्र के व्यवहार में वह इच्छित परिवर्तन है, जो विद्यालय द्वारा पथ प्रदर्षित अनुभव का परिणाम होते हैं। शिक्षण का प्रमुख कार्य छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना होता है। समाज जिस तरह के व्यक्तियों को चाहता है, शिक्षा उसी प्रकार के व्यवहार का विकास छात्रों मं करती है। इस प्रकार षैक्षिक के उद्देष्य का प्रमुख कार्य छात्रों में समाज द्वारा वांछित व्यवहारों का विकास करना है।

सामाजिक विज्ञान-शिक्षण के उद्देश्य एवं लक्ष्य

विद्यालय पाठ्यक्रम में कोई भी विषय, स्वयं में साध्य के रूप में स्थान प्राप्त नहीं करता। उसको कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों एवं उद्देष्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित किया जाता है। हमें यह निर्धारित करना पड़ता है कि अमुक विषय से छात्र क्या सोचेंगे, क्या कर सकते हैं तथा इसके ज्ञान से क्या बन सकते हैं। अतः किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देष्यों का ज्ञान होना आवष्यक है। शिक्षण कार्य उद्देष्यों के अभाव में संचालित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में बी. डी. भाटिया

B.D. Bhatia का कथन है- ''लक्ष्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान हैं जो अपनी मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा सकेगा।

2.3.1 परिभाषा

कार्टर वी. गुड के अनुसार- ''शिक्षण उद्देष्य पूर्व निर्धारित लगाना है, जो किसी कार्य या क्रिया का मार्गदर्षन करता है''

According to Carter V.Good "Aim is a far seen end that gives directives to an activity."

शिक्षा शब्द कोश के अनुसार-उद्देष्य परिणाम का पूर्वानुमान लगाना है, जो एक क्रिया को दिषा प्रदान करता है और व्यवहार को प्रेरित करता है।

According to Dictinary Education, "Aim is a fareseen and that gives direction to an activity amnd motivates behavior."

ब्लूम तथा अन्य- ''षैक्षिक उद्देष्य से हमारा तात्पर्य उन व्यवहारों के निर्माण से है जिनमें षैक्षिक प्रक्रिया द्वारा छात्रों को लाना होता है।''

2.4 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लक्ष्य, उद्देश्य एवं महत्व (Aims and Objectives of Teaching Social Science)

''लक्ष्य पूर्वनिर्दिश्ट साध्य है जो किसी प्रक्रिया को दिशा प्रदान करता है या व्यवहार को प्रेरित करता है।''

उद्देश्य एक पूर्वनिष्चित लक्ष्य होता है जो ध्यानपूर्वक चिन्तन तथा योजना के पश्चात् ही, जब तक इसे प्राप्त नहीं किया जाता, एक व्यक्ति की विभिन्न क्रियाओं को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य स्पश्ट तथा निष्चित है, तो इसके प्राप्त करने तक क्रियाएँ चलती रहती है। जैसे ही व्यक्ति लक्ष्य के निकट पहुँचता है, उसके प्राप्त करने तक उसकी क्रियाओं में भी परिवर्तन होता रहता है और उसकी प्राप्ति के साथ ही यह निष्चित हो जाता है कि शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति हो गई है। किसी भी कार्य को करने से पहले हमें उसके लक्ष्य को निष्चित कर लेना चाहिए। लक्ष्य/उद्देश्य हमें दिशा प्रदान करते हें और उनकी प्राप्ति के लिए योजना बनाने में सहायता करते हैं अर्थात् अर्थ पूर्ण पाठ्यक्रम का चयन करने में, शिक्षण तकनीकों तथा विधियों के बारे में निर्णय लेने में तथा मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्माण करने में सहायक होते हैं। सामाजिक विज्ञान मानवीय सम्बन्धों के बारे में सूचनाएँ प्रदान करता है। यह मानवीय अनुभवों तथा ज्ञान का खजाना है जिसे बालक के द्वारा सामाजिक विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न

क्रियाओं के द्वारा प्राप्त किया जाता है। सामाजिक शिक्षा का औपचारिक तत्व है। इसके मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैः

1. विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोगों के बारे में बालकों को सूझ-बूझ प्रदान करना, जिन परिस्थितियों में लोग रहते हैं उनकी जानकारी देना, समस्या समाधान के लिए प्रयोग किए गए विभिन्न प्रकार का ज्ञान देना।

2. बच्चों को व्यक्तियों, परिस्थितियों तथा कार्यों के बारे में निर्देष देना, जिसके परिणामस्वरूप वे समाज के भावी व्यक्ति रूप में तथा स्वयं को सम्पूर्ण समाज के एक अंग के रूप में विकसित कर सके।

सामाजिक विज्ञान अध्यापक के रूप में यदि इन उदेष्यों को प्राप्त किया जाता है तो वह सामाजिक विज्ञान के मूलभूत उदेष्यों की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है जैसे- समाज में वर्तमान में रहते हुए नागरिकों का विकास तथा लोकतांत्रिक समाज में रहते हुए उसके सदस्य के रूप में उनके जीवन की निरंतरता।

2.5 सामाजिक विज्ञान के उद्देश्यों वर्गीकरण

सामाजिक विज्ञान के उदेश्यों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

1. सामान्य उद्देश्य (General Aims)
2. विशिश्ट उद्देश्य (Special Aims)

1. सामाजिक विज्ञान के सामान्य उद्देश्य (General Aims of Social Science) माध्यमिक शिक्षा आयोग की विचारधारा के अनुसार, सामाजिक विज्ञान के द्वारा, ''विद्यार्थियों को केवल ज्ञान ही प्राप्त नहीं होना चाहिए, अपितु अभिवृत्तियों तथा मूल्यों का विकास भी होना चाहिए, जो सफल जीवन तथा नागरिक कुषलता के लिए विकास भी होना चाहिए, जो सफल जीवन तथा नागरिक कुषलता के लिए आवष्यक है।'' इस प्रकार सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में आधारभूत सूझ-बूझ आवष्यक कौषलों, अभिवृत्तियों तथा प्रषंसात्मक दृश्टिकोणों का विकास करना है, जो एक लोकतांत्रिक समाज में प्रभाव पूर्ण नागरिकता के लिए आवष्यक है।

वैज्ले के द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य दिए हैंः

1. वांछनीय गुणों, अध्ययन पठन कौषलों एवं एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना।

2. व्यक्तियों तथा देषों की अन्तःनिर्भरता के विचार पर आधारित प्रजातंत्र को बढ़ावा देना तथा विष्व षान्ति के लिए जागरूक करना और सभी जातियों, धर्मों एवं समूहों के प्रति आदर की भावना विकसित करना।

3. विद्यार्थियों को अपने उत्तरदायित्वों की जानकारी देना तथा उन्हें उपयोगी कार्यों के लिए तैयार करना।

4. आलोचनात्मक चिंतन षक्ति का विकास करना एवं सौन्दर्यात्मक तथा बौद्धिक रूचियों को जागृत करना।

5. दूरदर्शी उपभोक्ता तथा एक कार्यशील नागरिक का निर्माण करना।

बाइनिंग एवं बाइनिंग के विचार में सामाजिक विज्ञान के उद्देश्य हैं-

1. विद्यार्थियों के अपने वातावरण में अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुरूप जीवन का विकास करना।

2. एक लोकतांत्रिक समाज में अपने स्थान के लिए विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रशिक्षण देना कि जिस देष में वे रहते हैं उसको एक अच्छा स्थान बनाया जा सके।

विभिन्न उदेष्यों के विष्लेशण के आधार पर हम भारत में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य निर्मित कर सकते हैं जो व्यक्ति के सर्वागीण विकास, सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक कुषलता के विकास, नैतिक एवं चरित्रिक मूल्यों के विकास, नव प्रवर्तन के प्रति चेतना तथा समाज के आधुनिकरण में सहायक होंगे।

ज्ञान प्राप्त करना (Acquiring of Knowledge)- सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य हैं तथ्यों के बारे में ज्ञान की प्राप्ति। निष्चित ज्ञान तथा सूझ-बूझ की निष्चित मात्रा प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक उन्नति में योगदान देती हैं क्योंकि स्पश्ट चिंतन एवं उचित निर्णय के लिए ज्ञान तथा सूझ-बूझ का होना आवष्यक है। एक अच्छे नागरिक को वास्तविक सूचनाओं का ज्ञान होना आवष्यक है, क्योंकि तथ्यों के ज्ञान के बिना चिंतन असम्भव है और चिंतन (विचार) के बिना आधुनिक समाज की विभिन्न समस्याओं को सुलझाया नहीं जा सकता। ज्ञान सहानुभूति तथा सद्भावना का आधार है जो सामाजिक दृढ़ता और सामाजिक आदान-प्रदान के लिए आवष्यक है। ज्ञान प्रदान करते समय इस बात का ध्यान रखना आवष्यक है कि तथ्यों की सूचना पृथक्-पृथक् न देकर एकीकृत रूप में प्रदान कि जाए। ज्ञान को एकीकृत रूप में तथा वर्तमान से सम्बन्धित करते हुए अर्थपूर्ण ढंग से प्रदान किया जाना चाहिए क्योंकि इससे विद्यार्थियों की स्वाभाविक जिज्ञासा षान्त होती है एवं कल्पना षक्ति का विकास होता है।

1. तार्किक एवं समीक्षात्मक निर्णय षक्ति का विकास **(Development of Reasoning Power and Critical Judgment)-** तथ्यों के ज्ञान के बिना तार्किक एवं समीक्षात्मक निर्णय षक्ति का विकास सम्भव नहीं है। यदि विद्यार्थियों को किसी काल के इतिहास के बारे

में पढ़ाया जाए तो वे उस समय की परिस्थितियों के बारे में सोचना प्रारम्भ कर देंगे। यदि इसमें केवल मानसिक प्रक्रियाएँ ही सम्मिलित की जाए तो यही तार्किकता है। निर्णय भी तथ्यों पर आधारित होना चाहिए। सामाजिक विज्ञान सामाजिक निर्णय के बारे में तथा एकत्रित किए गए पर्याप्त एवं उचित आँकड़ो के आधार पर सामान्यीकरण करने के लिए विद्यार्थी को प्रशिक्षण देने का प्रमुख साधन होना चाहिए। ऐसी योग्यताओं का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी सामाजिक सम्बन्धों, कार्यों एवं समस्याओं के बारे में रचनात्मक निर्णय लेने के योग्य बन पाएंगे।

2. **स्व-अध्ययन में प्रशिक्षण** (Traning in Self-study)- विद्यार्थियों को केवल अध्ययन हेतु कहने मात्र से ही अध्ययन के लिए प्रशिक्षण नहीं दिया जा सकता तथा न ही अध्ययन के लिए उकसाने मात्र से ही विद्यार्थियों में इस आदत का विकास किया जा सकता है। अध्यापक के द्वारा विद्यार्थियों में अध्ययन की आदत के विकास को उसी ढंग से लिया जाना चाहिए जिस प्रकार शिक्षण की अन्य उपलब्धियों को लिया जाता है। माध्यमिक स्तर पर यह आदत अत्यधिक उपयोगी होगी क्योंकि यह वह स्तर है जहाँ विद्यार्थियों का मानसिक स्तर उच्च रूप से विकसित होता है। अध्ययन प्रक्रिया का पर्याप्त अभ्यास प्रदान किया जाना चाहिए तथा जैसे-जैसे वह पाठ्यक्रम की ओर अग्रसर होता है धीरे-धीरे निर्देषन की प्रक्रिया को कम किया जाना चाहिए। ऐसे प्रशिक्षण की सहायता से वह बौद्धिक जीवन की ओर अग्रसर होता है धीरे-धीरे निर्देषन की प्रक्रिया को कम किया जाना चाहिए। ऐसे प्रशिक्षण की सहायता से वह बौद्धिक जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है तथा इसके परिणामस्वरूप उसमें जीवन पर्यन्त अन्य अनुभवों की सहायता से अच्छे अध्ययन के चयन की उद्देश्य की पूर्ति होती है।
3. **ऐच्छिक व्यवहार का प्रशिक्षण (Traning in Desirale Pattern of conduct)-** आज से कुछ समय पहले तक परिवार विद्यार्थियों की शिक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान देते थे, परन्तु अब संयुक्त परिवार प्रणाली ऐकिक परिवार प्रणाली में परिवर्तित हो चुकी है और विद्यार्थी के चरित्र एवं षैक्षिक प्रक्रिया में परिवारों ने महत्त्वपूर्ण योगदान देना बंद कर दिया है तथा विद्यार्थी के व्यवहार के वांछनीय परिवर्तन और चरित्र के विकास गया है। आदर्ष, अभिवृत्तियाँ, निवृत्तियों, रूचि, प्रषंसात्मक दृश्टिकोण, आंतरिक इच्छाएँ आदि षक्तिषाली प्रभाव तथा मानवीय व्यवहार के निर्धारक है इसलिए यह आवष्यक है कि ऐच्छिक व्यवहार रीति का विकास किया जाए और विद्यार्थी जीवन के चरित्र निर्माण में सहायता की जाए जिससे अच्छे नागरिकों का निर्माण हो सके। सामाजिक विज्ञान अध्यापक सामाजिक

विज्ञान विषय के अन्तर्गत विभिन्न पाठ्य-क्रियाओं तथा सहगामी क्रियाओं की सहायता से विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का विकास कर सकता है तथा ऐच्छिक व्यवहार रीति में प्रशिक्षण प्रदान कर सकता है।

4. **उचित अभिवृत्तियाँ का विकास (Development of Right Attitudes)-** अभिवृत्तियाँ व्यवहार का मूल आधार है। सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों में व्यवहार रीति तथा विशेष ऐच्छिक अभिवृत्तियों के विकास में सहायता करता है। अभिवृत्तियाँ दो प्रकार की हो सकती है-

   बौद्धिक अभिवृत्तियाँ (Intellectural Attitudes)

   भावात्मक अभिवृत्तियाँ (Emotional Attitudes)

   बौद्धिक अभिवृत्तियाँ तथ्यों तथा सत्यता पर आधारित होती हैं तथा भावात्मक अभिवृत्तियाँ ईर्श्या, द्वेश आदि से सम्बन्धित होती हैं। बाइनिंग एवं बाइनिंग के षब्दों में, ''वैज्ञानिक सोच, विष्वसनीयता, सत्यता, सहनषीलता, सहयोग, नागरिक सम्मान तथा इन सबके अतिरिक्त बौद्धिक आषावादिता आदि ऐसी उचित अभिवृत्तियाँ हैं जिन्हें विकसित करने के लिए सामाजिक विज्ञान अध्यापक को विभिन्न अवसर खोजते रहना चाहिए।''

   "Attitudes of Scientific mindedness, of loyalty, of truthfulness, of tolerance of cooperation, of civic gratitude and above all of intelligent optimism are among the right attitude that the teacher of social studies must seek at every opportunity to develop in his pupils."

   सामाजिक विज्ञान अध्यापक को सदा यह ध्यान रखना चाहिए कि उचित अभिवृत्तियों का विकास सही दिशा में होना चाहिए। उसे स्वयं को एक उदाहरण के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

5. **आदतों तथा कौशलों का निर्माण (Formation of Habits and Skills)** आदत साधारणतः कार्य करने की एक प्रवृत्ति है जिसको बाहा्र आचरण के रूप में परिभाशित किया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य केवल अध्ययन सम्बन्धी अच्छी आदतों का निर्माण करना ही नहीं होता अपितु पाठ्य-पुस्तक तथा सन्दर्भ पुस्तकों के बुद्धिमत्तापूर्वक प्रयोगों से लेकर उत्तेजक परिस्थितियों में भी भावनाओं को नियंत्रण में रखने जैसी आदतों का निर्माण करना भी होता है। जे. एफ. फोरेस्टर (श्रण्थ्ण् थ्वततमेजमत) के

शब्दों में' ''सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य तथ्यात्मक सूचनाओं को संग्रहीत करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृत्तियों, रूचियों एवं कौशलों का निर्माण करना है।''

सामाजिक विज्ञान कुछ विशिष्ट कौशलों से भी सम्बन्धित है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के द्वारा विभिन्न कौशलों जैसे-रूपरेखा, मानचित्र, चार्ट, ग्राफ तथा प्रतिमान आदि के निर्माण को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। अध्यापक के द्वारा अन्य कौशलों जैसे शब्द कोश, विश्व कोश आदि के प्रयोग को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए तथा पुस्तकालय के प्रयोग में कुशलता का विकास करना चाहिए।

6. **दिक् काल एवं समाज की धारणा का उचित बोध प्रदान करना (To Provider porper understanding of the concept of space, time and society)** सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अन्तर्गत विद्यार्थियों को दिक्, काल एवं समाज की धारणा का वास्तविक बोध कराया जाना चाहिए। इसके अन्तर्गत अतीत का वर्तमान के साथ, दूरी का समीपता के साथ, व्यक्तिगत जीवन का राष्ट्रीय जीवन के साथ तथा अपने देश की संस्कृति का अन्य देशों की संस्कृतियों से सम्बन्ध दर्शाया जा सकता है। इन धारणाओं के ज्ञान के बिना विद्यार्थी उस शिकारी के समान होता है जो कहीं बगल में भटक गया हो और उसे उचित दिशा का ज्ञान न हो, उसे यह ज्ञात नहीं होता कि वह कहाँ खड़ाा है? कहाँ से उसने प्रवेश किया? उसे कहाँ जाना है? उसके चारों ओर कैसी स्थितियाँ हैं तथा उन स्थितियों के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? इन धारणाओं के बोध से विद्यार्थी मानव जीवन के विकास की विभिन्न अवस्थाओं के परस्पर सम्बन्ध को समझने लगते हैं।
7. **अन्तःनिर्भरता की भावना का विकास (To Develop the Sense of Interdependence)-** जिस प्रकार एक अकेला व्यक्ति दूसरों की सहायता के बिना अपना विकास नहीं कर सकता, उसी प्रकार एक देश का विकास दूसरे देशों की सहायता के बिना सम्भव नहीं है। जे.एफ. फोरेस्टर (J.F. Forrester) के द्वारा भी कहा गया है, ''सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य मनुष्य की मनुष्य पर तथा देश की देश पर अन्तः निर्भरता के प्रति अनुभूति जागृत करना है।'' (The aim of social studies is to create a realization of of inter-dependence of man and man, nation and nation.) इससे विद्यार्थियांे में मानवता के प्रति सम्मान तथा अन्तर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ विकसित होगी। विभिन्न देशों में विभिन्न क्षेत्रों में जैसे विज्ञान, औषधि, तकनीक, उद्योग, व्यावसायिक आदान प्रदान आदि का विकास अन्तःनिर्भरता का ही परिणाम है। इसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में विश्व नागरिकता की भावना का भी विकास होगा।

8. **समाजवादी दृष्टिकोण विकसित करना (To Develop Socialistic Attitude)-** आधुनिक युग समाजवाद का युग है। जो व्यक्ति सैद्धान्तिक रूप से समाजवाद में विश्वास नहीं करते थे, वे भी व्यावहारिक रूप से समाजवाद की स्थापना के ही समर्थक हैं। कौन नहीं चाहता कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति एवं वर्ग की बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी हों और वह समाज का उपयोगी सदस्य बनकर समाज के विकास में सक्रिय योगदान प्रदान करें। समाजवादी दृष्टिकोण विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना के विकास में सहायक होगा, जिसके फलस्वरूप उनमें साहस तथा विश्वास स्थापित होगा। इससे उनमें न्याय, सहनशीलता, समर्पण आदि का विकास होगा।
9. **सामाजिक जटिलताओं को समझने की क्षमता का विकास (To Develop Capacity to Understand the Coplexities of the society)-** 21वीं शताब्दी का युग सरल न होकर जटिलताओं का युग है। आज के समय में मनुष्य का जीवन जटिलताओं से जुड़ा हुआ है और संस्थाओं के सही रूप का ज्ञान उसके लिए आवश्यक है क्योंकि जब तक वह यह जानकरी प्राप्त नहीं कर लेता और उसमें इतनी सूझ-बूझ विकसित नहीं हो जाती कि विभिन्न संस्थाओं के आपसी सम्बन्धों को सौहार्दपूर्ण कैसे बनाया जा सकता है, तब तक वह उनकी प्रगति में अपना योगदान नहीं दे सकता और वह एक कुशल एवं प्रगतिशील नागरिक की भूमिका निभाने में असमर्थ होगा। सामाजिक विज्ञान विभिन्न संस्थाओं के आपसी सम्बन्धों को स्पष्ट करता है और इन संस्थाओं की जटिलताओं के समाधान हेतु विद्यार्थी के लिए सामाजिक विज्ञान का अधिगम करना आवश्यक है।
10. **राष्ट्रीय सद्भावना विकसित करना (To Develop National Feeling)-** सामाजिक विज्ञान शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में राष्ट्रीय भावना एवं भावात्मक एकता का विकास किया जाना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के द्वारा उन संघषों की जानकारी दी जाती है जिनमें से गुजर कर किसी देश के पूर्वजों ने देश का निर्माण एवं विकास किया था- और यही सब देश-प्रेम का सशक्ल आधार सिद्ध होता है। भारत जैसे देश में जो विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों व सभ्यताओं का संगम स्थल है, जहाँ भिन्न जातियों एवं धर्मों के लोग रहते हैं- भावात्मक एकता का विकास करने में सामाजिक विज्ञान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
11. **वर्तमान को समझना(Understand Present)-** समाजिक विज्ञान विषय में इतिहास के अन्तर्गत भूतकाल में मानव सम्बन्धों पर प्रभाव डालने वाली सभी घटनाओं का अध्ययन किया जाता है परन्तु इसके साथ-साथ भूगोल तथा अर्थ शास्त्र के अन्तर्ग वर्तमान समस्याओं की भी चर्चा की जाती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण से विद्यार्थी अपने भविष्य की कल्पना

आशावादी हो कर सकते हैं क्योंकि वे अपने वर्तमान को अच्छी प्रकार से समझ लेते हैं तथा भविष्य को और अधिक सुन्दर बनाने में सहयोग दे सकते हैं। विद्यार्थी अतीत के माध्यम से वर्तमान को उचित ढंग से समझ सकते है।

12. **लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास करना (To Develop Democratic)-** प्रजातंत्र की सफलता के लिए विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास करना सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य है। प्रजातांत्रिक समाज में प्रत्येक बालक भविष्य का नागरिक है जिसे वोट के द्वारा अपने अधिकार का प्रयोग करना होगा, कर अदा करना होगा, सेना में सेवा करनी होगी, एक नागरिक के कर्त्तव्य का पालन करना होगा। समाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों को न केवल उनके अधिकारों का ही ज्ञान दिया जाना चाहिए अपितु इसके साथ-साथ एक नागरिक के अपने देश के प्रति उत्तरदायित्व क्या है, इनकी जानकारी भी प्रदान की जानी चाहिए, क्योंकि अधिकार तथा कर्त्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं (Rights and duties are the two sides of the same coin) इन दोनों के प्रति सचेत रहने में सामाजिक विज्ञान विषय को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

2.6 समाजिक विज्ञान अध्यापक तथा उद्देश्य (The Social Sciences Teacher and Aims)

किसी भी विषय के उदेश्यों की प्राप्ति में अध्यापक की आवश्यकता होती है अध्यापक के द्वारा परामर्श तथा निर्देशन दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी विचलित नहीं होंगे। उदेश्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति की चाबी अध्यापक के हाथ में होती है, परन्तु यदि उसे स्वयं इस बात का ज्ञान न हो कि उदेश्यों की प्राप्ति हेतु किस प्रकार की ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाना चाहिए तो उदेश्यों की रूपरेखा का महत्त्व स्वयं ही नष्ट हो जाता है। यद्यपि ज्ञान की प्राप्ति लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन है, इसलिए अध्यापक को अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। बौद्धिक विकास केवल मात्र ज्ञान ही नहीं बल्कि इससे बहुत अधिक है। अध्यापक को विद्यार्थी को इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए, जिससे उनमें तर्क शक्ति का विकास हो, वे स्वचिंतन, स्वअध्ययन की ओर अग्रसर हो और उनमें कौशलों तथा आदतों का विकास हो सके। विद्यार्थियों के व्यवहार तथा अभिवृत्तियों के विकास सम्बन्धी उदेश्यों को प्राप्त करने हेतु अध्यापक में सभी महत्त्वपूर्ण गुण होना आवश्यक है तथा वह अग्रणी है उनके लिए एक उदाहरण होना चाहिए। यदि विद्यार्थियों को नागरिक उत्तरदायित्व की शिक्षा देनी है तो यह अध्यापक के जीवन से स्वयं प्रतिबिंबित होनी चाहिए। उद्देश्य अध्यापक की पहुँच से

परे नहीं हो सकते, क्योंकि स्कूल में वह ही है जिसे विद्यार्थियों को घर समुदाय तथा राष्ट्र के नागरिक के रूप में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण देना है, जिसके परिणामस्वरूप वे भविष्य के उत्तम नागरिक के रूप में तैयार हो सके।

2.7 प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching Social Sciences at Elementary Stage)

प्रारंभिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए-

1. विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
2. बालक की अपने सामाजिक तथा भौतिक वातावरण को समझने में तथा खोज करने में सहायता करना।
3. विभिन्न भौतिक संसाधनों का ज्ञान प्रदान करना।
4. विभिन्न धर्मों, उनके संगठनों एवं उनके पूजन के ढंगों के लिए विद्यार्थियों के मन में आदर की भावना विकसित करना।
5. समाज के प्रति अपनत्व की भावना जाग्रत करना।
6. समृद्ध एवं सयंुक्त संस्कृति की भावना का विकास करना।
7. विद्यार्थियों में इस बोध को प्रोत्साहित करना कि हम सभी के लिए अच्छे जीवन का निर्माण करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं।
8. श्रम के प्रति आदर की भावना का विकास करना।
9. लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सामाजिक समानता की भावना को बढ़ावा देना।
10. राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्टीयता की भावना का विकास करना।
11. भारत के संविधान तथा अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों को समझने के योग्य बनाना।
12. मानव की मानव के साथ तथा राष्ट्र के साथ पारस्परिक सम्बन्धों की सूझ-बूझ विकसित करना।
13. कल्पना शक्ति का विकास करना।
14. विद्यार्थियों का दैनिक जीवन में सामाजिक विज्ञान की उपयोगिता के प्रति ध्यान आकर्षित करना।

इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को एक अच्छा नागरिक बनाना तथा विषय के प्रति उनकी रूचि को बढ़ावा देना होता है। इसलिए इस स्तर तक उन्हें राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध महापुरूषों की जीवन गाथा का ज्ञान दिया जाता है तथा पाठ्यक्रम को वर्तमान काल से सम्बन्धित किया जाता है।

2.8 माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching Social Science at Secondary Level)

माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य शायद विद्यार्थियों को जागरूक, प्रभावी, सांस्कृतिक, परिपूर्ण नागरिक के रूप में विकास करना होता है इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया है कि माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान का विषय एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। अच्छे नागरिक के विकास के लिए सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम सबसे अनुकूल व उपयुक्त है क्योंकि इसकी विषय सामग्री प्रत्यक्ष रूप से नागरिकता से सम्बन्धित है। माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. मानव सभ्यता की आधारभूत एकता का ज्ञान प्रदान करना।
2. विभिन्न संस्कृतियों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण का विकास करना।
3. लोकतंत्र की आवश्यकता का बोध करने के योग्य बनाना।
4. वर्तमान समय की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं से परिचित कराना।
5. राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता के विचार को विकसित करना।
6. अन्तर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ की भावना का विकास करना।
7. परिवर्तन प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।
8. सामाजिक-आर्थिक वातावरण के प्रति अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
9. सामाजिक विज्ञान के प्रति रूचि तथा प्रेम का विकास करना।
10. आलोचनात्मक योग्यता का विकास करना।
11. मानसिक शक्तियों का विकास करना।
12. वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की उपयोगिता का ज्ञान कराना।

ऊपर वर्णित उदेश्यों की पूर्ति के लिए छोटे-छोटे विशिष्ट उदेश्यों का निर्माण करना अति आवश्यक है तभी इन विस्तृत उदेश्यों की प्राप्ति हो सकती है। केवल तथ्यों पर आधारित ज्ञान का शिक्षण कराना ही पर्याप्त नहीं है, इसके साथ-साथ विद्यार्थी को उस प्रभाव का भी एहसास होना चाहिए जो उसके जीवन को नियोजित करता है तथा उनके जीवन को, जिनके सम्पर्क में वह आता है।

2.9 विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य का परिचय-

शिक्षा के सामान्य उदेश्यों की प्राप्ति में सामाजिक विज्ञान के प्रमुख उद्देश्य सहयोग की भावना जागृत करना, सहनशीलता का विकास तथा मानवता के प्रति बोध तथा सहानुभूति के साथ-साथ व्यावहारिक रूप से निर्माणात्मक चिंतन, तर्क-वितर्क तथा आलोचनात्मक निर्णय प्रक्रिया का ज्ञान होना चाहिए। अतः विशिष्ट ज्ञान, बौद्धिक जीवन में आधुनिकता के शिक्षण के साथ आदतों, कौशलों, आदर्शों, अभिवृत्तियों, सृजनात्मकता तथा प्रशंसात्मक दृष्टिकोण के रूप में अधिगम भी शामिल होना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के उदेश्यों को एक चित्र के द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता हैः

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विद्यालय स्तर पर उद्देश्य	**सामाजिक विज्ञान शिक्षण के विद्यालय स्तर पर प्राप्त उद्देश्य**
1. उद्देश्य बहुत विस्तृत तथा व्यापक होते हैं।	प्राप्त उद्देश्य संकुचित तथा विशिष्ट होते हैं।
2. उद्देश्य का प्रमुख स्त्रोत दर्शन तथा समाजशास्त्र होता है।	प्राप्त उदेश्यों का मुख्य स्त्रोत मनोविज्ञान होता है।
3. वे निश्चित एवं स्पष्ट नहीं होते।	ये निश्चित तथा स्पष्ट होते हैं।
4. इनको प्राप्त करने का उत्तरदायित्व स्कूल समाज तथा राष्ट्र का होता है।	इनकी प्राप्ति के लिए अध्यापक उत्तरदायी होता है।
5. ये अप्रत्यक्ष एवं सैद्धान्तिक होते हैं।	ये प्रत्यक्ष तथा व्यावहारिक होते हैं।
6. ये औपचारिक होते हैं।	ये सूचनात्मक तथा क्रियाकलाप होते हैं।
7. इनमें प्राप्य उद्देश्य सम्मिलित होते हैं।	ये उदेश्यों का एक भाग होते हैं।
8. इनकी प्राप्ति के लिए दीर्घकाल की आवयकता होती है।	इनकी प्राप्ति कक्षा-कक्ष में ही सम्भव होती है। इसलिए कम समय में ही प्राप्त किए जा सकते हैं।
9. इनकी उपलब्धि कठिन होती हैं।	इन्हें आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।
10. इनका मूल्यांकन कठिन होता है।	इनका मूल्याकंन किया जा सकता है।

11. ये सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली तथा पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होते हैं।	इनका मूल्याकंन किया जा सकता है।

2.10 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उदेश्यों, लक्ष्यों का ज्ञान प्राप्त कर चूके होंगे| ज्ञान की प्राप्ति लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन है, इसलिए अध्यापक को अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न करना, विभिन्न धर्मों, उनके संगठनों एवं उनके पूजन के ढंगों के लिए विद्यार्थियों के मन में आदर की भावना विकसित करना है। माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य शायद विद्यार्थियों को जागरूक, प्रभावी, सांस्कृतिक, परिपूर्ण नागरिक के रूप में विकास करना होता है इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया है कि माध्यमिक स्तर तक सामाजिक विज्ञान का विषय एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना होना चाहिए।

2.11 Reference/bibliography

1. **Agarwal, J.C. Teaching of social science.**
2. **Ahluwalia, S.L Audio visual handbook**
3. **Aiya, teaching units in social studies for high and higher secondry stage.**
4. **Allen, J. The teacher of the social studies.**
5. **Baldwin, J.W. The social studies laboratory**
6. **Winning, A.C. Teaching the social studies in secondry schools**
7. **Carpenter, H.M. Skills in social studies**

2.12 अभ्यास प्रश्न

1. समाजिक विज्ञान शिक्षण के महत्वपूर्ण उदेश्यों की व्याख्या किजिए ?

2. समाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों इतिहास , भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र के उदेश्यों की व्याख्या कीजिए?

3. आप अपनी रूचि के अनुसार किसी कक्षा की सामाजिक विज्ञान की एक इकाई के संभव प्राप्त उदेश्यों की सूची बनाइए ?

इकाई 3 समतावाद समाज में सामाजिक विज्ञान शिक्षक की भूमिका

3.1 प्रस्तावना
3.2 उदेश्य
3.3 समाज में अध्यापक का योगदान
3.4 सामाजिक शिक्षक या अवधारणा
3.5 परिभाषा
3.6 सामाजिक विज्ञान का अध्यापक
3.6.1 सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण एवं विशेषताएं
3.6.2 विद्यालय की छवि सुधारने में अध्यापक की भूमिका
3.7 सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अध्यापक की भूमिका
3.8 सामाजिक विज्ञान शिक्षक और समतावाद समाज: एक परिदृश्य
3.9 समतावाद समाज का अर्थ
3.10 एक शिक्षक की सोच समतावादी क्यों होना आवश्यक है।
3.11 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क (NCF-2005)
3.12 सामाजिक विज्ञान अध्ययन का महत्व
3.13 सारांश
3.14 अभ्यास प्रश्न
3.15 bibiliography

3.1 प्रस्तावना

शिक्षा और सामाजिक विकास के लिए शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज में अंधविश्वासों को दूर करने और ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से ही शिक्षक और शिष्य के सम्बन्धों के बारे में सुनते आए है। कि किस तरह शिक्षक ने अज्ञान को मिटाकर तथा ज्ञान रूपी प्रकाश की मशाल जलाकर समझ में मानवता का विकास किया

है। शिक्षक के गुणों को शिष्य आत्मसात करता और समाज को बदलने में दोनों पहल करते है। शिक्षक के गुणों, योग्ताओं और उसकी सोच का गहरा प्रभाव समाज पर पड़ता है। शिक्षक के पास पाठ्यक्रम एक ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा वह शिष्य में नैतिक, मानसिक विकास, चरित्र, मूल्यों का विकास एवं अच्छे आचरण का विकास करता है। शिक्षक विषय सामग्री के साथ-साथ शिष्यों की स्थिति, अभिवृत्तियों तथा उनके कौशलों का भी ध्यान रखता है। शिक्षक हमेशा विद्यार्थियों में भावी पीढ़ी के लिए योग्य नागरिक व उत्तरदायीत्वपूर्ण नेता उत्पन्न करने की आशा रखता है। उसे अपरिपकव बालकों को इस योग्य बनाना होता है कि वे बड़े होकर सफल प्रजातन्त्रात्मक जीवन व्यतीत कर सके। शिक्षक अपना कर्तव्य समझता है कि वह बालकों की सुशिक्षित सुव्यस्थित तथा प्रसन्न नागरिक बनने में सहायता करे ताकि वे सामाजिक विकास में सफलतापूर्वक भाग ले सके। ज्यादातर हम देखते है कि बालक, विद्यालय, समाज, राष्ट्र तथा सारी मानवता का भविष्य ही शिक्षक पर निर्भर करता है।

3.2 उदेश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास है सभी को सामाजिक विज्ञान शिक्षक के उदेश्यों के बारे में परिचित कराना सामाजिक विकास में शिक्षक की भूमिका के बारे में बताना। शिक्षकों को सामाजिक विज्ञान के उदेश्यों व लक्ष्यों के बारे में बताना। समाज को शिक्षक के गुणों, व्यक्तित्व, शारीरिक स्वास्थ्य, नैतिक, एवं सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण पहलूओं के बारे में चर्चा करना। किस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों के विकास में सहयोग देता है। वह पाठ्यक्रम एवं अपनी सोचविचार के द्वारा मानवता एवं लोकतंत्र का निर्माण करता है। शिक्षक समाज को एक भावी एवं प्रसन्न जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है। आप शिक्षक की भूमिका के बारे में समझ पायेगें। आप समझेगे कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों में समानपूर्वक व्यवहार का निर्माण कैसे करता है।

1. सामाजिक विज्ञान अध्यापक के समाज में योगदान को बता पायेगे।
2. सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण एवं भूमिका को समझ पायेगे।
3. सामाजिक विज्ञान अध्यापक का विषय क्षेत्र समझ पायेगे।
4. सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण एवं विशेष ताएं समझ पायेगे।
5. सामाजिक विज्ञान शिक्षक और समतावाद समाज का वर्णन कर पायेगे।

3.3 समाज में अध्यापक का योगदान (Role of the Teacher in Society)

अध्यापक ही शिक्षा प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग है। अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया की वह धुरी है जिसके इर्द-गिर्द शिक्षा का सारा वातावरण घूमता है। वह अपने व्यक्तित्व से सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करता है। उसे अपने व्यवहार को आचरण के रूप में विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करना

चाहिए ताकि विद्यार्थी उसका अनुसरण कर सकें। अध्यापक का दृष्टिकोण धर्म-निरपेक्ष होना चाहिए। उसे न्याय और स्वतंत्रता का समर्थक होना चाहिए, तभी वह वर्तमान समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है। एक योग्य अध्यापक बच्चों में स्कूल में आयोजित पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से ही धर्म-निरपेक्षता, सहिष्णुता, प्रजातन्त्र में विश्वास, सामाजिक न्याय के प्रति आदर की भावना पैदा करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है। शिक्षा के माध्यम से ऐसे सुयोग्य समाज की स्थापना की जा सकती है।

3.4 सामाजिक शिक्षक की अवधारणा (Concept of Social Teachers)

शिक्षक को सामाजिक पहलू एवं सामाजिक जरूरतों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। शिक्षक को सदैव धर्मनिरपेक्ष न्यायपूर्ण व्यवहारवादी सहिण तथा प्रजातन्त्र में विष्वास ही होना चाहिए। इसी दृश्टिकोण का परिवर्तन छात्रों में होगा। समाजिक विज्ञान शिक्षक का मानव समाज के विभिन्न पहलू मनोविज्ञान, समाजषास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र नृविज्ञान और इतिहास की परख होनी चाहिए। सामाजिक विज्ञान शिक्षक अपने छात्रों को समाज और सरकार में सक्रिय भागीदारी में सहायता करने योग्य बनाता है। शिक्षक वर्तमान घटनाओं वैक्ष्विक संस्कृति और समकालीन समाज में व्यवहार प्रवृ ृतियों पर विचार-विमर्श करके नेतृत्व कर सके। सामाजिक विज्ञान शिक्षक को इतिहास, भूगोल, नृविज्ञान के साथ-साथ सांस्कृति, भाषा एवं सामाजिक मतभेद के आधार पर उत्पन्न हुए विभिन्न क्षेत्र और समूह के बारे में विचार करना। शिक्षक द्वारा किसी भी लिंग, जाति, धर्म, यौन अभिविन्यास और पंसद के आधार पर भेदभाव और असमानता को स्वीकार न करना।

3.5 परिभाषा (Defination)

Husen (1971) वह शिक्षक जो असमानताओं भेदभावों करताओं और अंधविष्वासों से मुक्त हो। सभी को समान अवसर व समान वातावरण दे। वह जो समाज के समान हितों, हकों व अवसरों में विष्वास करे। सभी के लिए समान दृश्टिकोण में विष्वास करना।

Ejieh (2004) शिक्षक का समतावाह विचारधारा सिद्वं ात एवं दर्षन का होना चाहिए। उसे सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार, लाभ, और अवसरों की चर्चा करनी चाहिए। तभी वह समाज और समूह को सहयोग दे सकता है।

Wells - अध्यापक ही इतिहास का वास्तविक निर्माता है।

K. Jha (2005) आज भी कुछ अंधविष्वासी शिक्षक नई पीढ़ी में अज्ञान फैला रहे है। जो अवैज्ञानिक, अलोकतांत्रिक भाग्यवादी परपरावादी और असामतवादी सोच वाले है। जिनके कारण समाज में असमानता का अंधेरा फैल रहा है।

3.6 सामाजिक विज्ञान का अध्यापक (The teacher of social science)

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा को वहाँ की संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक (The teacher) एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होता है तथा वही हमारी संतति (Generation) के भविष्य का संरक्षक होता है। अध्यापक ही विद्यालय तथा शिक्षण-प्रक्रिया की वास्तविक रूप से गत्यात्मक या गतिशील (Dyanamic) शक्ति है। **डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार-** 'समाज में अध्यापक का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक एवं तकनीकी कुशलताओं का हस्तानारायण करने का केन्द्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्ज्वलित रखने में सहायता देता है। एक अध्यापक की कल्पना एक आदर्श चरित्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की कल्पना है। अध्यापक को अन्धकार रूपी अज्ञान को मिटाने वाला तथा ज्ञान रूपी प्रकाश दिखाकर मानवता के पथ को आलोकित करने वाला कहा गया है। 'गुरू' शब्द अध्यापक के 'गुरूतर दायित्वों का आभास कराता है। इस प्रकार अध्यापक की बौद्धिक योग्यता के साथ-साथ नैतिक कर्त्तव्य और निष्ठा ही एक अध्यापक को गौरवान्वित कर सकती है।'' कि राष्ट्र एवं समाज की प्रगति उत्तम एवं कुशल अध्यापकों पर निर्भर करती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार- ''अपेक्षित शिक्षा के पुननिर्माण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्व अध्यापक, उसके व्यक्तित्व गुण, शैक्षक योग्यताएँ, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति जो वह विद्यालय तथा समाज में प्राप्त करता है, ही है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन अध्यापकों पर निर्भर करता है जो उस विद्यालय में कार्यरत होते हैं। इस प्रकार शैक्षिक कार्यक्रमों की सफलता अध्यापक के व्यवहार, कार्य प्रणाली एवं योग्यताओं पर ही निर्भर करती है। वस्तुतः अध्यापक ही उन भावी नागरिकों को निर्माण करता है जो कि उस विद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं तथा जिनके ऊपर सम्पूर्ण राष्ट्र के उत्थान का भार है। वर्तमान समय में शिक्षक का विद्यालय में प्रमुख स्थान माना जाता है। शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अध्यापक-छात्र अनुक्रिया में अध्यापक की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है।

डॉ0 के0 जी0 सैयदन ने भी स्पष्ट किया है कि अध्यापक की प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि वह कहाँ तक राष्ट्र की समस्याओं में रूचि लेता है। यदि अध्यापक राष्ट्र एवं समाज के लिए कुछ कर सकता है तो सम्मानित होना स्वाभाविक है। अतः उपयुक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाज तथा शिक्षा-पद्धति दोनों में ही अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान है।

3.6.1 **सामाजिक विज्ञान अध्यापक के गुण एवं विशेषताएं (Qualities and Characteristics of Social Science Teacher)**

शिक्षा का तात्पर्य बालक के सर्वांगीण विकास से है जिसके अन्तर्गत अध्यापक का कार्य न केवल बालक का मानसिक विकास करना है, बल्कि उसके शारीरिक, संवेगात्मक (emotional) नैतिक (moral) एवं आध्यात्मिक (spiritual) विकास में भी योगदान करना है। जैसा कि अध्यापक को राष्ट्र निर्माता, नागरिकों का निर्माणकर्ता, शिक्षा प्रक्रिया की आधारशिला, समाज का पथ-प्रदर्शक आदि सब कुछ कहा जाता है। इस प्रकार एक शिक्षक में सामान्यतः निम्न गुणों की उपेक्षा की जाती हैं-

बालकों को समझने की योग्यता एवं कुशलता।

स्वयं की शैक्षिक एवं शिक्षण योग्ताएँ।

बलकों के साथ कार्य करने तथा समायोजन की क्षमता।

कार्य करने की इच्छा शक्ति।

सहयोग, सद्भावना, निष्पक्षता तथा नेतृत्व की क्षमता।

प्रभावशाली शिक्षण के लिए तथा छात्रों की मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक स्तर की जानकारी अध्यापक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु, शिक्षण-विधियों, सहायक सामग्री आदि का उचित ढंग से उपयोग कर योग्य अध्यापक पर ही निर्भर करता है। अध्यापक अपनी योग्यता, अनुभव तथा सूझ-बूझ के आधार पर सामाजिक विज्ञान विषय को अधिक रूचिकर तथा उपयोगी बना सकता है। अध्यापक में कुछ ऐसे गुण एवं विशेषताएँ होती हैं जिनके द्वारा वह बालकों में सोचने, समझने, विश्लेषण, संश्लेषण, तर्क-वितर्क, आदि मानसिक शक्तियों का विकास कर सकता है। अध्यापक के विभिन्न गुण एवं विशेताएँ अग्रलिखित हैं।

3.6.2 विद्यालय की छवि (प्रतिष्ठा) सुधारने में अध्यापक की भूमिका (Role of Teacher in Improving the Image of the School)

विद्यालय की प्रतिष्ठा (छवि) का तात्पर्य विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति समाज की प्रतिक्रिया एवं धारणा से है। विद्यालय की प्रतिष्ठा, प्रधान अध्यापक का नेतृत्व, अध्यापक एवं कर्मचारियों में सहयोग की भावना तथा छात्र-छात्राओं की उच्च उपलब्धियों आदि पर निर्भर करती है।

अध्यापक विद्यालय का महत्वपूर्ण अंग होता है, इसलिए विद्यालय की प्रतिष्ठा बनाने एवं सुधारने में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अध्यापक विद्यालय की प्रतिष्ठा या छवि को सुधारने में

C. सामाजिक अध्ययन अध्यापक के गुण एवं भूमिका (Role and Qualities of Social Science Teacher)

1. अध्यापक को समय का पाबन्द होना चाहिये जिससे वह छात्रों को भी समय की महत्ता का आभास करा सके।

2. समय-सारणी के अनुसार अपनी कक्षा में जाकर शिक्षण करना चाहिये।

3. पर्याप्त रूप से कक्षा-कार्य, गृहकार्य तथा अभ्यास कार्य करना तथा उसका निरीक्षण करना एवं सुधार हेतु सुझाव देना।

4. शिक्षण करते समय उपयुक्त एवं बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों तथा सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिये।

5. छात्रों की व्यक्गित एवं सामाजिक समस्याओं की जानकारी रखना तथा उनके समाधान में सहायता करना।

6. छात्रों के साथ प्रेम, सहानुभूति, निष्पक्ष सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिये।

7. छात्रों में अनुशासित रहने की प्रवृत्सि को विकसित करना चाहिये।

8. छात्र-परिषद् तथा सामाजिक अध्ययन परिषद् का गठन करके नेतृत्व की क्षमता विकसित करने के प्रयास करने चाहियें।

9. अभिभावक तथा अध्यापक संघ की गतिविधियों द्वारा विद्यालय के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिये।

10. पाठ्य सहगामी क्रियाओं, खेलकूद आदि में स्वयं भाग लेना तथा छात्रों को प्रेरित करना

11. विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में अभिभावकों को आमन्त्रित करना तथा विद्यालय की प्रगति से अवगत कराना चाहिये।

D. समाजिक विज्ञान शिक्षण के प्राप्य उदेश्य (Objectives of Teaching Social Sciences)

प्राप्य उदेश्य से अभिप्राय है वे परिवर्तन जो हम बालकों में लाने का प्रयास करते हैं। ये अध्यापकों, विद्यार्थियों, परीक्षकों तथा अभिभावकों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के माध्य के रूप में काम करते हैं, जिसके अन्तर्गत उनका ध्यान अधिगम उपलब्धि पर केन्द्रित रहता है। अतः प्राप्य उदेश्य शिक्षा की प्रक्रिया को वैधता प्रदान करते हैं।

सामाजिक विज्ञान के सम्पूर्ण क्षेत्र के प्राप्य उदेश्यों को विभिन्न विषयों के प्राप्य उदेश्यों से पृथक् करना आसान नहीं हैं। प्रायः ये समान ही होते हैं, भिन्नता केवल इतनी है कि विषय सामग्री को इस प्रकार संगठित किया जाता है कि इन उदेश्यों को प्राप्त किया जा सके। प्रत्येक सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम का इस प्रकार निर्माण किया जाता है जिससे विद्यार्थियों को विशेष आधारभूत सूझ-बूझ, आवश्यक कौशलों तथा अभिवृत्तियों के विकास के योग्य बनाया जा सके जो एक लोकतांत्रिक समाज में प्रभावी नागरिक के लिए आवश्यक है। सामाजिक विज्ञान के प्राप्य उदेश्यों को निम्नलिखित व में बाँटा जा सकता है।

E. **सूझ-बूझ प्राप्ति सम्बन्धी उदेश्य**

समाजिक विज्ञान के प्रभावी कार्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी के बोध विकसित होना चाहिए-

1. अतीत तथा वर्तमान क विभिन्न समाजों की संस्कृति का।
2. लोगों तथा राष्ट्रों की अन्तः निर्भरता का।
3. अपने भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के अनुसार समायोजन का।
4. विभिन्न समूहों द्वारा सामाजिक नियंत्रण के लिए किए गए कार्यें का।
5. मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं का।
6. सभ्यताओं के विकास का।
7. आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विचारों का।
8. विश्व के विचारों तथा संस्थाओं के प्रति विश्वसनीय तथ्यों में राष्ट्रीयता तथा प्रभुसत्ता का।
9. सुदृढ़ तथा समृद्ध व्यक्तित्व के निर्माण के लिए उत्तरदायी प्रवृत्तियाँ।
10. लोकतंत्र तथा इसकी कार्यप्रणाली का।
11. समसामयिक कार्यों सम्बन्धी ज्ञान का।

H. सामाजिक विज्ञान कौशल की प्राप्ति सम्बन्धी प्राप्त उदेष्य

समाजिक विज्ञान के प्रभावी कार्यक्रम विद्यार्थियों मं निम्नलिखित कैशलों का विकास करते हैंः

1. सामूहिक विचार-विमर्श में भाग लेना।

2. आलोचनात्मक चिन्तन शक्ति तथा स्व-निर्माण शक्ति का विकास।

3. रिपोर्ट को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए तैयार करना।

4. सामाजिक विज्ञान के अधिगम के लिए सामुदायिक संसाधनों की एक सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करना।

5. चार्ट, रेखाचित्र तथा नक्शे बनाना।

6. प्रारूप तैयार करना।

7. समय रेखा का प्रयोग करना।

8. समस्याओं का विश्लेषण करना तथा हल करना।

9. सामाजिक विज्ञान सम्बन्धी सूचनाओं को व्यावहारिक परिस्थितियों में प्रयोग करना।

10. नक्शे, ग्लोब, चार्ट, ग्राफ सम्बन्धी सामग्री की व्याख्या करना।

11. बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से बोलना तथा लिखना।

12. सूचनाओं का संगठन तथा मूल्यांकन करना।

13. अपने निष्कर्षों के लिए तर्क प्रस्तुत करना।

14. तथ्यों तथा साक्ष्यों को छांट कर सम्बन्धित तथ्यों को अलग करना।

15. विभिन्न तथ्यों में सम्बन्ध स्थापित करना।

G. वांछित अभिवृत्तियों की प्राप्ति सम्बन्धी प्राप्य उदेष्य

समाजिक विज्ञान के प्रभावी पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी को केवल वांछनीय अभिवृत्ति को प्राप्ति की दिशा में जाने के योग्य ही नहीं बनाया जाना चाहिए अपितु उन ढंगों की सूझ-बूझ भी विकसित की जानी चाहिए जिनके द्वारा उनका निर्माण होता है।

1. जाति, रंग तथा लिंग के आधार से परे सभी के योगदान तथा अधिकारों के प्रति आदर की भावना का विकास।

2. उच्च सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना।

3. नियमों का पालन करना।

4. विभिन्न समूहों के सुधार हेतु व्यक्तिगत रूप से योगदान देने की इच्छा।

5. उत्तरदायित्व स्वीकार करना।

6. लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विश्वास।

7. उच्च नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति सशक्त दृष्टिकोण विकसित करना।

8. हमारी सामाजिक संरचना का निर्माण करने में दिए गए बलिदानों के प्रति प्रशंसात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।

9. एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में परिवर्तन की आवश्यकता को महसूस करना, जिससे मानवीय अस्तित्व में सुधार हो रहा है।

3.7 सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन में अध्यापक की भूमिका

बालकों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने के लिए सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन अध्यापक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वह छात्रों के दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए मोड़ सकता है। उसकी भूमिका के विषय में सी0 एफ.स्टोंग (C.F. Strong) ने लिखा है, कि अध्यापक और पाठ्यक्रम दो ऐसे केन्द्र हैं जो बच्चों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पैदा करने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सामाजिक अध्ययन अध्यापक निम्नलिखित प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीष्य सद्भावना का विकास कर सकता है-

अध्यापक का अपना विश्वास (Teachers own Faith)- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन को अध्यापक स्वयं विश्व समाज और अन्तर्राष्ट्रीय सौहाद में विश्वास रखना चाहिए। यदि वह स्वयं संकुचित राष्ट्रीयता की परिधि में सीमित रहेगा, तो वह भी बच्चों को अन्तर्राष्ट्रीयता के लिए तैयार नहीं कर पायेगा।

पाठ्यक्रम की सहायता से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding Through Curriculum)-सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन अध्यापक पाठ्यक्रम के माध्यम से भी छात्रों मेंे इस भावना को भरने का प्रयास कर सकता है। विभिन्न विषयों को पढ़ाते हुए अध्यापक को अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक विषय को पढ़ाते हुए अनेक ऐसे अवसर आते हैं जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना आसानी से विकसित हो सकती है।

छात्रों को मानसिक रूप से तैयारी करना (Conditioning Student Mind)- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन अध्यापक को यह बात अच्छी प्रकार से समझ लेनी चाहिए कि अन्तर्राष्ट्रीय भावना के निर्माण के लिए स्कूल पाठ्यक्रम की विषय वस्तु पर बल देना पर्याप्त नहीं,

अध्यापक को चाहिए कि वह छात्रों के ज्ञान को अन्तर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ की ओर प्रवृत्त करे, क्योंकि युद्ध व्यक्तियों के मन में आरम्भ होता है इसलिए अध्यापक को छात्रों के मन और शरीर के स्वस्थ विकास की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि वह मानव जाति की एकता के प्रति सजग हो सके और प्रशंसात्मक दृष्टिकोण अपना सके।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण (International Outlook)- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन अध्यापक का दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय होना चाहिए। अध्यापक को अर्न्तराष्ट्रीय विषयों की व्याख्या विस्तार में करनी चाहिए, अध्यापक का व्यवहार अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उदारतापूर्ण होना चाहिए। उसे अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में भी विश्वास होना चाहिए तब ही वह अपने जीवन में उनको अपनाकर दूसरों को प्रभावित कर सकेगा।

योग्य अध्यापन (Effiective Teaching)- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना किसी पर भी लादी नहीं जा सकती। इसकों सफल बनने के लिए अध्यापक को ऐसी शिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए जिससे छात्रों मंे सहयोग की भावना का विकास हो। विद्यालय में शिक्षण द्वारा छात्रों में दूसरे देशों के सम्बन्ध में अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करने की रूचि उत्पन्न की जानी चाहिए। इतिहास, सामाजिक अध्ययन, नागारिकशास्त्र आदि विषयों के पढ़ाते समय अध्यापक को बच्चों में भावात्मक पृष्ठ-भूमि का निर्माण करना चाहिए।

अन्तर्राष्टीय क्रियाओं को प्रोत्साहन (Encouragement to International Acivities)- सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन अध्यापक को विद्यालय में समय-समय पर अन्तर्राष्ट्रीय क्रियाओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। छात्रों में इस भावना का विकास करने के लिए देश-विदेश की टिकटों का संग्रह, अन्तर्राष्ट्रीय दिवस को मनाना, नाटक के माध्यम से युद्ध जनहित हानियों का ज्ञान देना, इत्यादि क्रियाओं को बढ़ावा दिया जाये।

प्रौढ़ शिक्षा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding Through Adult Education)- समाज के प्रौढ़ वर्ग के नागरिक भी अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने में सहायता दे सकते हैं। सामाजिक अध्ययन अध्यापक को चाहिए कि वह प्रौढ़ समाज को भी शिक्षित करके अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए प्रोत्साहित करे।

शिक्षा एक महान् शक्ति है तथा राष्ट्रीय एकता का प्रभावशाली साधन है। शिक्षा का मुख्य साधन विद्यालय का पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम का निर्माण प्रायः परीक्षा के दृष्टिकोण से किया जाता है। राष्ट्र के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुये इन विषयों की विषयवस्तु को पुनः व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। विभिन्न विषयों को पढ़ाते समय स्कूल पाठ्यक्रम की सहायता से राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास करके एकता स्थापित की जा सकती है।

वर्तमान युग की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता यह है कि सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत विषयों की पुनव्यवस्था की जाये। इतिहास, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, नागरिकशास्त्र पढ़ाया जाये। 'इतिहास' के माध्यम से भारत की धार्मिक भाषाई तथा जातीय विभिन्नताओं में एकता प्रकट होनी चाहिए। बालकों को इतिहास के माध्यम से यह अनुभव करना चाहिए कि जब भी लोगों में एकता का अभाव रहा भारत आसानी से विदेशों के दबाव में आता रहा। भूगोल की शिक्षा के माध्यम से विभिन्न जातियों के जीवन विधियों एवं उनके भोजन आदि का ज्ञान मिलता है। 'भूगोल' के अध्ययन से लोगों के रहन-सहन, भोजन, पहनावे आदि के ज्ञान से छात्रों को एक-दूसरे के प्रान्त के लोगों के बारे में जानकारी मिलती है। यह भी ज्ञात होता है कि किस प्रकार विभिन्न क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं। 'सामाजिक अध्ययन' भी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से पढ़ाया जाना चाहिए। 'नागरिक शास्त्र' छात्रों में राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता के प्रति वांछित दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए पढ़ाया जाना चाहिए। स्पष्ट रूप से ऐसा कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास का महान युग था जब भारत के विभिन्न क्षेत्रों में एकता के कारण भारत एक शक्तिशाली एवं सुदृढ़ देश था और पारिवारिक झगड़ों के कारण यहाँ के लोगों, सम्प्रदायों, साधनों आदि को बहुत हानि उठानी पड़ी। आधुनिक लोकतन्त्रात्मक राज्य में एकता स्थापित करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। पाठ्य-पुस्तकों भी शिक्षा पद्धति का एक अभिन्न अंग हैं इनमें जो कुछ भी दिया जायेगा छात्र उन्हीं का अनुसरण करने का प्रयास करेंगे। राष्ट्रीस एकता को ध्यान में रखते हुए पाठ्य-पुस्तकों की सामग्री में संशोधन किया जाना चाहिए। जो बातें एकता के मार्ग में बाधा डालने वाली हांे उन्हें हटाया जाना चाहिए तथा एकता करने वाली बातों को शामिल किया जाना चाहिए। प्रत्येक स्तर पर पाठ्य-पुस्तकों का मूल्याकन होना चाहिए तथा जो सामग्री छात्र को राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करेन में सहायता प्रदान करती हों उसको पाठ्य-पुस्तक में उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

3.8 सामाजिक विज्ञान शिक्षक और समतावाद समाजर: एक परिदृश्य

समाजिक और राजनीतिक चिंतन में समतावाद (Egalitarianism) एक सीमित लेकिन विवादित अवधारणा है। समतावाद का सिद्धांत सभी मनुष्यों के समान मूल्य और नैतिक स्थिति की सकंल्पना पर बल देता है। समतावाद का दर्शन ऐसी व्यवस्था का समर्थन करता है जिसमें सम्पन्न और समर्थ व्यक्तियों के साथ-साथ निर्बल, निर्धन और वंचित व्यक्तियों को भी आत्मविश्वास के लिए उपयुक्त अवसर और अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त हो सकें। समतावाद समाज के सब सदस्यों को एक ही श्रृंख्ला की कड़ियाँ मानता है जिसमें मजबूत कड़ियाँ कमजोर कड़ियों की हालात से अप्रभावित नहीं रह सकती। उसका दावा है कि जिस समाज में भाग्यहीन और वंचित मनुष्य दुःखमय, अस्वस्थ और अमानवीय जीवन जीने को विवश हों, उसमें भाग्यशाली और सम्पन्न लोगों को व्यक्तिनत उन्नति और सुख समृद्धि पराप्त करने की असीम स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। वस्तुतः समतावाद स्वतंत्रता और

समानता में सामंजस्य स्थापित करना चाहता है। इसे एक विवादित संकल्पना इसलिए कहा गया है कि समानता के कई स्वरूप् हो सकते हैं और लोगों के साथ समान व्यवहार करने के भी अनेक तरीके हो सकते हैं। कल्याण समतावादियों से भिन्न 'संसाधन समतावाद' संसाधनों की समानता पर बल देता है। जान रॉल्स, रोनॉल्ड डवॉर्किन, एरिक रोकोवोस्की आदि को संसाधन समतावादी विचारक माना जाता है। डवॉर्किन मानते हैं कि संसाधनों की समानता का अर्थ यह है कि 'जब एक वितरण योजना लोगों को समान मानते हुए संसानधनों का वितरण या हस्तांतरण करती है, तो आगे संसाधनों का कोई भी हस्तांतरण लोगों के हिस्से को ज्यादा समान बनाये।' लेकिन इसी जगह यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि किन परिस्थितियों में संसाधनों की समानता हासिल की जा सकती है। डवॉर्किन इस संदर्भ में एक द्वि-स्तरीय परक्रिया के बारे में बताते है महत्त्वाकांक्षा संवेदी नीलामी और बीमा योजना। इन सबसे अलग माइकल वॉल्जर ने जटिल समानता का विचार पेश किया है। वॉल्जर का मानना है कि समानता को कल्याण, संसाधन या कैपेबिलिटी जैसी किसी एक विशेषता पर ध्यान नहीं देना चाहिए। उनके अनुसार किसी भी वितरण का न्यायपूर्ण या अन्यायपूर्ण होना उन वस्तुओं के सामाजिक अर्थ से जुड़ा होता है जिनका वितरण किया जा रहा है। इसके साथ ही सामाजिक जीवन के सभी दायरों में वितरण का एक जैसा मानक नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए बाजार और राजनीतिक सत्ता के दायरे अलग-अलग है। इसलिए वे यह दलील देते हैं कि एक दायरे के भीतर वस्तुओं का वितरण उसका आंतरिक मसला है और आदर्श रूप में इसे किसी दूसरे दायरे को परभावति नहीं करना चाहिए। एक समतावादी समाज जहां लोगों के उपचार के माध्यम से समान रूप से लोगों को समान अधिकार और अवसर देने में विश्वास रखता है। इस विश्वास समतावाद, जो मानव समानता की वकालत, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों के लिए सम्मान के साथ के रूप में जाना जाता है।

3.9 समतावाद समाज का अर्थ (Meaning of egalitarian society)

समतावाद फरेंच शब्द से ली गई है ''Egal'' समान अर्थ। 18वीं सदी में, शब्द ''समतावाद'' भी आमतौर पर यह उल्लेख करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। वहाँ कई राजनीतिक दर्शन है कि कुछ हद तक समतावाद के सिद्धांत वापस, साम्यवाद, समाजवाद, अराजकता और मार्क्सवाद भी शामिल हैं। ज्यादातर लोगों का मानना है कि राजनीतिक प्रभाव कुछ लोगों के हाथ में रहता है, जबकि अन्य लोगों का तर्क है कि एक प्रतिनिधि लोकतंत्र राजनीतिक समतावाद पर आधारित है। समतावाद के विभिन्न प्रकार के राजनीतिक, नैतिक, भाग्य, आर्थिक, अवसर, जातीय, ईसाई, लिंग और नैतिक समतावाद शामिल हैं। समतावाद के प्रत्येक प्रकार के विशिष्ट क्षेत्र में यह ध्यान केद्रित में समानता की वकातल। उदाहरण के लिए, आर्थिक समतावाद समाज में सभी लोगों द्वारा आर्थिक संसाधनों के उपयोग में समानता के लिए ईसाई समतावाद राज्य अमेरिका में सभी लोगों को भगवान की आँखों में बराबर हैं और भी शादी और नेतृत्व में लैंगिक समानता पर सिखाता है। एक सांस्कृतिक स्तर पर,

समतावादी सिद्वांतों पिछले दो सौ वर्षों के दौरान परिष्कार और स्वीकृति में विकसित किया है। उल्लेखनीय दें कि मोटे तौर पर समतावादी दर्शन के अलावा समाजवाद, सामाजिक अराजकता, मुक्तिवादी समाजवाद, बाएं स्पइमतजंतपंदपेउए एक राष्ट्र रूढ़िवाद और प्रगतिशीलता, जिनमें से कुछ आर्थिक समतावाद प्रतिपादन करना हैं। कई समतावादी विचारों बुद्धिजीवियों के बीच और कई देशों के सामान्य आबादी में व्यापक समर्थन का आनंद लें। एक लोकतांत्रिक नागरिक में सच को झूठ से अलग छाँटने, प्रचार से तथ्य अलग करने, धर्माध्ंाता और पूर्वाग्रहरों के खतरनाक आकर्षण को अस्वीकार करने की समझ व बौद्विक क्षमता होनी चाहिए वह न तो पुराने को इसलिए नकारे क्योंकि वह पुराना हैं, न ही नए को इसलिए स्वीकार करे क्योंकि वह नया हैं बल्कि उसे निरपेक्ष रूप से दोनों को परखना चाहिए और साहस से उसको नकारना चाहिए जो न्याय व प्रगति के बलों को अवरूद्ध करता हो। राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय अस्मिता के तत्व विभिन्न क्षेत्रों में समाहित किए जाएंगे और उन्हें इस तरह बनाया जाएगा कि वे भारत की एक सामान्य सं ास्कृतिक विरासत, समतावाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, लिंग समानता, पर्यायवरण की सुरक्षा, सामाजिक अवरोधों का निवारण, छोटे परिवार के मानदंड का पालन और वैज्ञानिक स्वभाव का पोषण आदि मूल्यों को प्रोत्साहित करें। सभी शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का पूर्ण पालन करेंगे। अध्यापक के उद्ेदश्य विवेक पर आधारित लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरेक्षता, मानवीय गरिमा व अधिकार तथा अन्य के प्रति आदर जैसे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का निर्माण होना चाहिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण का लक्ष्य विद्यार्थियों में इस आलोचनात्मक मानसिकता का त्याग और नैतिक क्षमता का विकास होना चाहिए, वे उन सामाजिक शक्तियों से सावधान रह सकें जो इन मूल्यों को खतरा पहुँचाती हैं।

3.10 एक शिक्षक की सोच समतावादी क्यों होना आवश्यक है।

एक बात समान रूप निकलकर आती हैं कि हमारी शिक्षा का एक बड़ा उदेश्य बच्चों में लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक चेतना का विकास करना रहां हैं जो राष्ट्रीय एकता अखंडता शं ाति और विकास के लिए आवश्यक हैं, यही भावना हमारे सविंधान की भी आत्मा हैं पर दुर्भाग्य हैं कि संविधान के लागू होने के 66 वर्षों के बाद भी हमारा समाज इन मूल्यों से बहुत दूर दिखाई देता हैं अभी भी हमारा समाज तमाम प्रकार की असमानताओं, भेदभावों, कट्टरताओं, पाखंडों, प्रदर्शनों, अंधविश्वासों, रूढ़िवादिताओं और अवैज्ञानिक मान्यताओं से ग्रसित हैं कभी-कभी तो लगता हैं कि भौतिक रूप से भले हम 21वीं सदी में जी रहे हैं लेकिन मानसिक रूप से अभी भी 19वीं सदी में ही हैं उच्च शिक्षित लोगों के भीतर भी ब्राहा्रणवाद, जातिवाद, पुरूषवाद, क्षेत्रवाद, सामंतवाद जैसी संकीर्णताएं गहरे तक बैठी हुई हैं आश्चर्यजनक यह हैं कि पिछले दशकों में इसकी गति और तेज हुई हैं लोकतंत्र में रहते हुए भी हमारी जीवन शैली लोकतांत्रिक नहीं हो पायी हैं स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व तथा धर्मनिरपेक्षता जैसे मूल्य किताबी होकर रह गए हैं सभी की कोशिश अपनी सता की पकड़ को

मजबूत करने की हैं हर 'बड़ा' अपने से 'छोटो' पर रौब जमाना चाहता हैं आलोचना सुनने का धैर्य जैसे चुक गया हो यह स्थिति हमारी शिक्षा पर बहुत बड़ा प्रश्न चिह्न हैं, क्योंकि शिक्षा को ही मनुष्य के व्यवहार और मानसिकता में परिवर्तन का माध्यम माना जाता हैं हमारी शिक्षा इन मूल्यों का विकास करने में पूर्णतया असफल रही हैं शिक्षक, शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग होने के नाते इस असफलता की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते हैं मूल्यों का विकास कोई किताबी चीज नहीं हैं, किताबों में इन मूल्यों के बारे में पढ़ा देना मात्र पर्याप्त नहीं हैं। मूल्यों का विकास आचरण से जुड़ा हुआ हैं बच्चे अपने माता-पिता, शिक्षक और साथियों से इन मूल्यों को ग्रहण करते हैं बच्चों में उतना प्रभाव किताबों में लिखी बातों का नहीं होता हैं जितना अपने आसपास के लोगों के आचार-व्यवहार और मनोवृत्तियों का इसमें शिक्षकों का स्थान सबसे ऊपर होता हैं पर इस दृष्टि से शिक्षक की स्थिति अजीबोगरीब हैं।

शिक्षक की स्थिति के बारे में विशेषज्ञ कमलानंद झा अपनी पुस्तक पाठ्य पुस्तक में एक स्थान पर टिप्पणी करते हैं कि भारत का शिक्षक समुदाय अत्यधिक दकियानूस और पंरपरावादी हैं पुरानी पड़ गई बातों को आज भी शिक्षक दोहराए चले जा रहे हैं बहुत कुछ पुराने अज्ञान और अंधविश्वास शिक्षक के माध्यम से नई पीढ़ी में डाला जा रहा है।

यदि हम अपने आसपास ही नजर दौड़ाएं तो परंपरावादी, दकियानूसी, सामंतवादी, अलोकतांत्रिक, भाग्यवादी और अवैज्ञानिक सोच वाले शिक्षकों की कमी नहीं दिखाई देगी। ऐसे बहुत सारे शिक्षक मिल जाएंगे जो रोग-व्याधि से मुक्ति के लिए विभूति लागाने, ताबीज-गंडा बाँधने, झाड़-फूँक या पूजा-पाठ करने की सलाह देने में देर नहीं करते कुछ तो खुद इन टोने-टोटकों के विधि-विधानों के विशेषज्ञ हैं। इन शिक्षकों की चिंतन प्रक्रिया में तर्क का कोई स्थान नहीं लोकतांत्रिक पर धर्मनिरपेक्ष मूल्यों पर कोई आस्था और विश्वास नहीं बच्चों को स्वतंत्रता और समानता देने की बात पर तो भड़क ही उठते हैं। बहस करना तो अनुशासनहीनता की पराका'ठा हैं। इनकी दृष्टि में स्त्री को पुरूष के समान मानना इन्हें प्राकृतिक नियम के विरूद्ध प्रतीत होता हैं। इनकी दृढ़ मान्यता हैं कि ईश्वर ने स्तरी को पुरूष से कमजोर बनाया हैं इसलिए वे दोनों कभी समान नहीं हो सकते हैं प्रकृति में ही असमानता हैं तो भला समाज में समानता कैसे संभव हैं? उनके लिए जाति भी ईश्वर निर्मित हैं। ऐसे में सवाल उठता हैं कि जब शिक्षकों के भीतर ही लोकतांत्रिक व धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और वैज्ञानिक चेतना तथा आलोचनात्मक विवके का अभाव हो तो फिर कैसे आशा की जा सकती हैं कि वे बच्चों में इन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का निर्माण कर पाएगें जो शिक्षक स्वयं दूसरे धर्मों के प्रति पूर्वाग्रहों से भरा हो तथा बच्चों के समक्ष दूसरे धर्मो की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करता हो वह बच्चों में धर्मनिरपेक्षता का मूल्य क्या विकसित करेगा। कैसे उसके भीतर वैज्ञानिक व आलोचनात्मक चिंतन पैदा होगा हालांकि शिक्षक को इसके लिए पूरी तरह दोषी बताना कहीं न कहीं जल्दबाजी और अधूरा विश्लेषण होगा क्योंकि शिक्षक स्वयं उस सामाजिक-आर्थिक-राजनीति व्यवस्था का अंग हैं जो अलोकतांत्रिक और अवैज्ञानिक हैं इस व्यवस्था के आकाओं को नागरिकों में लोकतांत्रिक चेतना की कोई गरज नहीं है। यह उनके वर्गीय स्वार्थों के खिलाफ हैं। शिक्षक बनने से पहले वह जिस व्यवस्था में पला-बढ़ा और

पढ़ा-लिखा हैं उसका असर उस पर पड़ना स्वाभाविक हैं। इस व्यवस्था में उसकी हसियत का विश्लेषण करना होगा। क्या वह इस स्थिति में हैं कि इस दिशा में स्वतंत्रता से काम कर सके? इस संदर्भ में युवाशिक्षाविद राजीव शर्मा की बात गौरतलब हैं- 'शिक्षक रूपी जो चाबी हैं उससे बड़े बदलाव की अपेक्षा की जाती हैं जबकि उसकी सामाजिक स्थिति में लगातार गिरावट आयी हैं। वास्तव में शिक्षक समाज का एक हिस्सा हैं और स्कूली व्यवस्था का एक अंग पर स्कूली ढाँचे के निर्माण में उसकी भूमिका ना के बराबर हैं। बात असल में ढँाचों की हैं जो प्रत्येक बदलाव की खिलाफत करते हैं या बदलाव को अपने दृष्टिकोणे देखने की कोशिश करते हैं। वास्तव में शिक्षक इस व्यवस्था की चाबी मात्र हैं उसको चलाने वाला तो कोई और ही हैं। ऐसा न होता अगर तो फिर क्यों शिक्षा के विभिन्न दस्तावेजों में जिस बात को बार-बार दोहराया जाता रहा हैं उसके लिए कोई ठोस पहलकदमी नहीं हुई। तमाम मुद्दों पर शिक्षक-संवेदीकरण हेतु समय-समय पर केन्द्र राज्य सरकारों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए पर कभी नहीं सुना या देखा गया कि शिक्षकों में लोकतांत्रिका धर्मनिरपेक्ष व वैज्ञानिक चेतना के विकास के लिए कोई विशेष प्रशिक्षण शिविर चलाए गए। इस ंिबंदु पर भी विचार किया जाना चाहिए। वास्तव में यह व्यवस्था यथ स्थिति को बनाए रखना चाहती है। अप्रत्यक्ष रूप से यह कोशिश करती हैं कि काम करने करने वाला शिक्षक भी थक हार कर बैठ जाए।

3.11 राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क (NCF-2005)

भारत में स्वतन्त्रता से पहले सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र फैला हुआ नहीं था। परंतु धीरे-धीरे सामाजिक विज्ञान और अध्ययन विषय की लोकप्रियता बढ़ने लगी। आज भारत में सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन विशय देषभर के स्कूलों में किसी न किसी रूप में पढ़ाए जा रहें हैं। पहले ऐसी स्थिति नहीं थी। इसे भारत में एनसीईआरटी (NCERT) द्वारा प्रस्तावित किया गया हैं। यह भारत में स्कूल प्रोग्राम के अंतर्गत पाठ्यक्रम तैयार करने, षिक्षण अभ्यास एवं टेक्स्बुक्स के लिये फ्रेमवर्क करता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क-2005 ने कुल 17 राज्यों में पाठ्यक्रम को प्रभावित किया है तथा 22 भाषाओं में अनुवाद किया है। मानव के विकास के लिए सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन से सम्बधित विषय सामग्री को बढ़ावा दिया गया। क्योंकि सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के उदेष्य है। समाज को बढ़ाना तथा मनुश्य को सदृढ़ मजबूत बनाना। जिसमें मनुश्य के अच्छे आचरण तथा व्यक्तित्व का निर्माण हो। स्कूली शिक्षा के अध्ययन से बच्चों के अच्छे भविश्य का निर्माण किया जा सकें।

3.12 सामाजिक विज्ञान अध्ययन का महत्व

सामाजिक विज्ञान और अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। यह बच्चों को सक्षम बनाता है। जिस समाज में हम रहते है उसको समझने जानने के लिए कैसे समाज, संरक्षित प्रबंधित, शासित किया जाता है, और भी बलों के बारे में बदलने और समाज को दिशानिर्देश देने की मांग के विभिन्न

तरीके। बच्चों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता एकता और अखंडता समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक समाज का निर्माण। सामाजिक गतिविधियों को समझ का विकास करना। सामाजिक और जीन कौशल को विकसित करना। समाज में भावी जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य के महत्वपूर्ण कौशलों का विकास करना समाजिक संपर्क को बढ़ावा देना।

3.13 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आप सामाजिक विज्ञान शिक्षक के उदेश्यों के बारे में परिचित हो चुके होंगे और साथ ही समाज को शिक्षक के गुणों, व्यक्तित्व, शारीरिक स्वास्थ्य, नैतिक, एवं सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण पहलूओं के बारे में आपने अध्ययन कर लिया होगा| समतावादी समाज के अर्थ एवं विषय में पढ़ने के साथ ही एक अध्यापक के लिए समतावादी होना क्यूँ आवश्यक है इस बारे में बी आप जान चुके होंगे|

3.14 अभ्यास प्रश्न-

1. सफल तथा लोकप्रिय अध्यापक बनने के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षक में कौन-कौन से गुण होने आवश्यक है?
2. सामाजिक विज्ञान शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण सामग्री बताओं?
3. सामाजिक विज्ञान शिक्षक के अपने छात्रों तथा सहयोगियों से कैसे सम्बन्ध होने चाहिए।
4. राष्ट्रीयता की भावना के विकास में सामाजिक अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्व स्पष्ट करो?
5. सामाजिक असमानताओं के त्रिमूलन मंे संसाधन समतावाद के सिद्धातों की व्याख्या करो?

6.धर्म, जाति, लिंग, वर्ग आदि भेदभावों के त्रिमूलन में सामाजिक विषयों को अध्ययन किस प्रकार सफल या असफलता रहा है स्पष्प करो?

3.15 Reference/bibliography

1. **Kochar, S.K. Teaching of social science.**
2. **Maffat, M.P. social studies instruction**
3. **Nesiah, K. Social studies in the school.**
4. **Nicholson,F.J. social studies for future citizen**
5. **Prall, Charties. E. social studies for the prospective teacher.**
6. **Young ,W.E. The social studies in the elementary school.**

इकाई–4 पाठ्यक्रम का संगठन

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पाठ्यक्रम का अर्थ
4.4 पाठ्यक्रम की आवश्यकता
4.5 पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटक
4.6 विषयवस्तु चयन के मानदण्ड
4.7 पाठ्यक्रम संगठन की उपागम
4.8 अनुदेशन का नियोजन
4.9 अनुदेशन प्रक्रिया
4.10 अनुदेशन के समय ध्यान रखने योग्य बातें
4.11 अनुदेशन के नियोजन की आवश्यकता एवं महत्व

4.1 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान विद्यालय स्तर पर में विद्यार्थियों की समामजिक क्षेत्र में रुचियों, अभिवृत्तियों, सामाजिक ज्ञान कौशलों का विकसित करने के उद्देश्य से पढाया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अध्ययन से विद्यार्थियों में सामाजिक सिद्धान्तों की समझ परिपक्व होती है तथा वे सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए भी प्रेरित होते हैं। किसी भी समाज के लिउ बेहतर और तार्किक दृष्टि से सक्षम नागरिकों की आवश्यकता होती है। इसीलिए समाज के नागरिकों में सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित सूचनाएं, आंकड़े एकत्र करने आंर उन्हें सामाजिक सिद्धान्तों की समझ के अनुरुप निष्कर्ष तक पहुंचने की क्षमता अवश्य होनी चाहिए। सामाजिक विज्ञान शिक्षण विद्यार्थियों को सामाजिक ज्ञान के सृजन और उससे सम्बन्धित सूझ विकसित करने में सहायता करता है।

शिक्षा मानव विकास की प्रक्रिया एक बहुमुखी प्रक्रिया है जिसमें बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षण अधिगम प्रयासों का आयोजन किया जाता है। सामान्यतः शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की क्रियाओं को शामिल किया जाता है, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों में में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन करना होता है। शिक्षण गतिविधियों को पूरा करने का आधार पाठ्यवस्तु अथवा विषयवस्तु होती है। पाठ्यवस्तु को बालक के विकास के लिये एक प्रमुख साधन माना जाता है। इस

दृष्टि से अध्यापक अपनी शिक्षण क्रियाओं द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है जिससे विद्यार्थियों को नवीन अनुभव होते हैं तथा उन्हें इन्हें सीखने के लिए कुछ गतिविधियां करनी भी होती है। इसका प्रतिफल यह होता है कि उनमें समाज के अनुरुप अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होता है। म कह सकते हैं कि विद्यार्थी सीखते हैं। सीखने में व्यवहार परिवर्तन आवश्यक होता है। इस प्रकार शिक्षण क्रियाओं का आधार पाठ्यवस्तु होती है। शिक्षा व्यवस्था की धुरी पाठ्यक्रम का कहा जाता है लेकिन यह समयकाल और समाज में आए परिवर्तनों के अनुसार बदलता रहा है। इसीलिए विद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम समाज की आवश्यकता और विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के अनुरुप विकसित करना आवश्यक हो जाता है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास है कि आपको पाठ्यक्रम संगठन से सम्बन्धित सभी बुनियादी तत्वों से परिचित करा दिया जाए। इसलिए हमने पाठ्यक्रम के अर्थ से लेकर, इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर विभिन्न विद्वानों के विचारों को समेटकर पाठ्यक्रम के संगठन, पाठ्यक्रम संगठन की उपागम, विषयवस्तु के चयन कम मानदण्ड,पाठ्यक्रम संगठन की आवश्यकता और महत्व सम्बन्धी अवधारणाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया ताकि आपकी विषय से जुड़ी विभिन्न भ्रान्तियां दूर हो सकें।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. पाठ्यक्रम का अर्थ बता पाएंगे।
2. पाठ्यक्रम की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।
3. पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटक बता सकेंगे।
4. विषयवस्तु चयन के मानदण्डों का वर्णन कर सकेंगे।
5. पाठ्यक्रम संगठन की उपागमों की व्याख्या कर सकेंगे।
6. अनुदेशन का नियोजन को परिभाषित कर पाएंगे।
7. अनुदेशन प्रक्रिया को समझा पाएंगे।
8. अनुदेशन के समय ध्यान रखने योग्य बातों को अनुदेशन के समय याद रख सकेंगे।
9. अनुदेशन के नियोजन की आवश्यकता एवं महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।

4.3 पाठ्यक्रम का अर्थ

अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम के लिये 'करीक्यूलम' (Curriculum) शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु 'करीक्यूलम' लेटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है-'दौड़ का मैदान' (Race Course)। शिक्षा के अन्तर्गत इसका अर्थ है, 'छात्रों का कार्य क्षेत्र अथवा छात्रों की दौड़ का मैदान।'

यहाँ पर दो शब्द-दौड़ तथा मैदान प्रयुक्त किये गये हैं। 'मैदान' का अर्थ पाठ्यक्रम से है और दौड़ का अर्थ छात्रों द्वारा अनुभव एवं उनकी क्रियाओं से है। पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों ने भी किया है। समाजशास्त्री पाठ्यक्रम का अर्थ अधिक व्यापक लगाते हैं। इसके अनुसार 'पाठ्यक्रम' शब्द का अर्थ-उन सभी क्रियाओं एवं परिस्थितियों से होता है जिनका नियोजन एवं सम्पादन विद्यालय द्वारा बालकों के विकास के लिये किया जाता है। शिक्षा के उद्देश्य बदलते रहे हैं इसलिये पाठ्यक्रम का अर्थ भी बदलता रहा है।

कनिंघम-'कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियो (स्कूल) में ढाल सके।'

मुनरो-'पाठ्यक्रम में वे सब क्रियायें सम्मिलित हैं जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के हेतु विद्यालय में उपयोग करते हैं।'

हार्न-'पाठ्यक्रम वह है जो बालकों को पढ़ाया जाता है। यह शन्ति पूर्व पढ़ने या सीखने से अधिक है। इसमें उद्योग, व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास और क्रियायें सम्मिलित हैं।'

कैसबेल-'पाठ्यक्रम में वे सभी वस्तुयें आती हैं जो बालकों के, अनेक माता-पिता एवं शिक्षकों के जीवन से होकर गुजरती हैं। पाठ्यक्रम उन सभी चीजों से बनता है जो सीखने वालों को काम करने के समय घेरे रहती हैं। वास्तव में पाठ्यक्रम को गतिमान वातावरण कहा जाता है।'

माध्यमिक शिक्षा आयोग-'पाठ्यक्रम का अर्थ रूढ़िवादी ढंग से पढ़ाये जाने वाले बौद्धिक विषयों से नहीं है बल्कि उसके अन्दर वे सभी क्रिया-कलाप आ जाते हैं जो बालकों को कक्षा के बाहर तथा भीतर प्राप्त होते हैं।

टाइलर के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण की रेखीय प्रक्रिया में सबसे पहले लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। इसके पश्चात इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न अधिगम अनुभवों और विषयवस्तु का चयन किया जाता है। इसके उपरान्त ही विषयवस्तु और अधिगम अनुभवों को संगठित किया जाता है और अन्तिम चरण में परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है।

4.4 पाठ्यक्रम की आवश्यकता

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक नियन्त्रण के लिये प्रभावी यन्त्र है। इसलिए समाज की, राष्ट्र की भावी आवश्यकताओं एवं परिवर्तन के लिये पाठ्यक्रम का विकास करना प्रमुख आवश्यकता है। शिक्षा की आवश्यकता और पाठ्यक्रम की आवश्यकता समान हैं। परन्तु ऐतिहासिक समीक्षा से ज्ञात होता है कि ये आवश्यकताएं बदल रही हैं, जो निम्न प्रकार वर्णित हैं-

1. ज्ञान प्राप्त करने और बौद्धिक स्तर की दृष्टि से मानव अन्य जीवों से भिन्न है। इसलिए उसे अपनी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए शिक्षा का आयोजन करना होता है जिसके लिए निर्धारित पाठ्यक्रम की आवश्यकता होता है।
2. मानवीय गुणों के विकास के लिये शिक्षा में आत्मानुभूति के विकास को महत्व दिया जाता है तथा शिक्षा उन्हें भावी जीवन के लिए तैयार कर सके।
3. विभिन्न विषयों के शिक्षण से मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा उन्हें विकसित किया जाता है।
4. विद्यार्थियों को शिक्षा से व्यवसाय तथा नौकिरयों के लिये तैयार किया जाता है तथा उन्हें तकनीकी विकास तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के लिये भी तैयार कर सके।
5. छात्रों में अभिरूचि उत्पन्न करके उनकी क्षमताओं के अनुरूप उनका विकास किया जाता है।
6. प्रजातन्त्र में सामाजिक क्षमताओं का विकास करके ऐसे नागरिकों को तैयार करना जो प्रजातन्त्र को नेतृत्व प्रदान कर सकें।
7. छात्रों को व्यवसायों के लिये प्रशिक्षण देकर तैयार करना नई शिक्षा नीति की प्राथमिकता है।
8. सामाजिक आवश्यकताओं के लिये नागरिकों को तैयार करना तथा सौंदर्यानुभूति गुणों का विकास करना।
9. प्रमुख आवश्यकता आज जीने की हैं कि आज की परिस्थितियों में कैसे जीवित रह सकें। इसके लिये प्रशिक्षण दिया जाये।

4.5 पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटक

पाठ्यक्रम का सम्पादन शैक्षिक तथा सामाजिक परिस्थितियों में किया जाता है। इसलिये शैक्षिक तथा सामाजिक घटक पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं। यहाँ पर पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले घटकों को विवेचन किया गया है-

शिक्षा व्यवस्था - शिक्षा के इतिहास से यह विदित होता है कि अतीत काल से ही शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम का गहन सम्बन्ध रहाहै और एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। पाठ्यक्रम प्रायः लचीला तथा परिवर्तनशील रहा है। छोटे बालकों का पाठ्यक्रम अनुभव केन्द्रित रहा है। माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम विषय-केन्द्रित रहा है। शिक्षा व्यवस्था के बदलने के साथ पाठ्यक्रम का प्रारूप भी बदल जाता है।

परीक्षा प्रणाली - परीक्षा प्रणाली पाठ्यक्रम को प्रभावित करती है। निबन्धात्मक परीक्षा के पाठ्यक्रम का स्वरूप वस्तुनिष्ठ परीक्षा में बिल्कुल ही भिन्न प्रकार को होता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षा में सूक्ष्म पाठ्यवस्तु पर ही प्रश्न पूछे जाते हैं। जबकि निबन्धात्मक परीक्षा में पाठ्यवस्तु के व्यापक-स्वरूप पर प्रश्न पूछे जाते हैं। निबन्धात्मक परीक्षा से उच्च उद्देश्यों का मापन किया जाता है जबकि वस्तुनिष्ठ से निम्न उद्देश्यों का ही आकलन किया जाता है।

शासन व्यवस्था - शिक्षा द्वारा राष्ट्र तथा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है। शासन प्रणाली बदलने से पाठ्यक्रम के प्रारूप को बदलना होता है। केन्द्र तथा राज्य स्तर पार्टी की सत्ता बदलने से भी पाठ्यक्रम के प्रारूप पर प्रभाव पड़ता है। पाठ्यक्रम के विशिष्ट प्रारूप को केन्द्रीय सरकार प्रभावित करती है। रूस में शासन सत्ता बदलने से पाठ्यक्रम का प्रारूप बिल्कुल ही बदला जा रहा है। भारत में शिक्षा राज्य या प्रदेश द्वारा व्यवस्थित की जाती है। इसलिये शिक्षा का राष्ट्रीय प्रारूप नहीं है। सभी प्रदेशों के पाठ्यक्रम के प्रारूप विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग हैं।

अध्ययन समितियां - पाठ्यक्रम के प्रारूप का निर्माण अध्ययन समितियों द्वारा किया जाता है। विभिन्न स्तरों पर अध्ययन समिमितयों के द्वारा पाठ्यक्रम का निर्माण तथा सुधार किया जाता है। अध्ययन समिति के सदस्यों की सूझबूझ तथा अनुभवों द्वारा ही पाठ्यक्रम के प्रारूप को विकसित किया जाता है। इसलिये इन सदस्यों की अभिरूचियों, अभिवृत्तियों तथा मानसिक क्षमताओं का सीधा प्रभाव पड़ता है। साधारणतः अध्ययन समिति के अध्यक्ष ही पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाते हैं और बदलते हैं। अन्य सदस्य मात्र अनुमोदन ही करते हैं।

राष्ट्रीय आयोग तथा शिक्षा समितियाँ - शिक्षा में सुधार और विकास हेतु राष्ट्रीय स्तर आयोग तथा समितियाँ गठित की जाती हैं। भारत में स्वतन्त्रता के बाद से अनेक आयोग तथा समितियाँ गठित की गई। उन्होंने विश्वविद्यालय माध्यमिक तथा प्राथमिक स्तर पर सुधार के लिये सुझाव दिये और उन सुझावों को लागू करने का प्रयास किया जिससे पाठ्यक्रम के प्रारूप को भी बदलना पड़ा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यवसायिक शिक्षा को अधिक महत्व दिया है। इसलिये माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का प्रारूप विकसित किया गया है। शिक्षा के आयोगों तथा समितियों के सुझाव के आधार पर भी पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रभावित होता है।

सामाजिक परिवर्तन-सामाजिक परिवर्तन में आर्थिक परिवर्तन की गति अधिक तीव्र है इसलिये ये आर्थिक तथा भौतिक परिवर्तन भी पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं। विज्ञान तथा तकनीकी ने सामाजिक जीवन को अधिक प्रभावित किया है। इसलिये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के साथ तकनीकी के प्रशिक्षण (कम्प्यूटर) आदि सम्बन्धी नये पाठ्यक्रम विकसित किया जा रहे हैं। शिक्षा के अन्तर्गत दूरवर्ती प्रणाली का विकास हुआ है जिसमें माध्यमों तथा सम्प्रेषण विधियों को विशेष महत्व दिया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठ्यक्रम का क्या अर्थ है?

2. पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

4.6 विषयवस्तु चयन के मानदण्ड

1. आत्मनिर्भरता

सीखने के अर्थशास्त्र के अनुसार कम शिक्षण प्रयास और कम शैक्षिक संसाधनों में विद्यार्थियों द्वारा अधिक से अधिक सीखने का अवसर मिलना चाहिए। ताकि वे प्रभावी रुप से अधिगम परिणामों तक पहुंच सकें। अर्थात विद्यार्थियों को अधिक से अधिक स्वयं सीखने का अवसर प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पाठ्यक्रम की विकास प्रक्रिया के दौरान उसका चयन करते समय ही इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पाठ्यक्रम ऐसा हो जिससे अधिगमकर्ताओं को व्यावहारिक रुप से अधिक से अधिक सीखने के अवसर मिलें और जो उनके जीवन के लिए उपयोगी कौशलों का विकास करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की ओर अग्रसर करें।

2. महत्व

किसी भी अधिगम स्तर पर विषयवस्तु का महत्व इसलिए होता है क्योंकि किन्हीं विशेष उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अधिगम गतिविधियों, कौशलों, प्रक्रियाओं और अभिवृत्तियों का विकास करने की दृष्टि से इसका चयन किया जाता है। विषयवस्तु कम माध्यम से ही अधिगमकर्ताओं के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनो-पेशीय पक्षों के विकास में सहायता मिलती है। साथ ही विषयवस्तु के चयन के समय इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी साबित हो सके।

3.वैधता

किसी भी विषयवस्तु के चयन के समय उसका वैध होना बहुत आवश्यक है क्योंकि वर्तमान समय की मांग के अनुरुप अद्यतन प्रकरणों का समावेश करना चाहिए। अन्यथा जो प्रकरण वर्तमान में उपयोगी नहीं रह गए हैं तो अब विषयवस्तु का भाग बने रहने के लिए वैध नहीं होगें। इसीलिए निरन्तर पाठ्यक्रम की विषयवस्तु की जांच करते रहना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर पुराने अनुपयोगी प्रकरणों को हटाया जा सकता है। क्योंकि कोई भी विषयवस्तु का वर्तमान और भविष्य के सन्दर्भ में प्रासंगिक होना बहुत आवश्यक होता है। अन्यथा उसका अध्ययन करना और कराना व्यर्थ होगा।

4.रुचि

पाठ्यक्रम में चयनित विषयवस्तु का अधिगमकर्ताओं की रुचि के अनुसार होना बहुत आवश्यक होता है। क्योंकि यह मानदण्ड बालकेन्द्रित शिक्षा का बहुत उपयोगी मानक है। विद्यार्थी किसी भी प्रकरण को तभी सबसे अच्छे ढ़ंग से सीखते हैं जब वह उनके लिए रुचिकर और उपयोगी

हो। इसीलिए पाठ्यक्रम का बालकेन्द्रित होना आवश्यक हो जाता है। लेकिन अगर पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित होगा तो शिक्षक के पास भी केवल निर्धारित पाठ्यक्रम को पूरा कराने कार्य रह जाता है तथा विद्यार्थी भी उसमें रुचि नहीं लेते हैं।

5. उपयोगिता

विषयवस्तु के चयन का एक और मानदण्ड है इसका अधिगमकर्ता के भावी व्यावसायिक**,** सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन के सभी पक्षों के अनुसार उपयोगी हो। अर्थात विद्यार्थी जब किसी विषयवस्तु को अपने जीवन के लिए उपयोगी नहीं मानते हैं तो वे उसका अध्ययन करना ही छोड़ देते हैं और शिक्षक के लिए भी ऐसे प्रकरणों में रुचि विकसित करना कठिन हो जाता है। इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों को समय व्यर्थ में नष्ट होता है। विद्यार्थी केवल उसी विषयवस्तु को अध्ययन करते हैं जो उन्हें उपयोगी लगती है।

6.अधिगम योग्य

किसी भी विषयवस्तु के चयन का मानदण्ड यह भी है कि वह विद्यार्थियों अधिगम शक्तियों और अनुभवों के अनुरुप होनी चाहिए। अगर विषयवस्तु का कठिनाई का स्तर विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास के अनुरुप नहीं होगा तो विद्यार्थी उसमें रुचि नहीं लेगें। शिक्षकों को इसीलिए मनोवैज्ञानिक अधिगम सिद्धान्तों का बोध करके यह समझने का प्रयास करना हो कि किस प्रकार सम्बन्धित विषयवस्तु को अधिगम योग्य बनाया जा सके।

व्यवहार्यता

विषयवस्तु के चयन का बहुत महत्वपूर्ण मानक है इसका व्यवहारिक होना। अर्थात जो भी विषयवस्तु चयन किया गया है वो पूर्ण रुप से लागू हो सके। इसके चयन में विद्यालयों की वास्तविक स्थितियों**,** सरकार और समाज से सम्बन्धित परिस्थितियों का ध्यान में रखना चाहिए। अर्थात विद्यार्थियों को आवंटित समय में और संसाधनों के अनुसार सिखाने का प्रयास करना होगा। उन्हें ऐसा प्रकरण न दिया जाए जो उनके द्वारा निर्धारित समय और उपलब्ध संसाधानों में पूरा करना सम्भव न हो।

4.7 पाठ्यक्रम संगठन की उपागम

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु और अधिगम अनुभवों का चयन करने के उपरान्त उन्हें विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शक्तियों के विकास और रुचियों के अनुरुप संगठित किया जाता है। पाठ्क्रम का संगठन ऐसा होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अधिगम में सरलता और सुगमता हो। सामाजिक विज्ञान किर अध्ययन सामग्री के तीन पक्ष होते हैं- (1) ज्ञान पक्ष (2) क्रिया पक्ष और (3) भाव पक्ष। पाठ्यवस्तु को

संगठित करते समय विद्यार्थियों की रुचियों को महत्व दिया जाना चाहिए। सर्वप्रथम बालक की शरीरिक, बौद्धिक, रुचियों और सामाजिक आवश्यकताओं को समढना आवश्यक होता है ताकि उनकी रुचि के अनुरुप पाठ्यक्रम का संगठन किया जा सके। इसी को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम के संगठन की विभिन्न उपागमों के बारे में चर्चा की गई है-

एकीकृत पाठ्यक्रम उपागम

एकीकृत पाठ्यक्रम कोई नई उपागम नहीं है। यह 1800 से अस्तित्व में है और ख्याति प्राप्त मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों जैसे जॉन डयूवी और एम. स्मिथ इसके पक्षधर रहे हैं। लेकिन वर्तमान में शिक्षाविदों द्वारा इस उपागम पर ध्यान केन्द्रित करने से यह उपागम प्रचलन में आयी। अधिकांश मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविद इस उपागम में माध्यम शिक्षण को बेहतर मानते हैं। पाठ्यक्रम की इस उपागम में विभिन्न विषयों की विषयवस्तु के मध्य किसी प्रकार की कोई सीमा नहीं रखी जाती है। यह उपागम ज्ञान की विशेषज्ञता पर जोर न देते हुए विभिन्न विषयों को एक स्तर विशेष पर जीवन से जोड़ देती है एकीकृत पाठ्यचर्या कहलाती है। इसमें विषयों एवं क्रियाओं को आपस में जोड़ दिया जाता है तथा शिक्षा के एक स्तर को दूसरे स्तर से इस प्रकार से जोड़ दिया जाता है ताकि उच्च स्तरों पर सुदृढ़ ज्ञान ढाँचे का विकास होता है।

बीसवीं सदी में मनोविज्ञान के क्षेत्र में बहुत से सफल प्रयोग हुए और कई सिद्धान्तों का विकास हुआ। इसी समय में गेसाल्टवाद अर्थात पूर्णाकारवाद भी अस्तित्व में आया। इन मनोवैज्ञानिक खोजों ने शिक्षा को बहुत अधिक प्रभावित किया। गेसाल्टवाद के अनुसार ही अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यक्रम का विकास हुआ तथा यह पाठ्यक्रम एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। इसका तात्पर्या है कि किसी भी क्रिया को प्रभावशील एवं उपयोगी तभी माना जा सकता है जब उसके विभिन्न भागों में एकता हो। ऐसा पाठ्यक्रम जिसमें उसके विभिन्न विषय इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि उनके मध्य कोई एकीकृत पाठ्यक्रम का अवरोध न होकर उनके एकता होती है, उसे एकीकृत पाठ्यक्रम कहते हैं। ऐसे पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों की ज्ञान वस्तु को अलग अलग भागों में प्रस्तुत न करते हैं बल्कि सभी विषय एक साथ मिलकर ज्ञान को एक इकाई के रुप में प्रस्तुत करते हैं। यह दायित्व शिक्षकों पर आ जाता है कि वे पाठ्यक्रम के सभी विषयों को आपस में सम्बन्धित करें, पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी जीवन से सम्बन्ध स्थापित करे और साथ ही अन्य विषय से भी सहसम्बन्ध स्थापित करके ज्ञान प्रदान करें|

एकीकृत पाठ्यक्रम की विषेषताएं

1. एकीकृत पाठ्यक्रम ज्ञान को समग्र इकाई के रुप में प्रस्तुत करता है।

2. यह पाठ्यक्रम अनुभव आधारित होता है तथा विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान और नवीन ज्ञान को सम्बन्धित करने में आसानी होती है।

3. एकीकृत पाठ्क्रम विद्यार्थियों की रुचियों को प्रमुखतः से स्थान देता है।

4. लेकिन इस पाठग्रकम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षक को विस्तृत ज्ञान होना चाहिए।

5. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा प्रदान करता है।

6. इससे विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान एक साथ अर्जित करते हैं।

एकीकृत पाठ्यक्रम की कठिनाइयां

1. इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम का एकीकरण बहुत मुश्किल होता है तथा उनकी विशिष्ट रुचियों के विकास के लिए भी दिशा प्रदान करना कठिन हो जाता है।

2. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विषयों का एकीकरण समुचित नहीं होता है।

3. इसमें बहुत ही परिपक्व, अनुभवी तथा शिक्षण कौशल में निपुण शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

4. सभी विषयों का एक साथ एकीकरण करना भी असम्भव प्रतीत होता है, क्योंकि इस पाठ्यक्रम में शिक्षण में बहुत अधिक समय लगता है।

वर्तमान में भारतीय विद्यालयों में परम्परागत पाठ्यक्रम को ही लागू किया गया है। अभी भी भारत के विद्यालयों में अधिकांशतः एक विषय को किसी अन्य विषय से सहसम्बन्धित करके नहीं पढाया जाता है। जैसे विज्ञान का शिक्षक केवल उपने विज्ञान विषय का शिक्षण करता है वह अन्य विषयों जैसे हिन्दी या सामाजिक विज्ञान का या किसी अन्य विषय का ध्यान नहीं रखता है। इससे विद्यार्थी अध्ययन की विभिन्न शाखाओं में कोई सहसम्बन्ध स्थापित नहीं कर पा रहे हैं।

समन्वित सामान्य पाठ्यक्रम उपागम

यह पाठ्यक्रम अमेरिका की देन है। समन्वित सामान्य पाठ्यक्रम (Core Curriculum) ऐसे पाठ्यक्रम को कहते हैं जिसमें कुछ विषय तो सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होते हैं जबकि कुछ ऐसे विषय निर्धारित किए जाते हैं जिनका विद्यार्थी अपनी रुचियों के अनुसार अध्ययन करने के लिए चयन कर सकते हैं। इस प्रकार के पाठ्क्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को व्यक्तिगत उनके सामाजिक जीवन से जुड़े अनुभव प्रदान किए जाते है ताकि वे भविष्य और वर्तमान जीवन में उपयोगी नागरिक की भूमिका निभा सकें और विभिन्न सामाजिक चुनौतियों का सामना करके उनका समाधान कर सकें। कोर क्रीकुलम में प्रमुख रुप से विज्ञान, कला, संगीत, स्वास्थय शिक्षा, सामाजिक विषय, गणित और भाषा जैसे विषयों को शामिल किया जाता है।

विशेषताएं-

1. यह पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक और बालकेन्द्रित हेाता है तथा इसमें व्यापक निर्देशन की व्यवस्था होती है।

2. यह विद्यार्थियों की सामान्य आवश्कताओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त होता है।

3. इसमें विभिन्न शैक्षिक गतिविधियां विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर सम्पन्न करते हैं।

4. यह अपेक्षाकृत लचीला होता है तथा इसमें शिक्षण समस्या क्रेन्द्रित होता है।

सीमाएं-

1. यह पाठ्यक्रम प्राथमिक और निम्न माध्यमिक स्तर तक के लिए ही उपयोगी होता है क्योंकि उच्च कक्षाओं में पाठ्यवस्तु स्तर और ज्ञान की मात्रा बढ़ जाती है।

2. दो या दो से अधिक विषयों की पाठयवस्तु के मिश्रण से शिक्षक पर शिक्षण कार्य को पूरा करने की आवश्यकताओं का भार बढ़ जाता है।

समकेन्द्रित पाठ्यक्रम उपागम

पाठ्यक्रम की यह उपागम अपने नाम से आसानी से समझी जा सकती है जिसका अर्थ होता हैं जैसेकि कुछ वृत्तों का केन्द्र बिन्दु समान हो। अर्थात इससे यह अर्थ लगाया जा सकता हैं कि पाठ्यक्रम संगठन में इस उपागम के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में प्रारम्भ से ही लगभग सभी प्रकरणों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है लेकिन निरन्तर आगे के वर्षों में विषयवस्तु का प्रसार उसी प्रकार बढता जाता है जैसे विद्यार्थियों की कक्षा का स्तर। शिक्षा के शुरुआती वर्षों में इस प्रकार के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के सभी प्रकरणों से सम्बन्धित सरल, सुगम गतिविधियां विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखकर तय की जाती है। इस उपागम में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम कुछ वर्षों तक के लिए निर्धारित हेाता है। लेकिन जैसे ही जैसे ही शिक्षा का क्रम आगे बढ़ता जाता है इसमें विद्यार्थियों की आवश्यकता और मानसिक विकास के अनुरुप और अधिक जानकारी और सूचनाओं या विषयवस्तु को शामिल कर लिया जाता है। परन्तु इसमें शिक्षण सूत्रों का अनुपालन किया जाता है। इस उपागम के निम्न लाभ हैं-

1. इस उपागम में पाठ्यक्रम सरल से कठिन की ओर और पूर्ण से अंश की ओर आदि शिक्षण सूत्रों के अनुरुप अग्रसर होता है।

2. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मानसिक विकास को महत्व दिया जाता है।

3. इसमें सरलता और सुगमता का पूरा ध्यान रखा जाता है ताकि विद्यार्थी रुचिकर ढ़ंग से अधिगम कर सकें।

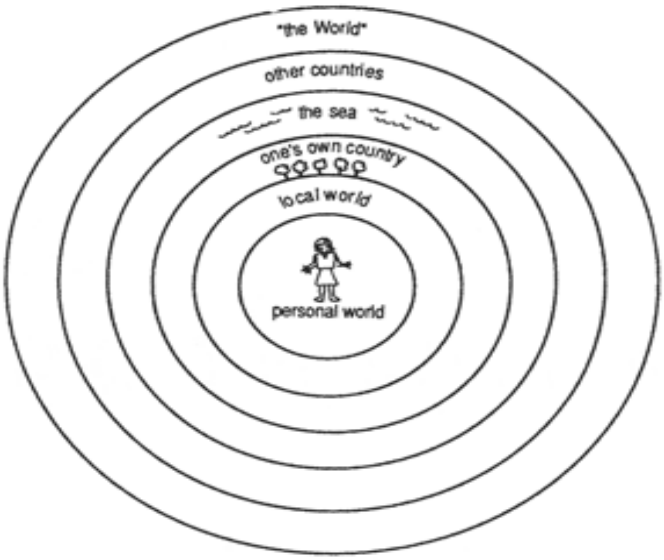

4. **अन्तर-अनुषासनिक पाठ्यक्रम उपागम-**

इस उपागम द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम को इस प्रकार संगठित किया जाता हैं कि दो शैक्षिक अनुशासनों की विषयवस्तु या विभिन्न पक्षें को एक ही अनुशासन की अध्ययन सामग्री के रुप में अर्थपूर्ण तरीके से शामिल कर लिया जाता है। इस पाठ्यक्रम का क्षेत्र काफी विस्तृत होता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को केवल सुनियोजित अधिगम अनुभव ही प्रदान नहीं किए जाते हैं, बल्कि इसके द्वारा विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन परिस्थितियों में विभिन्न सम्बन्धों को समझने की शक्ति का विकास करना और उसके आधार पर नए प्रारुप या प्रतिमानों के सृजन के लिए प्रेरित करना होता है। इस पाठ्यक्रम में एक से अधिक शैक्षिक अनुशासन की अध्ययन विधि और भाषा का उपयोग सम्बन्धित शैक्षिक अनुशासनों के किसी मुद्दे, समस्या, प्रकरण या अनुभव की जांच परख करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए अन्तर-अनुशासनिक विज्ञान पाठ्यक्रम में हम विज्ञान को एक शैक्षिक अनुशासन की तरह मानते हैं जोकि वास्तव में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान का समूह है।

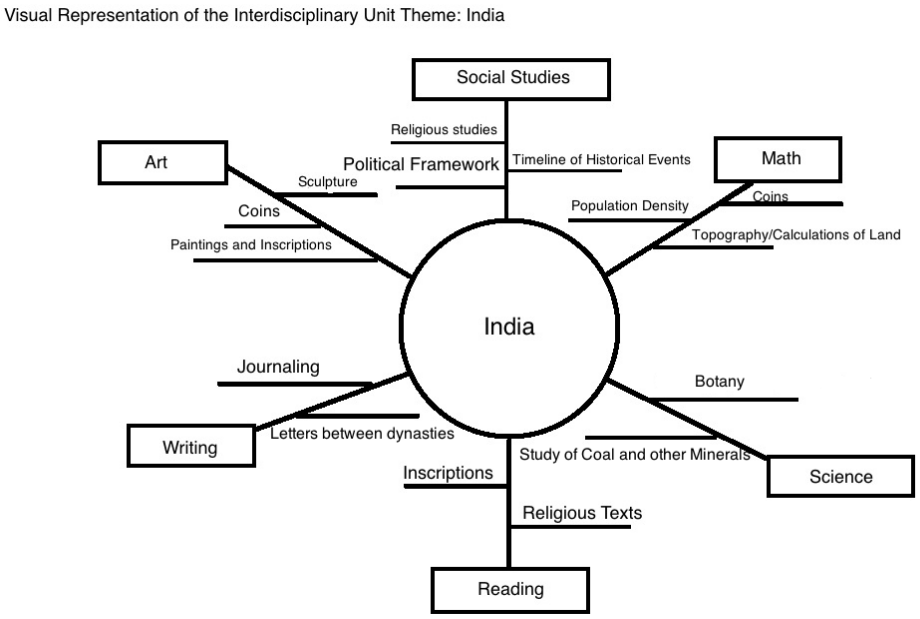

5.**चक्रीय पाठ्यक्रम उपागम-**

जे. ब्रूनर ने 1960 में सबसे पहली बार Spiral Curriculum का प्रयोग किया था। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को पहले से पढ़े हुए प्रकरणों, विषयों या विचारों या मुद्दों को दुबारा फिर अध्ययन करने और समझने का अवसर प्राप्त होता है। अर्थात अधिगमकर्ता अपने पूर्व ज्ञान को एक बार फिर से दोहराने की स्थिति में आता है और फिर उससे गुजरता हुआ आगे बढ़ता जाता है। इसी क्रम की इस प्रकार के पाठ्यक्रम में पुनरावृत्ति होती है। लेकिन इसमें केवल प्रकरणें की पुनरावृत्ति ही नहीं होती है बल्कि विद्यार्थी प्रत्येक पुराने ज्ञान बिन्दु या पूर्व अधिगमित विषयवस्तु को गहराई से समझने के दिशा में भी अग्रसर होता है और दुबारा इसी बिन्दु से गुजरकर आगे बढ़ता जाता है।

विशेषताएं

1. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थी पूर्व में पढ़े प्रकरणों की पुनरावृत्ति करके आगे बढ़ता है।

2. इस पाठ्यक्रम में उत्तरोत्तर क्रम में विषयवस्तु को कठिनाई स्तर बढ़ता जाता है।

3. नया अधिगम, पूर्व अधिगम प्रकरणों से सम्बन्धित होता है।

4. प्रकरणों की पुनरावृत्ति के विद्यार्थियों की दक्षता बढ़ती है।

5. सीखा गया प्रकरण या विषय विद्यार्थी द्वारा आगे बढ़ने के लिए पुनर्बलित करता है।

6. सरल से जटिल की ओर शिक्षण सूत्र के साथ विद्यार्थी को विषयवस्तु को समझने में सुविधा होती है।

7. इससे विद्यार्थियों में तार्किक क्रमबद्धता की समझ बढ़ती है।

8. इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी उच्च स्तर के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आसानी से प्रेरित होते हैं।

9. इस पाठ्यक्रम में लचीलापन भी है विद्यार्थी एक चक्र पूरा करके आगे बढ़ने की आजादी होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. विषयवस्तु के चयन के मानदण्डों का वर्णन कीजिए।

2. पाठ्यक्रम संगठन की एकीकृत उपागम को समझाइए।

3. चक्रीय उपागम द्वारा निर्धारित पाठयक्रम विद्यार्थियों के लिए अधिक लचीला होता है, स्पष्ट कीजिए।

4.8 अनुदेशन का नियोजन

शिक्षण एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें शैक्षिक उद्देश्यों और गतिविधियों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त तैयारी की आवश्यकता होती है। साथ ही दीर्घकालिक अनुदेशनात्मक नियोजन से पाठ्यक्रम को समय सीमा के अन्दर पूर्ण होने की सम्भावना रहती है। शिक्षण सामग्री की तैयारी और नियोजन के अतिरिक्त शिक्षक को अपने अनुदेशन का प्रभावशाली संगठन विद्यार्थियों को अच्छे अधिगम के लिए प्रेरित करता है क्योंकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया किसी भी कक्षा की सबसे केन्द्रित गतिविधि है। बहुत से शिक्षक विद्यार्थियों से बहुत उच्च अधिगम अपेक्षाएं रखते हैं इसलिए वे विद्यार्थियों के अधिगम को गति देने के लिए विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का चयन करते हैं।

विद्यार्थियों के समुचित विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम में विभिन्न कौशलों, क्रियाओं, ज्ञान और अभिवृत्तियों का वर्णन होता है और उनसे यह अपेक्षा होती है कि वे विद्यालय में उन कौशलों, गतिविधियों, अभिवृत्तियों को सीखें और अपने व्यक्तित्व में उनका समावेश करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम में अधिगम अपेक्षाओं या अधिगम परिणामों के साथ साथ विधियों और सामग्रियों का वर्णन होता है जिनका उपयोग विद्यार्थियों को उपरोक्त अपेक्षाओं को प्राप्त में करने में किया जायगा। विद्यार्थियों के व्यवहार को परिमार्जित करने और परिवर्तित करने के लिए जो विधियां और प्रक्रियाएं प्रयोग की जाती हैं उन्हें अनुदेशन कहते हैं। व्याख्यान, परिचर्चा, कार्यशालाएं, सहयोग आधारित प्रोजेक्ट और गृहकार्य आदि कुछ अनुदेशन प्रविधियां है। जिनका उपयोग विद्यार्थी सीखने के लिए करते हैं।

4.9 अनुदेशन प्रक्रिया

अनुदेशन प्रक्रिया के उद्देश्य

अनुदेशन प्रक्रिया में मुख्य रुप से शिक्षक और संलग्न रहते हैं। अनुदेशनात्मक प्रक्रिया का का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित व्यवहार लाना होता है। व्यवहार परिवर्तन के प्रमुख तीन पक्ष हैं- ज्ञानात्मक, भावात्मक और कौशलात्मक या मनो-पेशीय। अनुदेशानात्मक प्रक्रिया में इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य- ज्ञानात्मक उद्देश्यों को निम्न प्रकार का शिक्षण करके प्राप्त किया जाता है- (अ) प्रत्ययों का शिक्षण (ब) सिवन्तों को शिक्षण (स) समस्या समाधान का शिक्षण (द) सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिए शिक्षण।

2. भावात्मक उद्देश्य- इन उद्देश्यों को प्राप्त करके विद्यार्थियों में रुचियों, मूल्यों, अभिवृत्तियों का धीरे धीरे विकास करके किया जात है।

3. कौशलात्मक उद्देश्य- इन उद्देश्यों का सम्बन्ध विद्यार्थियों को दिए जाने वाले क्रियात्मक प्रशिक्षणों तथा कौशलों के विकास से होता है। इसमें अन्तर्गत दो प्रकार के कौषलों का विकास किया जाता है- **(1)** शारीरिक कौशलों का विकास **(2)** रचनात्मक कौशलों का विकास।

प्रभावपूर्ण अनुदेशन प्रक्रिया के लिए शिक्षण और अधिगम दोनों को ही महत्व दिया जाता है। अनुदेशन प्रक्रिया में प्रमुख तीन चरण होते हैं- प्रथम चरण अनुदेशन का नियोजन है जिसमें विशिष्ट उद्देश्यों/अपेक्षाओं या अधिगम परिणामों तथा इन अधिगम परिणामों को या अपेक्षाओं को पूरा करने में सहयोगी सामग्री की पहचान करना शामिल होता है। इसके अतिरिक्त इस चरण में अधिगम अनुभवों को तार्किक, मनोवैज्ञानिक और पुनर्बलित करने वाले क्रम में संगठित करना भी शामिल होता है। अनुदेशन प्रक्रिया के दूसरे चरण में नियोजित अनुदेशन को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना शामिल है। अनुदेशन प्रक्रिया के तीसरे चरण में विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का या निर्धारित अपेक्षाओं की प्राप्ति या अपेक्षित अधिगम परिणामों की प्राप्ति का आकलन करना होता है। प्रमुख रुप से अनुदेशन प्रक्रिया के यही तीन चरण हैं। लेकिन अनुदेशन प्रक्रिया को व्यावहारिक रुप में लागू करते समय यह ध्ययन अवश्य रखना चाहिए कि यह तीनों चरण ही एक दूसरे के साथ सहसम्बन्धित होने चाहिए। अर्थात नियोजित अनुदेशन कक्षा में घटित होने वाले वास्तविक अनुदेशन से तार्किक रुप से सम्बन्धित होना चाहिएतथा आकलन भी योजना और अनुदेशन से सम्बन्धित होना चाहिए। शिक्षण के वास्तविक पुरस्कार की पहचान विद्यार्थियों पर अनुदेशन के पड़ने वाले प्रभाव से की जा सकती है और यह केवल शिक्षक के ज्ञान और शिक्षण दक्षताओं पर निर्भर करता है।

इसके अतिरिक्त रॉबर्ट ग्लेसर **(1962)** ने अनुदेशनात्मक प्रकिया को समझानें के लिए बुनियादी शिक्षण प्रतिमान को प्रतिपादन किया। जिसके चरण निम्न प्रकार हैं-

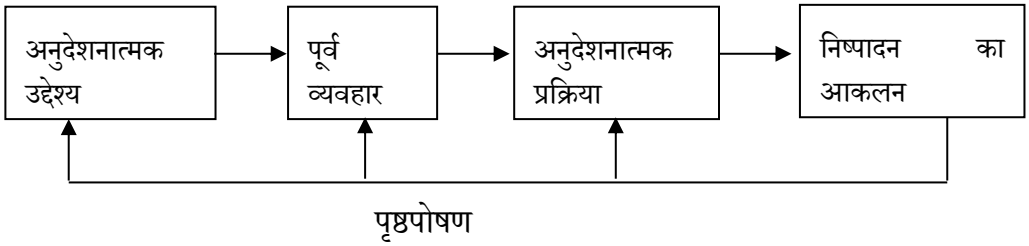

चित्र: **1** ग्लेसर बुनियादी शिक्षण प्रतिमान

ग्लेसर के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया के प्रतिमान को चार प्रमुख तत्वों में विभाजित किया गया है-

1. अनुदेशानात्मक उद्देश्य

2. पूर्व-व्यवहार

3. अनुदेशनात्मक प्रक्रिया

4. निष्पादन का आकलन

रॉबर्ट ग्लेसर के शिक्षण प्रतिमान में तीसरा घटक अनुदेशानात्मक प्रक्रिया का है। यह चरण या घटक शिक्षण प्रक्रिया की पाठ्यवस्तु की रुपरेखा और इसके विभिन्न तत्वों के प्रस्तुतीकरण का वर्णन करता हैं।

अनुदेशन के नियोजन से शिक्षकों को निम्न प्रकार सहायता मिलती है-

1. नियोजन के उपरान्त शिक्षक अनुदेशन प्रक्रिया के बारे में निश्चिन्त होकर यह विचार कर सकते हैं कि विद्यार्थियों के लिए बेहतर ढ़ंग से कैसे प्रयास किए जा सकते हैं।

2. निश्चित उद्देश्यों और अध्ययन सामग्री पर ध्यान केन्द्रित रहता है।

3. वास्तविक शिक्षण प्रारम्भ होने से पहले शिक्षक अपने नियोजित अनुदेशन योजना की समीक्षा कर सकते हैं और प्रकरण के बारे में और ठीक से परिचित हो सकते हैं।

4. शिक्षकों को यह निश्चित करने में आसनी रहती हैं कि वास्तविक अनुदेशन प्रारम्भ करने के लिए कुछ गतिविधियां पूर्ण करनी हैं तथा कुछ निर्धारित ढ़ांचा है जिसका अनुसरण करना है।

5. दिन प्रतिदिन की पाठ योजनाओं को इकाईयों और पाठ्यचर्या के प्रकरणों को विस्तृत एकीकृत लक्ष्यों के साथ जोड़ने में सहायता मिलती है।

4.10 अनुदेशन के समय ध्यान रखने योग्य बातें

1. सुनियोजित अनुदेशन में अपेक्षित विशिष्ट अपेक्षाओं/उद्देश्यों के अनुरुप विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों का उपयोग करना
2. विद्यार्थियों की रुचियों, कमजोरियों और शक्तियों को ध्यान में रखना
3. समुचित अधिगम परिणामों की कल्पना अर्थात विद्यार्थियों की उपलब्धि और रुचि के अनुसार
4. समय प्रबन्धन करना
5. अनुदेशन से पहले ही जरुरी सहायक सामग्री एवं उपकरणों की तैयारी एवं विद्यार्थियों के लिए इसकी उपयुक्तता
6. व्यक्तिगत और टोली के प्रयासों की उपयोगिता
7. नियोजित अनुदेशन का अनुदेशन प्रक्रिया के दौरान अनुसरण करना

4.11 अनुदेषन के नियोजन की आवष्यकता एवं महत्व

अनुदेशन के नियोजन में हमेशा केवल पाठ्यचर्या से सम्बन्धित प्रकरणों को ही ध्यान में नहीं रखते हैं बल्कि अधिगमकर्ताओं की आवश्यकताओं और योग्यताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताएं एवं योग्यताएं, निर्धारित विशिष्ट अपेक्षाएं/उद्देश्य, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुदेशन का नियोजन आवश्यक होता है। इसके साथ ही नियोजित अनुदेशन से विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन किया जा सकता है तथा एक निर्धारित समय सीमा में पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। पाठ्यचर्या के प्रकरणों को सरलता, सुगमता से बोधगम्य बनाने के लिए और विद्यार्थियों की शक्तियों के विकास के लिए अनुदेशन का नियोजन जरुरी होता है।

अनुदेशन के नियोजन से शिक्षक के लिए एक निर्धारित ढ़ांचा मिल जाता है जिससे वह उसी के अनुरुप अनुदेशन करता है तथा निर्धारित विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक सामग्री की पहचान करने में भी बहुत उपयोगी है। इसके साथ ही नियोजन शिक्षक के लिए मुख्य विषय से भटकने से बचाता है। उद्देश्यों के निर्धारण से शिक्षक उन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहता है। इससे शिक्षक को सभी शिक्षण गतिविधियों को क्रमबद्ध करने, संगठित करने में सहायता मिलती है। शिक्षक अनुदेशन की सहायता से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाता है। अनुदेशन गतिविधियों में सहसम्बन्धित करने में सहायता करता है तथा सुसंगठित अधिगम अनुभवों को प्रदान करता है। नियोजन से आर्थिक दृष्टि से, समय और ऊर्जा की बचत होती है।

अभ्यास प्रश्न

1. अनुदेशन का नियोजन क्यों आवश्यक होता है**?**
2. अनुदेशन प्रक्रिया के चरणों को ग्लेसर बुनियादी शिक्षण प्रतिमान के अनुसार समझाइए।

इकाई-5पाठ योजना

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 इकाई योजना की अवधारणा
5.4 इकाई योजना के चरण
5.5 इकाई योजना की विषेषताएं
5.6 इकाई योजना की आवश्यकता और महत्व
5.7 इकाई योजना का क्रियात्मक प्रारुप
5.8 पाठ योजना
5.9 पाठ योजना के विभिन्न प्रारुप
5.10 पाठ योजना की आवष्यकता और महत्व
5.11 सारांश

5.1 प्रस्तावना

इकाई योजना पूरे साल भर के शिक्षण उद्देश्यों और पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने की गति को निर्धारित करने में सहायता करता है। जो शिक्षक अपनी इकाई योजना को पहले ही बना लेते हैं उन्हें अपनी कक्षा में कई बार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ समझौता नही करना पड़ता है| प्रस्तुत इकाई में आप इकाई योजना बनाना, इनके उद्देश्य, इकाई योजना के विभिन्न चरणों, इनकी विशेषताओं और क्रियात्मक रूप को पढेंगे|

5.2उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. इकाई योजना कैसे बनायीं जाती है, जान पाएंगे|

2. इकाई योजना के विभिन्न चरणों से परिचित हो जायेंगे|
3. इकाई योजना के क्रियात्मक रूप को समझ जायेंगे|
4. इकाई योजना की आवश्यकता एवं महत्व को समझ जायेंगे|

5.3 इकाई योजना की अवधारणा

इकाई योजना प्रतिचित्रण प्रक्रिया है जोकि शिक्षक की दीर्घकालीन योजना के साथ प्रारम्भ होती है। इस दीर्घकालिक योजना से पूरे साल भर के शिक्षण उद्देश्यों और पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने की गति को निर्धारित करने में सहायता करता है। इकाई योजना भी पाठ योजना की तरह ही साल भर की दीर्घकालिक पाठ योजना कही जा सकती है। इकाई योजना शिक्षण यात्रा में समानान्तर रुप से सहायक होती है। शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ में इकाई योजना बनाना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य होता है। बहुत से शिक्षक इकाई योजना या तो बनाते नहीं हैं और यदि बनाते भी हैं तो पहले वाली इकाई के पूरी होने का होती है। इससे उनकी शैक्षिक गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे अपनी कक्षा में कई बार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ समझौता करते हैं। जबकि जो शिक्षक अपनी इकाई योजना को पहले ही बना लेते हैं उन्हें उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ता है। बल्कि वे जैसे जैसे सत्र आगे बढ़ता है वैसे वैसे अपनी इकाई योजना में आवश्यकतानुसार सुधार करते हैं और बेहतर शिक्षण सत्र के लिए आशावान रहते हैं।

इकाई योजना में निर्धारित किए गए उद्देश्य शिक्षक के लिए एक सटीक दिशा देने को कार्य करने को प्रेरित करते हैं कि निर्धारित समय में क्या करना है ?

5.4 इकाई योजना के चरण

पहला- सर्वप्रथम विद्यार्थियों की आवश्यकताएं और रुचियां समझने के लिए उनके साथ परिचर्चा करना चाहिए ताकि उनकी इन/रुचियों और आवश्यताओं को भी इकाई योजना में स्थान दिया जा सके।

दूसरा- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और रुचियों को जानने के लिए अगर कोई मानक आकलन परीक्षण का उपयोग हो तो इकाई योजना निर्माण के लिए शिक्षक के पास वैज्ञानिक आधार हो जाता है।

तीसरा- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और रुचियों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में उपलब्ध या उपलब्ध हो सकने वाले संसाधनों की समीक्षा करना चाहिए।

चौथा- इसके उपरान्त साल भर के कार्य दिवसों को सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु में दिए गए प्रकरणों के अनुरुप प्रत्येक समय का वितरण करने के पश्चात इकाईयों के लक्ष्यों के अनुरुप इकाई योजना का विकास करना चाहिए।

पांचवा - प्रत्येक इकाई के लिए व्यावहारिक शब्दावली में समुचित उद्देश्यों को लिखना चाहिए कि शिक्षक क्या करेगा और इकाई के लिए किस प्रकार के भौतिक और मानवीय संसाधनों की आवश्यकता होगी?

छठा- इकाई योजना में विद्यार्थियों की उपलब्धि की प्रगति का मूल्यांकन का भी नियोजन करना चाहिए। अर्थात मूल्यांकन के उपकरण क्या होंगे?

5.5 इकाई योजना की विशेषताएं

1. इकाई योजना दीर्घकालिक शिक्षण उद्देश्यों के साथ शिक्षण सम्बन्धी गतिविधिओं के क्रियान्वयन की रुपरेखा स्पष्ट होती है।

2. इकाई योजना से शैक्षिक गतिविधियों के प्रारम्भ होने और समाप्त होने का ज्ञान रहता है।

3. इकाई योजना उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निर्मित की जाती है। इससे शिक्षक अपनी शिक्षण गतिविधयों को नियोजित कर सकता है।

4. इकाई योजना को अधिक से अधिक व्यावहारिक रखना चाहिए।

5. इकाई योजना विद्यार्थियों की उपलब्धि की प्रगति का मूल्यांकन करने का आधार प्रस्तुत करती है।

6. इकाई योजना में लगने वाले समय, धन और मानव प्रयासों को ध्यान में रखकर बनानी चाहिए।

5.6 इकाई योजना की आवश्यकता और महत्व

इकाई योजना किसी शिक्षक की साल भर की शिक्षण गतिविधियों या प्रतिचित्रण की वृहद रुपरेखा होती है। इर्का योजना से शिक्षक को शिक्षण गतिविधियों की दिशा और उनके संगठन का आभास रहता है। इससे कक्षा के विद्यार्थियों को निर्धारित समय में महत्वपूर्ण शैक्षिक उपलब्धियों की प्राप्ति में सुगमता होती है। इसके अतिरिक्त इकाई योजना निम्न प्रकार उपयोगी होती है-

1. क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है? इससे सम्बन्धित निर्णय लेने में शिक्षक की सहायता करती है।

2. इकाई योजना से शिक्षक द्वारा निर्धारित दीर्घकालिक उद्देश्यों तक पहुंचने के लिए शिक्षण गतिविधियों में गति बनाए रखती है।

3. इकाई योजना में विद्यार्थियों की रुचियों से सम्बन्धित विषयवस्तु को स्थान देकर उनकी रुचियों को उद्दीपित करने का अवसर मिलता है।

4. इकाई योजना से विभिन्न पाठ योजनाओं के लिए शिक्षण आव्यूह, प्रविधियों, शिक्षण गतिविधियों के लिए उपयोगी संसाधनों की पहचान करना आसान हो जाता है।

5. विभिन्न प्रकरणों के लिए यदि अतिरिक्त भौतिक या मानव संसाधनों की आवश्यकता होती है तो उसकी पहले से ही व्यवस्था करके रखने में सहायता मिलती है।

6. इकाई योजनाओं में विभाजित कार्य दिवसों के अनुरुप पाठ योजनाओं को लागू करना आसान हो जाता है।

7. निर्धारित समयावधि में विद्यार्थियों की उपलब्धि की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए पूर्व में ढ़ांचा बना होने से निश्चित अन्तराल से आकलन हो पाता है। इससे विद्यार्थी भी सचेत रहते हैं।

5.7 इकाई योजना का क्रियात्मक प्रारुप

इकाई क्रमांक	इकाई का नाम	प्रकरण	अनुदेशनात्मक उद्देश्य	शिक्षण अधिगम संसाधन	मूल्यांकन उपकरण / योजना	कालांशों का वितरण	कुल कार्य दिवसों की संख्या
योग विवरण							

अभ्यास प्रश्न

1.माध्यमिक स्तर के किसी विषय के पाठ्यक्रम की एक इकाई योजना बनाइए।

5.8 पाठ योजना

अध्यापक प्रशिक्षण में पाठ योजना निर्देशन का कार्य करती है और किसी एक कालांश कोई विषयवस्तु पढ़ाने के लिए शिक्षक एक विस्तृत योजना तैयार करता है। इसे पाठ योजना कहते है। पाठ योजना का प्रतिपादन गैस्टाल्ट मानेविज्ञान से हुआ है। अधिगम गैस्टाल्ट मनोविज्ञान का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। पाठ योजना शिक्षक के लिए प्रभावशाली ढ़ंग से विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण में सहायता करती है। इससे शिक्षक निश्चित समय में निर्धारित गतिविधियों को पूरा करके अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति करता है।

पाठ योजना का परिभाषित करते हुए बिनिंग एवं बिनिंग ने कहा हैं कि दैनिक पाठ योजना के निर्माण में उद्देष्यों को परिभाषित करना, पाठ्यवस्तु का चयन करना तथा उसे क्रमबद्ध रुप में व्यवस्थित करना और प्रस्तुतीकरण की विधियों तथा प्रक्रिया का निर्धारण करना है।

5.9 पाठ योजना के विभिन्न प्रारुप

पाठ योजना के निर्माण के लिए कई प्रकार के उपागम शिक्षाविदों के प्रयासों के फलस्वरुप अस्तित्व में आए है और उन सभी की अपनी उपयोगिता है। कुछ उपागमों का संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है, ताकि आपका इनसे परिचय हो सके-

1.**हरबार्ट उपागम -** फ्रेड्रिक हरबार्ट ने विषयवस्तु को सुगम और सरल रुप में प्रस्तुत करने के लिए पंच पदीय उपागम का प्रतिपादन किया। यह उपागम मनोविज्ञान के रुचि और सहचर्य के सिद्धान्तो पर आधारित है। इसमें पाठ्यवस्तु को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है तथा सीखने के स्थान पर सिखाने पर अधिक जोर दिया जाता है। हरबार्ट उपागम के पांच पद निम्नलिखित हैं -

(अ) उद्देश्य कथन

(ब) प्रस्तुतीकरण

(स) स्पष्टीकरण

(द) सामन्यीकरण

(य) प्रयोग

हरबार्ट उपागम के आधार पर ही शिक्षाविदों ने क्रियात्मक रुप में कुछ पाठ योजना के लिए संकेतों को विकसित किया है। जिनका उपयोग शिक्षक प्रशिक्षु अपने शिक्षण अभ्यास में करते हैं।

2. **मौरिसन उपागम -** हेनरी सी. मौरिसन ने 1926 में पाठ योजना निर्माण के लिए एक नई उपागम शिक्षा की दुनियां को दी। इसे इकाई प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। यह उपागम ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया में ज्ञान की एकता की महत्ता पर निर्भर है। क्योंकि हमारा ध्यान पूर्ण की ओर बहुत जल्दी आकर्षित होता है। इसके प्रयोग में विद्यार्थियों की रुचियों, का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह उपागम विद्यार्थी केन्द्रित है और इसके प्रमुख पद निम्न प्रकार हैं-

(अ) अन्वेषण

(ब) प्रस्तुतीकरण

(स) आत्मीकरण

(द) व्यवस्थापन

(य) अभिव्यक्तिकरण

3. **मूल्यांकन उपागम -** मूल्यांकन उपागम का प्रतिपादन बी.एस. ब्लूम ने किया था। वे शिक्षा को त्रिपदी प्रक्रिया मानते थे, जिन्हें मूल्यांकन आयाम के सोपान कहा जाता है-

1. शैक्षिक उद्देश्यों को निर्धारित करना

2. अधिगम के अनुभव प्रदान करना

3. व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना

4. **आर.सी.ई. मैसूर उपागम -** उद्देश्यों के निर्धारण में सामान्यतः ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण को ही अपनाया जाता है। ब्लूम के वर्गीकरण में ज्ञानात्मक पक्ष में छः वर्गों के स्थान पर आर.सी.ई. मैसूर उपागम में केवल चार वर्गों को प्रयोग किया जाता है। ब्लूम के ज्ञानात्मक पक्ष के अन्तिम तीन वर्ग विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन को मिलाकर आर.सी.ई. मैसूर वाले उपागम में सृजनात्म उद्देश्य वाले वर्ग में शामिल कर दिया गया है। इन चार उद्देश्यों के माध्यम से 17 मानसिक क्षमताओं का विकास किया जाता है।

इस उपागम की पाठ योजना का प्रारुप शैक्षिक अनुदेशन की संरचना पर आधारित है। इसके प्रमुख तीन पक्ष है-

1. **अदा** - इसमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तनों को निर्धारित किया जाता है। ज्ञान, बोध, प्रयोग और सृजनात्मक उद्देश्यों के आधार पर 17 मानसिक योग्यताओं का विकास किया जाता है। इन मानसिक योग्यताओं के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखा जाता है।

2. **प्रक्रिया** - इस चरण में निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण गतिविधियों का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक उचित शिक्षण विधियों, युक्तियों और सहायक सामग्री का चयन करता है। जिससे समुचित अधिगम परिस्थितियां उत्पन्न की जाती हैं तथा अभिप्रेरणा का उपयोग करके शिक्षक विद्यार्थिरूों को क्रियाशील रखता है।

3.**प्रदा -** इसमें अन्तर्गत विद्यार्थियों में वास्तविक व्यवहार परिवर्तनों का मूल्यांकन करना होता है। इसके लिए शिक्षक कई मूल्यांकन प्रविधियां अपनाता है तथा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के बारे में जान लेता है।

इस उपागम के अनुसार बनने वाली पाठ योजना का प्रारुप निम्न प्रकार है —

आर.सी.ई. मैसूर उपागम पाठ योजना का सैद्धान्तिक आधार

<table>
<tr><td>अदा</td><td colspan="2">प्रक्रिया</td><td>प्रदा</td></tr>
<tr><td>अनुदेशन</td><td colspan="2">शिक्षण सम्प्रेषण विधि</td><td>मूल्यांकन</td></tr>
<tr><td rowspan="2">अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन</td><td colspan="2">अधिगम के अनुभव</td><td rowspan="2">वास्तविक व्यवहार परिवर्तन</td></tr>
<tr><td>शिक्षक क्रियाएं</td><td>विद्यार्थी क्रियाएं</td></tr>
<tr><td rowspan="2">1. ज्ञान उद्देश्य
2. बोध उद्देश्य</td><td></td><td></td><td rowspan="2"></td></tr>
<tr><td rowspan="2">3. प्रयोग उद्देश्य
4. सृजनात्मक उद्देश्य</td><td rowspan="2"></td><td rowspan="2"></td></tr>
</table>

आर.सी.ई. मैसूर उपागम पाठ योजना प्रारुप

विषय- इकाई- कक्षा एवं वर्ग-

उप विषय- कालांश-

प्रकरण- समयावधि-

सामान्य उद्देश्य-

विशिष्ट उद्देश्य-

पूर्व ज्ञान-

सहायक सामग्री-

शिक्षण बिन्दु-

प्रस्तावना-

अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन	अधिगम के अनुभव		वास्तविक व्यवहार परिवर्तन
	शिक्षक क्रियाएं	विद्यार्थी क्रियाएं	

निरीक्षण कार्य-

मूल्यांकन-

गृह कार्य-

5.10 पाठ योजना की आवाश्यकता और महत्व

पाठ योजना शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का बहुत ही महत्वपूर्ण घटक है तथा पाठ योजना शिक्षक के लिए मार्गदर्शक के रुप में दिशा प्रदान करती है। इसलिए पाठ योजना का महत्व नवीन शिक्षकों के लिए तो और भी बढ़ जाता है-

1. पाठ योजना शिक्षक को व्यवस्थित और संगठित रुप में क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है।

2. पाठ योजना से शिक्षक अपने पाठ के शिक्षण उद्देश्यों के प्रति सजग रहता है और निर्धारित दिशा से भटकने से बच जाता है तथा शिक्षण कार्य को निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता जाता है।

3. प्रभावशाली और सुसंगठित शिक्षण करने में शिक्षक के लिए अच्छी पाठ योजना आवश्यक होती है।

4. पाठ योजना अमूर्त वस्तुओं के शिक्षण में सुविधा प्रदान करती है तथा आवश्यक अनुदेशनात्मक सामग्री को स्पष्ट करती है।

5. पाठ योजना से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान निश्चितता और नियमितता बनी रहती है।

6. इससे सहायक शिक्षण अधिगम सामग्री के चयन में सहायता प्रदान करती है।

7. पाठ योजना शिक्षक को कक्षा में व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

8. पाठ योजना शिक्षक को स्व-मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती है।

9. यह विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान और उनके ज्ञान स्तर को ध्यान में रखने को प्रेरित करती है।

10. पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होती है।

11. विषयवस्तु के अनुसार शिक्षण विधियों एवं प्रविधियों के चुनाव में सहायता करती है।

2.11 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि शैक्षिक सत्र के प्रारम्भ में इकाई योजना बनाना बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य होता है। बहुत से शिक्षक इकाई योजना या तो बनाते नहीं हैं और यदि बनाते भी हैं तो पहले

वाली इकाई के पूरी होने का होती है। इससे उनकी शैक्षिक गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे अपनी कक्षा में कई बार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ समझौता करते हैं। जबकि जो शिक्षक अपनी इकाई योजना को पहले ही बना लेते हैं उन्हें उन्हें ऐसा नहीं करना पड़ता है। इकाई योजना किसी शिक्षक की साल भर की शिक्षण गतिविधियों या प्रतिचित्रण की वृहद रुपरेखा होती है। इकाई योजना से शिक्षक को शिक्षण गतिविधियों की दिशा और उनके संगठन का आभास रहता है।साथ ही आपने इकाई के अध्ययन के पश्चात जाना कि अध्यापक प्रशिक्षण में पाठ योजना निर्देशन का कार्य करती है और किसी एक कालांश कोई विषयवस्तु पढ़ाने के लिए शिक्षक एक विस्तृत योजना तैयार करता है। इसे पाठ योजना कहते है। पाठ योजना का प्रतिपादन गैस्टाल्ट मानेविज्ञान से हुआ है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठ योजना से आपका क्या तात्पर्य है? पाठ योजना के महत्व पर टिपण्णी लिखिए।

2. पाठ योजना शिक्षक को किस प्रकार सहायता करती है?

इकाई-6 पाठ और इकाई योजना में दिव्यांग बच्चों के लिए अनुकूलन

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 इकाई योजना में अनुकूलन
6.4 दिव्यांग बच्चों के लिए पाठ योजना में सामान्य अनुकूलन
6.5 विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजना में अनुकूलन के उपाय
6.5.1 श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन
6.5.2 अधिगम कठिनता वाले बच्चों के लिए आवश्यक अनुकूलन
6.5.3 दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन
6.6 अधिगम वातावरण में अनुकूलन
6.7 सारांश
6.8 शब्दावली
6.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न
6.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
6.11 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

समावेशी कक्षा में दिव्यांग बच्चों कठिनाइयों को ध्यान में रखकर उनकी आवश्यकतानुसार इकाई और पाठ योजनाएं बनाते समय कुछ अनुकूलन करने चाहिए जिससे उनकी अधिगम आवश्यकताओं को भी पूरा किया जा सके। चूंकि सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम को समावेशी कक्षा मे लागू करने से दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएं उनकी कठिनाइयों के कारण सामान्य बच्चों के अनुसार बनाए गई पाठ योजनाओं और इकाई योजनाओं से पूरी नहीं की जा सकती हैं। जबकि दिव्यांग बच्चे भी सामान्य बच्चों की तरह ही सीखने का अधिकार रखते हैं और प्रत्येक शिक्षक का यह प्रथम दायित्व बन जाता है कि ऐसे बच्चों की शैक्षिक आवश्यताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक परिवर्तन उसे अपनी पाठ योजना में करने चाहिए।

लेकिन कक्षा में विभिन्न कठिनाइयों वाले बच्चों की कक्षा में शिक्षक के लिए भी यह कार्य कठिन हो जाता है। क्योंकि प्रत्येक अक्षमता वाले बच्चे की शैक्षिक कठिनाई अलग होती है। इस स्थिति में शिक्षक को बहुत मुश्किल होती है कि पाठ योजना में किस प्रकार का अनुकूलन अपनाए कि उसकी कक्षा के सभी बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को सामान्य रुप से पूरा करने का प्रयास कर सके।

प्रशिक्षु शिक्षकों की सरलता की दृष्टि से उन्हें अपने पाठ योजना और इकाई योजना में क्या सम्भव अनुकूलन करने चाहिए, इसकी चर्चा अग्र प्रकार की गई है-

6.2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास आपको समावेशी कक्षा के अनुसार किस प्रकार इकाई और पाठ योजनाओं में अनुकूलन किया जाए और इससे आपके विद्यार्थी किस प्रकार लाभान्वित हो सकत हैं? इन बातों से परिचित कराना है। इसलिए हमने इकाई योजनाओं में अनुकूलन के साथ पाठ योजनाओं में अनुकूलन, विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजनाओं में अनुकूलन तथा अधिगम वातावरण से अनुकूलन किस प्रकार किया जा सकता है। हमने इस इकाई में विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर आपके लिए अनुकूलन के लिए सुझाव दिए है ताकि विषय से जुड़ी आपकी विभिन्न भ्रान्तियां दूर हो सकें।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

1. इकाई योजना में अनुकूलन को समझ सकेंगे।
2. दिव्यांग बच्चों के लिए पाठ योजना में सामान्य अनुकूलन को समझा सकेंगे ।
3. विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजना में अनुकूलन के उपायों का वर्णन कर सकेंगे।
4. श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन उपायों पर और विचार कर सकेंगे।
5. अधिगम कठिनता वाले बच्चों के लिए आवश्यक अनुकूलन को स्पष्ट कर सकेंगे ।
6. दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन आवश्यताओं का वर्णन कर सकेंगे।
1. 7.अधिगम वातावरण में अनुकूलन की व्याख्या कर सकेंगे ।

6.3 इकाई योजना में अनुकूलन

अधिगम में कठिनाई अनुभव करने वाले विभिन्न अक्षमताओं वाले दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षकों को इकाई योजना बनाते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि जो प्रकरण उन्हें भविष्य में पढ़ानें

हैं उनके लिए कक्षा के बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों के अनुसार निम्न प्रकार से अनुकूलन किए जा सकते हैं-

1. विशिष्ट उद्देश्यों को बहुत संक्षिप्त और सरल रुप में परिभाषित करें ताकि उन्हें प्राप्त करना कक्षा के बच्चों की आवश्यकता के अनुसार आसान हो।

2. कक्षा में अनुदेशन का समय थोड़ा बढ़ा देना चाहिए।

3. अधिगम कठिनाइयों वाले बच्चों के साथ सामान्य बच्चों को अधिगम मंे सहायता करने की योजना भी इकाई योजना में रेखंकित की जा सकती है।

4. अधिगम सामग्री को सरल और सुगम बनाने के लिए छोटे छोटे खण्ड़ों में विभाजित कर देना चाहिए।

5. आवश्यक अधिगम सहायक सामग्री की पहचान करके उसे तैयार करने या जुटाने की योजना बना लेनी चाहिए।

6. आवश्यक अधिगम सहायक सामग्री के निर्माण में अधिक लागत का उपयोग न हो इसके लिए अपने आस पास की खराब या अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग करने पर विचार करना चाहिए।

7. इकाई योजना बनाते समय दिव्यांग बच्चों के अनुसार पढ़ाए गए प्रकरणों के अभ्यास के लिए भी अतिरिक्त समय का प्रबन्धन कर लेना चाहिए। क्योंकि दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों की तुलना में समय अधिक चाहिए होगा ताकि वे सम्बन्धित प्रकरणों को आसानी से समझ सकें।

8. इकाई योजना में दिव्यांग बच्चों के अधिगम का मूल्यांकन करने के लिए समय, आवृत्ति, कठिनाई स्तर या अन्य आवश्यक बिन्दुओं के अनुसार प्रावधान करने चाहिए।

9. इकाई योजनाओं में ही दिव्यांग बच्चों के लिए अतिरिक्त कक्षा के लिए भी समय का नियोजन किया जा सकता है।

10. साथ ही दिव्यांग बच्चों के साथ लगने वाले अतिरिक्त समय में सामान्य बच्चों के अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े। इसलिए कुछ ऐसी गतिविधियां इकाई योजना में शामिल करनी चाहिए, जो उनके लिए उपयुक्त हों।

6.4 दिव्यांग बच्चों के लिए पाठ योजना में सामान्य अनुकूलन

सामान्य रुप से दिव्यांग बच्चों की सभी शैक्षिक आवश्यकताओं को समावेशी कक्षा में पूरा करने के लिए सम्बन्धित विषय शिक्षक को अपनी पाठ योजना में निम्न प्रकार अनुकूलन करने चाहिए -

1. विषयवस्तु का समुचित विशलेषण करना ताकि विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों के अनुरुप विषयवस्तु को संक्षिप्त खण्डों में विभाजित किया जा सके।

2. संक्षिप्त विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण करना और उनके अनुरुप विषयवस्तु को सरल और सुगम ढ़ंग से कक्षा में प्रस्तुत किया जा सके।

3. शिक्षण गतिविधियों का पूर्व निर्धारण करना जिससे शिक्षक यह तय कर सके कि कक्षा में शिक्षण के दौरान क्या संकेत देने हैं? और क्या सामग्री का उपयोग करना है? और कैसे बच्चों की त्र ुटिओं के सुधार के लिए ध्यान आकर्षित करना है? किस प्रकार उनकी अधिगम गति को ध्यान में रखकर कक्षा की गति को बनाएं रखना है? श्यामपट्ट का किस प्रकार सदुपयोग करना है?

4. कक्षा में अधिगम में सहायता प्रदान करने वाली सामग्री का उपयोग और चयन दिव्यांग बच्चों की आवश्यकता के अनुरुप करना चाहिए। जैसे- अगर कक्षा में दृष्टि बाधित और श्रवण बाधित बच्चे हैं तो दोनों की आवश्यकता के अनुसार अधिगम सामग्री होनी चाहिए। दृष्टि बाधित बच्चे सुन सकते हैं और श्रवण बाधित बच्चे देख सकते हैं इसलिए श्रव्य-दृश्य अधिगम सामग्री बच्चों को समझने में सहायता करेगी। दृष्टि बाधित बच्चों के लिए ब्रेल लिपि में उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। जबकि सामान्य बच्चों के लिए केवल दृश्य या केवल श्रव्य सामग्री भी कार्य कर सकती थी।

5. शिक्षण विधि में में आवश्यक अनुकलन जरुरी हो जाता है। शिक्षण विधि ऐसा होना चाहिए जिसमें बच्चों को अधिक से अधिक स्वयं या अपने साथियों के साथ मिलकर कार्य करके सीखने की प्रेरणा मिले और उनका आवश्यक पुनर्बलन भी प्रदान करना चाहिए। तथा दिव्यांग बच्चों के अनुसार उन्हें अतिरिक्त समय भी दिया जाना चाहिए। अनुदेशन से होने वाली प्रगति का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए और दिव्यांग विद्यार्थियों की सफलताओं को सबके सामने प्रोत्साहन के रुप में रखना चाहिए।

6. कार्य को छोटे छोटे भागों में बांटकर विद्यार्थियों से करवाना चाहिए तथा जिससे दिव्यांग बच्चों की कार्य क्षमता के अनुसार कार्य की मात्रा, काम करने की गति और कक्षा गतिविधियों में परिवर्तन करके ऐसी परिस्थितियों निर्मित की जाएं की ये बच्चे आसानी से वो कार्य कर सके और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें।

7. दिव्यांग बच्चों की अधिगम कठिनाई के अनुसार उनको दिए जाने वाले कक्षा सम्बन्धी कार्य या गतिविधयों में भागीदारी में अगर कठिनाई आती है तो उसमें परिवर्तन करके उसी के समान कोई अन्य कार्य दिया जा सकता है जो करने रुचिकर हो या फिर उसे छोटे छोटे भागों में बांटकर पूरा करने को कहा जा सकता है।

8. शिक्षकों द्वारा दिव्यांग बच्चों की अधिगम कठिनाइयों को ध्यान में रखकर शिक्षण रणनीति और शिक्षण प्रविधियों को चयन करना चाहिए।

6.5 विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजना में अनुकूलन के उपाय

6.5.1 श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन

श्रवण बाधित बच्चों की अधिगम कठिनाइयां सामान्य बच्चों की तुलना में बिलकुल अलग होती हैं। जैसे श्रवण बाधित बच्चों में सबसे बड़ा समस्या भाषा विकास की होती है। भाषा विकास श्रवण क्षति की तीव्रता, आयु, गम्भीरता और हस्तक्षेप आदि करकों पर निर्भर करता है। इसलिए शिक्षक को अपनी पाठ योजना में प्रयुक्त भाषा का स्तर ऐसा रखना चाहिए कि जिनका उच्चारण करना और उनका अर्थ समझना आसान हो। समान ध्वनियों के स्पष्ट रुप से उच्चारित करनी चाहिए उनकी पुनरावृत्ति भी करना चाहिए ताकि इन ध्वनियों में श्रवण दिव्यांग बच्चे विभेद कर सकें। क्योंकि समान उच्चारण वाली ध्वनियों समझना श्रवण बाधित बच्चों के लिए मुश्किल होता है। इसके साथ ही कुछ और सुझाव भी दिए गए हैं-

श्रवण बाधित बच्चों को ध्यान में कक्षा में थोड़ा तेज और सामने खड़े होकर बोलना चाहिए ताकि वे होठों के संचलन ओर आकृति के आधार पर उच्चारित ध्वनि को पहचान सकें।

श्रवण बाधित बच्चों की दृष्टि से दृश्य अधिगम सामग्री का अधिक उपयोग करना चाहिए।

श्रवण बाधित बच्चों का अनुदेशन करते समय यह प्रयास करना चाहिए कि उन्हें शिक्षक की बात समझ आ रही है यह निश्चित कर लेना ठीक रहता है। अन्यथा वह विषयवस्तु कम अधिगम में पिछड़ने लगेगा।

पाठ में आए तकनीकी और कठिन शब्दों के साथ सरल शब्दों के प्रयोग का उपयोग करना चाहिए।

इसके साथ ही वर्तमान सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का भी प्रभावी उपयोग किया जा सकता है। जैसे - एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, स्मार्ट क्लास, वीडियो सी.डी. आदि की सहायता से प्रत्ययों के विकास में इन बच्चों को सुगमता होगी।

भाषा के उपयुक्त विकास के लिए श्रवण बाधित बच्चों को अधिक से अधिक प्रश्नों के जबाब देने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि उनकी भाषा प्रयोग की दक्षता में विस्तार होगा और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

प्रत्येक विषय के शिक्षक को अपने विषय से सम्बन्धित तकनीकी एवं कठिन शब्दों की सूची बनाकर उनके उच्चारण की ऑडियो-वीडियो सी.डी. विकसित की जा सकती है और बच्चों को इन शब्दों का उच्चारण देख और सुनकर करने का अभ्यास कराया जा सकता है।

शिक्षक को प्रत्यय समझाने या फिर अन्य विषयवस्तु को समझाने में चेहरे की मुद्राओं और होठों के संचलन को देखने का पर्याप्त अवसर देना चाहिए। बोलने की गति सामान्य से थोड़ा कम होनी चाहिए।

पाठ योजना बनाने से पहले नए शिक्षकों को आवश्यकता पड़ने पर अनुभवी शिक्षकों से मार्गदर्शन लेकर ही पाठ योजनाओं का विकास करना चाहिए ताकि इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएं पूरी की जा सकें।

अभ्यास प्रश्न

दिव्यांग विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए इकाई योजना में क्या अनुकूलन करेंगे?

6.5.2अधिगम कठिनता वाले बच्चों के लिए आवश्यक अनुकूलन

अधिगम की कठिनाई वाले बच्चों के अधिगम सफलता के लिए भी ज्ञान वस्तु को छोटे खण्डों में विभाजित करके शिक्षण कार्य किाय जाना चाहिए। इसके साथ ही ऐसे बच्चों को लिखने, गणितीय समस्याओं को हल करने के अधिक अवसर मिलने चाहिए। इसके साथ ही जब भी शैक्षिक कठिनाई को दूर करने के लिए उपचारात्मक कक्षाओं का आयोजन किया जाता है। तब इनकी लेखन एवं गणितीय कठिनाइयों को अभ्यास के माध्यम से दूर करने का प्रयास करना चाहिए अर्थात उपचारात्मक कक्षाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य अनुकूलन के लिए उपयोगी सुझाव निम्न प्रकार हैं-

1. विद्यार्थियों को लेखन सम्बन्धी गलतियों का पुनाभ्र्यास अवश्य कराना चाहिए।

इन बच्चों को अधिक से अधिक लिखने और बोलने का अवसर कक्षा में और कक्षा के अतिरिक्त गतिविधयों में भागीदारी का अवसर मिलना चाहिए।

गणितीय कौशलों के विकास के लिए अभ्यास पर जोर देना चाहिए।

साथ ही सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के उपयोग का अधिक करना चाहिए।

विद्यार्थियों की लेखन सम्बन्धी कठिनाइयों के लिए स्टेन्सिल, स्लेट और श्यामपट्ट पर प्रयोग करने का प्रेरित कर सकते हैं।

धीमी गति से लिखने वाले बच्चों के लिए लिखने को कार्य कम किया जा सकता हैं फिर उन्हें अतिरिक्त समय दिया जा सकता है।

6.5.3 दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ योजना में अनुकूलन

दृष्टि बाधित बच्चों के लिए कक्षा में अनुदेशन के समय सामान्यतः श्रव्य अधिगम सामग्री एवं उपकरणों का अधिक एवं स्पष्ट व्याख्या के साथ प्रयोग करना चाहिए। जिससे बच्चों में आगे चलकर श्रवणके आधार पर ही प्रत्ययों के विकास की क्षमता का विकास हो सके और वह ज्ञान में न पिछड़ें।

इसके साथ सबसे बेहतर उपाय इन बच्चों के लिए अधिगम सामग्री ब्रेल लिपि में उपलब्ध होनी चाहिए। परन्तु इसके लिए शिक्षकों को ब्रेल उपकरणों का ज्ञान और इनके प्रयोग की समझ होनी चाहिए या फिर कोई अन्य विशेषज्ञ व्यक्ति विद्यालय मे ंहोना चाहिए जिससे ब्रेल का अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके।

शिक्षकों द्वारा इन बच्चों को दी जाने वाली पठन सामग्री को ब्रेल में तैयार करने के लिए ब्रेल लिखने के यन्त्र तथा ब्रेल स्लेट आदि का उपयोग करना चाहिए।

इन विद्यार्थियों के लिए सामान्य बच्चों की तरह सामान्य लेखन परिस्थितियों में लिखने के अभ्यास पर बहुत जोर नहीं देना चाहिए।

अगर पठन सामग्री ब्रेल में उपलब्ध नहीं है। तो फिर शिक्षक को कक्षा में पढ़ायी जाने वाली पठन सामग्री को अलग से भी इन विद्यार्थियों को नोट्स के तौर पर देने के लिए तैयार करना चाहिए।

अधिकांश पठन सामग्री को उपयुक्त शब्दों, रोचक शब्दों से ही विषयवस्तु का चित्र रेखांकित करने की कोशिश करनी चाहिए। अन्य सामान्य विद्यार्थियों की सहायता ली जा सकती है। वे कक्षा में दिए गए नोट्स को सुनाने को कहा जा सकता है।

शिक्षक को दृष्टि बाधित बच्चे के अभिभावकों को भी उसे पठन सामग्री बोलकर सुनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि उसे कक्षा में ऐसे बच्चों के विकास में और अधिक सोचने का अवसर मिल सके और बेहतर योजना के निर्माण कर सके।

दृष्टि बाधित बच्चों के कक्षा में पढ़ाए ग ए प्रत्ययों के विकास में कठिनाई होती है। इसके लिए शिक्षक को विभिन्न उदाहरणों, दृष्टान्तों और कहानी आदि प्रविधियों की सहायता लेनी चाहिए।

आंशिक रुप से दृष्टि बाधित बच्चों के लिए श्यामपट्ट पर पर्याप्त रोशनी होने उस पर लिखा हुआा देखने में आसानी होती है। लेकिन ऐसे बच्चों को चश्मा पहनने के लिए भी प्रेरित करें।

6.6 अधिगम वातावरण में अनुकूलन

प्रभावपूर्ण अधिगम के लिए श्रेष्ठ वातावरण को निर्माण करना अति आवश्यक होता है। क्योंकि अधिगम परिस्थितियों के लिए भौतिक संसाधनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए दिव्यांग बच्चों के लिए भौतिक वातावरण में अनुकूलन करना भी आवश्यक हो जाता है।

1. कक्षा कक्ष की भौतिक सुविधाएं भी पाठ योजना के क्रियान्वयन में अहम भूमिका निभाती हैं। जैसे- प्रकाश, तापमान, वायु तथा कक्षा के स्तर के अनुरुप उसकी सजावट, आई.सी.टी. सुविधाएं, उत्तम श्यामपट्ट आदि।

2. कक्षा का आरामदायक फर्नीचर, कक्षा में लगे शैक्षिक उपकरण एवं बाधामुक्त वातावरण अधिगम के लिए बच्चों के ध्यान को आकर्षित करता है। अगर दिव्यांग बच्चों के अनुसार कक्षा में वातावरण बाधामुक्त नहीं है तो बच्चों की रुचि पढ़ने में नहीं बन पाएगी।

3. कक्षा के भौतिक वातावरण को अधिक से अधिक अधिगम गतिशीलता बनाए रखने वाला होना चाहिए जिससे शिक्षक को अपना पाठ क्रियान्वित करने में आसानी हो और विद्यार्थियों को अधिगम में।

4. कक्षा में दिव्यांग बच्चों के बैठने का क्रम इस प्रकार होना चाहिए कि शैक्षिक कठिनाई महसूस करने वाल बच्चे को परेशानी न हो।

5. अनुदेशन को प्रभावशाली बनाने के लिए अधिगम विद्यार्थियों की अक्षमताओं या बाधाओं के अनुरुप पाठ योजना में परिवर्तन करने चाहिए। कक्षा में सामान्य बच्चों को मिलाकर एक जैसी अक्षमता वाले बच्चों को सामूहिक रुप से अधिगम में भागीदारी करने को प्रेरित किया जा सकता ळें

6. ऐसी परिस्थितियों में टोली शिक्षण, साथी शिक्षण, सहयोगपूर्ण अधिगम एवं सहकारी अधिगम बहुत प्रभावी हो सकता है।

7. दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार उन्हें स्व-अध्ययन सामग्री प्रदान की जा सकती है।

8. वर्तमान में शिक्षकों के लिए अत्याधुनिक शैक्षिक तकनीकी के विकल्प उपलब्ध हैं। जैसे- कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टेलीविजन, रेडियो, ऑडियो और वीडियो सी.डी. एवं डी.वी.डी., स्मार्ट मोबाइल फोन, पेनड्राइवए ब्लॉग, सामाजिक जाल स्थल, आभासी कक्षाएं, एन.सी.आर.टी. और सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित ऑडियो और वीडियो कार्यक्रम, यू-टयूब, यू-टयूब किड्स जैसे न जाने कितने संसाधन आ गए हैं, जिनका उपयोग शिक्षक अपनी कक्षा में कर सकते हैं।

9. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कई ऐसे सॉफ्टवेयर बन चुके हैं कि वे कम्प्यूटर की स्क्रीन पर आने वाले शब्दों को स्पीकर के माध्यम से लोगों को बोलकर बता सकते हैं, कई वेवसाइट्स पर लिखा भी होता है स्क्रीन रीडर।

10. आई.सी.टी. संसाधनों की वर्तमान कक्षा में बहुत उपयोगिता बढ़ गयी है और विशेषकर दिव्यांग बच्चों के सन्दर्भ में ये और भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इनके उपयोग से दिव्यांग बच्चे अपनी अधिगम गति से सीखते हैं।

11. दिव्यांग बच्चों को एक और सबसे बड़ी कठिनाई का सामना करना होता है और वो है कार्य को पूरा करने में लगने वाला समय। इसलिए अनुदेशन के दौरान या उसके पश्चात दिव्यांग बच्चों को अपना कार्य पूरा करने या विभिन्न प्रत्यय सीखने समझने के लिए अतिरिक्त समय की व्यवस्था की जा सकती है।

12. रुचि के आधार पर भी शैक्षिक गतिविधियों की प्राथमिकता तय की जा सकती है अर्थात आवश्यकतानुसार समय सारिणी में लचीलापन रखा जा सकता है ताकि अनुदेशन के लिए वातावरण मनोवैज्ञानिक आधारों पर निर्मित हो सके।

13. कक्षाओं/विद्यालयों में भाषा की कठिनाई का सामना करने वाले विद्यार्थियों के लिए व्याख्याकर्ता, नोट टेकर आदि सहयोगी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इनकी सहायता भी शिक्षकों को लेनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. श्रवण दिव्यांग विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए पाठ योजना में क्या अनुकूलन करेंगे?
2. अधिगम वातावरण में अनुकूलन दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए मनो-समाजिक रुप से किस प्रकार उपयोगी होता है।

कुछ आवष्यक चित्र जो आवष्यकतानुसार उपयोग किए जा सकते हैं।

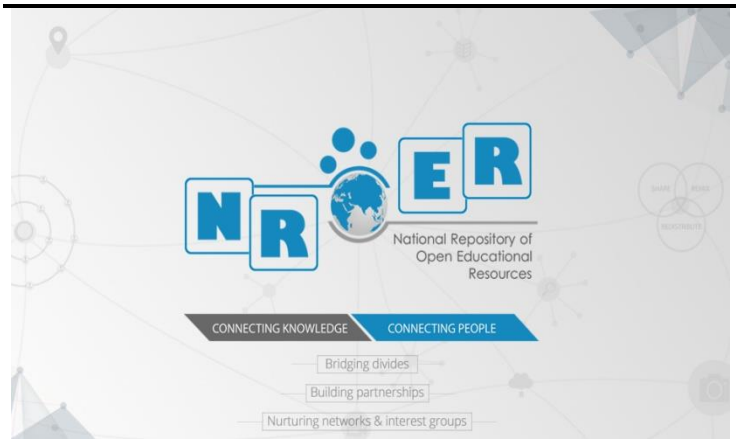
NROER
National Repository of
Open Educational
Resources
CONNECTING KNOWLEDGE
CONNECTING PEOPLE
Bridging divides
Building partnerships
Nurturing networks & interest groups

सुगम्य
भारत
अभियान
सुगम्य भारत – सशक्त भारत

मोबाइल और श्रवण यन्त्र

वाई-फाई डिवाइस और श्रवण यन्त्र

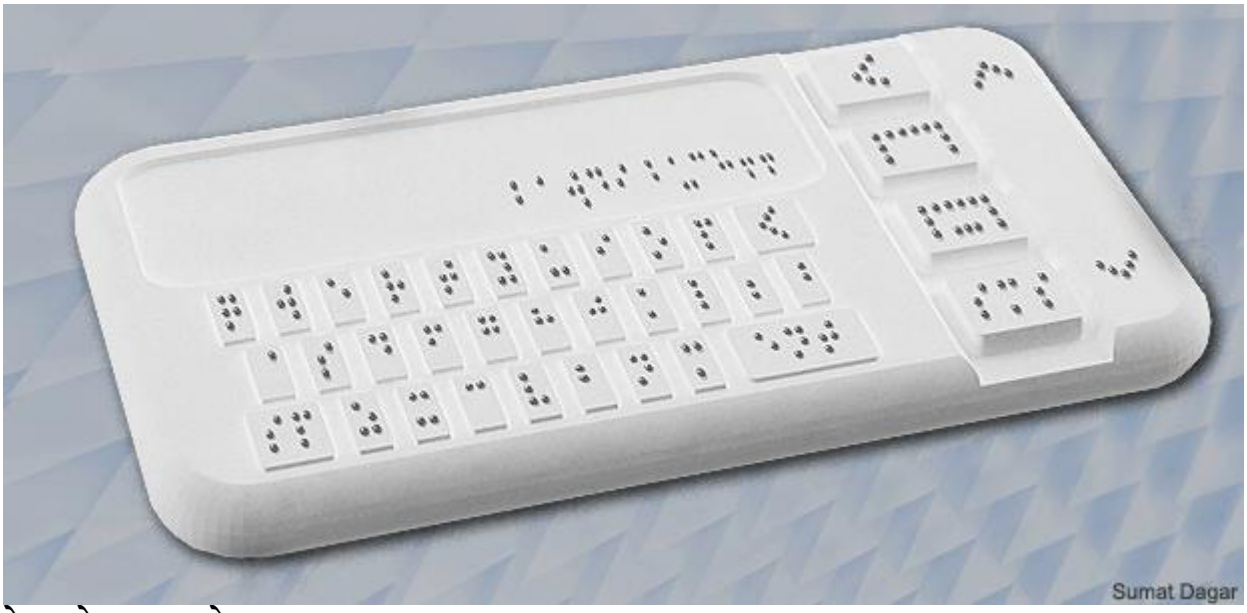

ब्रेल मोबाइल फोन

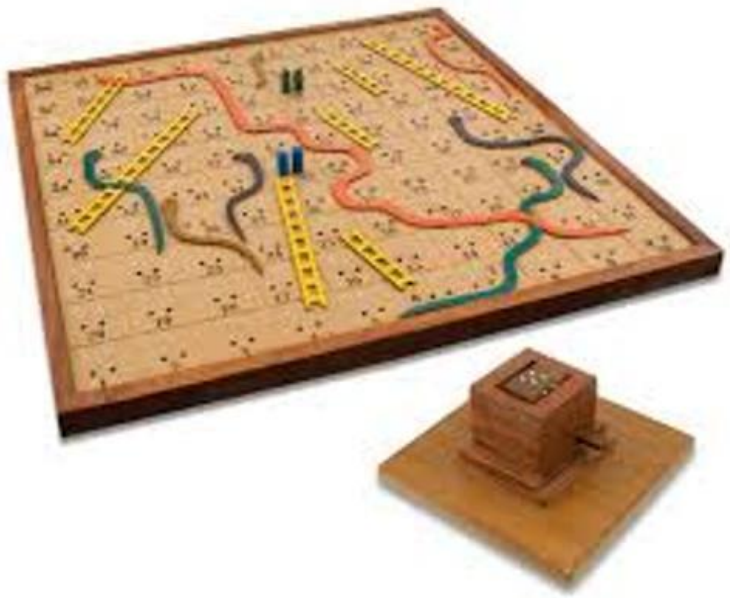

ब्रेल लूडो

स्क्रीन रीडर का उपयोग करता विद्यार्थी

दिव्यांग एप

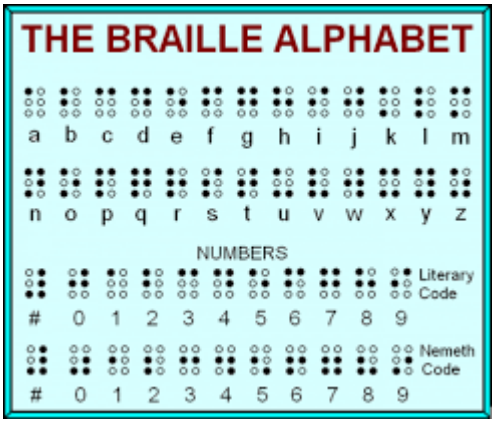

ब्रेल अंग्रेजी वर्णमाला

6.7 सारांश

अधिगम में कठिनाई अनुभव करने वाले विभिन्न अक्षमताओं वाले दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षकों को इकाई योजना बनाते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि जो प्रकरण उन्हें भविष्य में पढ़ानें हैं उनके लिए कक्षा के बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों के अनुसार विभिन्न प्रकार से अनुकूलन किए जा सकते हैं। श्रवण बाधित बच्चों की अधिगम कठिनाइयां सामान्य बच्चों की तुलना में बिलकुल अलग होती हैं। जैसे श्रवण बाधित बच्चों में सबसे बड़ा समस्या भाषा विकास की होती है। भाषा विकास श्रवण क्षति की तीव्रता, आयु, गम्भीरता और हस्तक्षेप आदि करकों पर निर्भर करता है। इसलिए शिक्षक को अपनी पाठ योजना में प्रयुक्त भाषा का स्तर ऐसा रखना चाहिए कि जिनका उच्चारण करना और उनका अर्थ समझना आसान हो। प्रभावपूर्ण अधिगम के लिए श्रेष्ठ वातावरण को निर्माण करना अति आवश्यक होता है। क्योंकि अधिगम परिस्थितियों के लिए भौतिक संसाधनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए दिव्यांग बच्चों के लिए भौतिक वातावरण में अनुकूलन करना भी आवश्यक हो जाता है।

6.8 शब्दावली

6.9 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

6.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पाठ योजना में अनुकूलन के उपाय बताइये?
2. इकाई योजना में अनुकूलन से आप क्या समझते हैं?

इकाई–7 पाठ्यक्रम उपागम

7.7 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 समकेन्द्रित पाठ्यक्रम उपागम
7.4 चक्रीय पाठ्यक्रम उपागम
7.5 एकीकृत पाठ्यक्रम उपागम
7.6 सहसम्बन्ध उपागम
7.7 प्रतीपगमन उपागम
7.8 सारांश

7.1 प्रस्तावना

विद्यार्थियों के कौशलों का विकास और उनको अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए एक निर्धारित ढांचा आवश्यक होता है। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है। लेकिन पाठ्यक्रम का निर्माण करना इतना आसान नहीं है। इसके लिए भी शिक्षाविदों को विभिन्न विचारों से गुजरना होता है तथा कुछ विशेष उपागमों को अपनाना पढ़ता है। ताकि समाज के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सके। बिना समुचित पाठ्यक्रम के शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकती है। पाठ्यक्रम से ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सही दिशा में ले जाने का प्रयास हो सकता है। इसीलिए पाठ्यक्रम की उपागमों पर विचार करना आवश्यक हो जाता है| प्रस्तुत इकाई में पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यक्रम से सम्बंधित उपागमों के विषय में चर्चा की जाएगी |

7.2 उद्देश्य

इस संक्षिप्त इकाई से हमारा ये प्रयास है कि आपको पाठ्यक्रम की आधुनिक उपागमों के बारे में बुनियादी ज्ञान स्पष्ट हो जाए। इस इकाई के स्वाध्याय के बाद आप

-समकेन्द्रित पाठ्यक्रम उपागम के विषय में जान पाएंगे|

-चक्रीय पाठ्यक्रम के विषय में समझ पाएंगे|

-एकीकृत पाठ्यक्रम एवं सहसम्बन्ध उपागम के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

7.3 समकेन्द्रित पाठ्यक्रम उपागम

पाठ्यक्रम की यह उपागम अपने नाम से आसानी से समझी जा सकती है जिसका अर्थ होता हैं जैसेकि कुछ वृत्तों का केन्द्र बिन्दु समान हो। अर्थात इससे यह अर्थ लगाया जा सकता हैं कि पाठ्यक्रम संगठन में इस उपागम के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में प्रारम्भ से ही लगभग सभी प्रकरणों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है लेकिन निरन्तर आगे के वर्षों में विषयवस्तु का प्रसार उसी प्रकार बढता जाता है जैसे विद्यार्थियों की कक्षा का स्तर। शिक्षा के शुरुआती वर्षों में इस प्रकार के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के सभी प्रकरणों से सम्बन्धित सरल, सुगम गतिविधियां विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखकर तय की जाती है। इस उपागम में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम कुछ वर्षों तक के लिए निर्धारित होता है। लेकिन जैसे ही जैसे ही शिक्षा का क्रम आगे बढ़ता जाता है इसमें विद्यार्थियों की आवश्यकता और मानसिक विकास के अनुरुप और अधिक जानकारी और सूचनाओं या विषयवस्तु को शामिल कर लिया जाता है। परन्तु इसमें शिक्षण सूत्रों का अनुपालन किया जाता है।

लाभ- इस उपागम के निम्नलिखित लाभ हैं-

7. इस उपागम में पाठ्यक्रम सरल से कठिन की ओर और पूर्ण से अंश की ओर आदि शिक्षण सूत्रों के अनुरुप अग्रसर होता है।

2. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मानसिक विकास को महत्व दिया जाता है।

3. इसमें सरलता और सुगमता का पूरा ध्यान रखा जाता है ताकि विद्यार्थी रुचिकर ढ़ंग से अधिगम कर सकें।

7.4 चक्रीय पाठ्यक्रम उपागम

जे. ब्रूनर ने 7960 में सबसे पहली बार का प्रयोग किया था। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को पहले से पढ़े हुए प्रकरणों, विषयों या विचारों या मुद्दों को दुबारा फिर अध्ययन करने और समझने का अवसर प्राप्त होता है। अर्थात अधिगमकर्ता अपने पूर्व ज्ञान को एक बार फिर से दोहराने की स्थिति में आता है और फिर उससे गुजरता हुआ आगे बढ़ता जाता है। इसी क्रम की इस प्रकार के पाठ्यक्रम में पुनरावृत्ति होती है। लेकिन इसमें केवल प्रकरणें की पुनरावृत्ति ही नहीं होती है बल्कि विद्यार्थी प्रत्येक पुराने ज्ञान बिन्दु या पूर्व अधिगमित विषयवस्तु को गहराई से समझने के दिशा में भी अग्रसर होता है और दुबारा इसी बिन्दु से गुजरकर आगे बढ़ता जाता है।

सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम का मुख्य आधार सामाजिक चरित्र, सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों का विकास करना है। इसके साथ ही समाजवादी मानवीय सम्बन्धों, सिद्धान्तों तथा सामाजिक जीवन हेतु चेतना एवं जागरूकता विकसित करना भी सामाजिक विज्ञान शिक्षण का प्रमुख क्षेत्र है, क्योंकि यही सामाजिक भावना सामाजिक परिप्रेक्ष्यों, मूल्यों और मनोभावों को उत्पन्न करने में उत्प्रेरक का कार्य करती है। यह सभी क्रियाएं मानव उत्थान के लिए उसके जीवन में चक्रीय रुप में क्रियाशील रहती हैं। इसी दृष्टि से सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के निर्धारण में पाठ्यक्रम की चक्रीय उपागम को महत्व दिया गया है तथा पाठ्यक्रम निर्माताओं द्वारा इसके माध्यम से सभी समाज की अपेक्षाओं और राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रखकर विभिन्न पहलुओं का समावेश सामाजिक विज्ञान में किया जाता है।

पाठ्यक्रम रचना की चक्राकार उपागम में पाठ्यवस्तु की प्रत्येक इकाई परस्पर चक्रीय रूप में सम्बन्धित होती है तथा यह एक दूसरे से परस्पर एवं समन्वित कार्यों पर आधारित होती है। पाठ्यवस्तु में शामिल की गयी सामाजिक क्रियाओं का चक्र पूर्णतः क्रमबद्ध होता है। सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की रचना में मानवीय क्रियाओं के समावेश को विशेष महत्व दिया जाता है तथा इनका सक्रिय योगदान भी होता है। पाठ्यक्रम रचना में चक्राकार उपागम के माध्यम से प्रत्येक क्रिया को परस्पर पूरक क्रिया के रूप मे चक्र द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। जिससे प्रत्येक क्रिया उस चक्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। चक्रीय उपागम की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं।

विशेषताएं

7. प्रत्येक सामाजिक क्रिया एक चक्रीय रूप में कार्य करती है तथा इस प्रक्रिया में प्रत्येक का महत्व होता है।

2. छात्र सरलता एवं सुगमता से इस उपागम द्वारा प्रत्येक बिन्दु को समझता जाता है।

3. ज्ञान की प्रत्येक कड़ी एक दूसरे से परस्पर सम्बन्धित होती है। इससे शिक्षण में व्यावहारिकता तथा सार्थकता पर बल दिया जाता है।

4. यह उपागम सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग माना जाता है।

5. इस उपागम में शिक्षण को प्रभावशाली तथा सार्थक बनाने में विशेष बल दिया जाता है।

6. प्रत्येक शिक्षण की इकाई चक्रीय रूप में कार्य करती है, इससे इनका महत्व और बढ़ जाता है।

7.5 एकीकृत पाठ्यक्रम उपागम

एकीकृत पाठ्यक्रम कोई नई उपागम नही है। यह 7800 से अस्तित्व में है और ख्याति प्राप्त मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों जैसे जॉन डयूवी और एम. स्मिथ इसके पक्षधर रहे हैं। लेकिन वर्तमान

में शिक्षाविदों द्वारा इस उपागम पर ध्यान केन्द्रित करने से यह उपागम प्रचलन में आयी। अधिकांश मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविद इस उपागम में माध्यम शिक्षण को बेहतर मानते हैं। पाठ्यक्रम की इस उपागम में विभिन्न विषयों की विषयवस्तु के मध्य किसी प्रकार की कोई सीमा नहीं रखी जाती है। यह उपागम ज्ञान की विशेषज्ञता पर जोर न देते हुए विभिन्न विषयों को एक स्तर विशेष पर जीवन से जोड़ देती है एकीकृत पाठ्यचर्या कहलाती है। इसमें विषयों एवं क्रियाओं को आपस में जोड़ दिया जाता है तथा शिक्षा के एक स्तर को दूसरे स्तर से इस प्रकार से जोड़ दिया जाता है ताकि उच्च स्तरों पर सुदृढ़ ज्ञान ढांचे का विकास होता है।

बीसवीं सदी में मनोविज्ञान के क्षेत्र में बहुत से सफल प्रयोग हुए और कई सिद्धान्तों का विकास हुआ। इसी समय में गेसाल्टवाद अर्थात पूर्णाकारवाद भी अस्तित्व में आया। इन मनोवैज्ञानिक खोजों ने शिक्षा को बहुत अधिक प्रभावित किया। गेसाल्टवाद के अनुसार ही अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यक्रम का विकास हुआ तथा यह पाठ्यक्रम एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है। इसका तात्पर्या है कि किसी भी क्रिया को प्रभावशील एवं उपयोगी तभी माना जा सकता है जब उसके विभिन्न भागों में एकता हो। ऐसा पाठ्यक्रम जिसमें उसके विभिन्न विषय इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि उनके मध्य कोई एकीकृत पाठ्यक्रम का अवरोध न होकर उनके एकता होती है, उसे एकीकृत पाठ्यक्रम कहते हैं। ऐसे पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों की ज्ञान वस्तु को अलग अलग भागों में प्रस्तुत न करते हैं बल्कि सभी विषय एक साथ मिलकर ज्ञान को एक इकाई के रुप में प्रस्तुत करते हैं। यह दायित्व शिक्षकों पर आ जाता है कि वे पाठ्यक्रम के सभी विषयों को आपस में सम्बन्धित करें, पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का भी जीवन से सम्बन्ध स्थापित करे और साथ ही अन्य विषय से भी सहसम्बन्ध स्थापित करके ज्ञान प्रदान करें।

एकीकृत पाठ्यक्रम की विशेषताएं

7. एकीकृत पाठ्यक्रम ज्ञान को समग्र इकाई के रुप में प्रस्तुत करता है।

2. यह पाठ्यक्रम अनुभव आधारित होता है तथा विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान और नवीन ज्ञान को सम्बन्धित करने में आसानी होती है।

3. एकीकृत पाठ्क्रम विद्यार्थियों की रुचियों को प्रमुखतः से स्थान देता है।

4. लेकिन इस पाठग्रकम को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षक को विस्तृत ज्ञान होना चाहिए।

5. यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा प्रदान करता है।

6. इससे विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान एक साथ अर्जित करते हैं।

एकीकृत पाठ्यक्रम की कठिनाइयां

7. इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों की रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम का एकीकरण बहुत मुश्किल होता है तथा उनकी विशिष्ट रुचियों के विकास के लिए भी दिशा प्रदान करना कठिन हो जाता है।

2. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर विषयों का एकीकरण समुचित नहीं होता है।

3. इसमें बहुत ही परिपक्व, अनुभवी तथा शिक्षण कौशल में निपुण शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

4. सभी विषयों का एक साथ एकीकरण करना भी असम्भव प्रतीत होता है, क्योंकि इस पाठ्यक्रम में शिक्षण में बहुत अधिक समय लगता है।

वर्तमान में भारतीय विद्यालयों में परम्परागत पाठ्यक्रम को ही लागू किया गया है। अभी भी भारत के विद्यालयों में अधिकांशतः एक विषय को किसी अन्य विषय से सहसम्बन्धित करके नहीं पढाया जाता है। जैसे विज्ञान का शिक्षक केवल उपने विज्ञान विषय का शिक्षण करता है वह अन्य विषयों जैसे हिन्दी या सामाजिक विज्ञान का या किसी अन्य विषय का ध्यान नहीं रखता है। इससे विद्यार्थी अध्ययन की विभिन्न शाखाओं में कोई सहसम्बन्ध स्थापित नहीं कर पा रहे हैं।

7.6 सहसम्बन्ध उपागम

किन्हीं भी विषयों में सहसम्बन्ध उनके मध्य अन्तःसम्बन्ध को दर्शाता है। अर्थात इस उपागम में प्रत्येक विषय को महत्व को प्रदान किया जाता है। सहसम्बन्ध एक ऐसी ऐसा विचार करने या अभिवृत्ति का ढंग है, जिससे अधिगम अर्थपूर्ण तथा प्रभावी होने की आशा रहती है। उदाहरण के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्यवस्तु को इस उपागम के माध्यम से शीर्षात्मक तथा अनुप्रस्थीय ढंग से संगठित किया जाता है। अर्थात शीर्षात्मक ढंग से प्रस्तुत की गयी एक कक्षा की सामग्री उससे अगली या उच्च कक्षा में उपलब्ध सामग्री की उपलब्धि में सहायक हो सकती है जबकि अनुप्रस्थीय ढंग से संगठित सामग्री उसे कक्षा की पाठयवस्तु की उपलब्धि में सहायक हो सकती है। अनुप्रस्थीय ढंग से संगठित सामग्री दूसरे विषयों से समन्वय स्थापित करने में सहायक होगी।

7.7 प्रतीपगमन उपागम

प्रतीपगमन का अर्थ होता है पीछे की ओर जाना। मनोविज्ञान में भी समायोजन के सन्दर्भ में रक्षा युक्ति के रुप में आप इसका अध्ययन कर चुके होंगे। इस उपागम से तात्पर्य है कि आत्मकथात्मक रुप में या

फिर शैक्षिक दृष्टि से पूर्व की परिस्थितियों को ध्यान में रखने और वर्तमान सन्दर्भों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए पूर्वगामी प्रकरणों को इसमें शामिल कर सकते हैं। पाठ्यक्रम को निर्धारित करने में इस उपागम का बहुत महत्व है इससे यह समझना आसान हो जाता है कि भूतकाल और वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में किस ढ़ंग से पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाए।

7.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने पाठ्यक्रम निर्माण, पाठ्यक्रम से सम्बंधित उपागमों के विषय में अध्ययन किया| पाठ्यक्रम संगठन में समकेंद्रित उपागम के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम में प्रारम्भ से ही लगभग सभी प्रकरणों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है लेकिन निरन्तर आगे के वर्षों में विषयवस्तु का प्रसार उसी प्रकार बढता जाता है जैसे विद्यार्थियों की कक्षा का स्तर। चक्रीय पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को पहले से पढ़े हुए प्रकरणों, विषयों या विचारों या मुद्दों को दुबारा फिर अध्ययन करने और समझने का अवसर प्राप्त होता है। अर्थात अधिगमकर्ता अपने पूर्व ज्ञान को एक बार फिर से दोहराने की स्थिति में आता है और फिर उससे गुजरता हुआ आगे बढ़ता जाता है। इसी क्रम की इस प्रकार के पाठ्यक्रम में पुनरावृत्ति होती है। सहसम्बन्ध उपागम में किन्हीं भी विषयों में सहसम्बन्ध उनके मध्य अन्तःसम्बन्ध को दर्शाता है।

अभ्यास प्रश्न

1. पाठ्यक्रम की कोई दो उपागम के बारे वर्णन कीजिए।

इकाई – 8 सामाजिक अध्ययन के शिक्षण की युक्तियाँ एवं प्रविधियाँ

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 व्ययाख्यान विधि
8.3.7 व्याख्यान विधि के लाभ
8.3.2 व्याख्यान विधि के दोष
8.4 वाद विवाद विधि
8.4.1 वाद विवाद विधि के गुण
8.4.2 वाद विवाद विधि के दोष
8.5 सामाजिक अभिव्यक्ति विधि
8.5.7 सामाजिक अभिव्यक्ति पद्धति के गुण
8.6 स्रोत विधि
8.6.7 स्रोत विधि का प्रयोग
8.6.2 स्रोत विधि के गुण
8.6.3 स्रोत विधि के दोष
8.6.4 स्रोत विधि को प्रभावशाली बनाने के उपाय
8.7 योजना विधि
8.7.7 अच्छी योजना विधि के आवष्यक तत्व
8.7.2 योजना विधि के गुण
8.8 सारांश

8.7 प्रस्तावना

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा कक्षा कक्ष में अपनायी जाने वाली विधियों का बहुत महत्व होता है। क्योंकि आधुनिक काल में अधिकांश शिक्षाविदों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक प्रक्रिया माना जाता है। आधुनिक शिक्षणशास्त्र (Pedagogy) के उद्गम को श्रेय जॉन कॉमेनियस (Johann Amos Comenius) के महान् ग्रन्थ 'ग्रेट डिडेक्टिक' (Great Didactic) जाता है। क्योंकि उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि सम्पूर्ण अनुदेशन (Instruction) प्राकृतिक रुप से क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित किया जाना चाहिए तथा शिक्षक को अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों की ज्ञानेन्द्रियों को जाग्रत करके उनमें ज्ञान एवं बोध का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही इस सन्दर्भ में रुसो का महान् ग्रन्थ 'एमील' (Emile) प्रगतिशील औश्र नवाचारी शिक्षकों के लिए एक आधारभूत पृष्ठभूमि प्रदान करता है। रुसों ने कहा कि प्रकृति, मानव तथा वस्तुएं-शिक्षक हैं। इस लिए करके सीखने का सिद्धान्त, प्रयोग द्वारा सीखना, निरीक्षण द्वारा सीखना आदि गतिविधयां विद्यार्थियों के अधिगम को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। रुसो के शिष्य पेस्टालॉजी ने भी अनुदेशन को मनोवैज्ञानिक बनाने पर जोर दिया उनसे कहा कि शिक्षा अन्तर्निहित शक्तियों के प्रकटीकरण की प्रक्रिया है। अतः सम्पूर्ण शिक्षणशास्त्र इस तथ्य को आधार बनाकर विकसित किया जाना चाहिए। इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बालकेन्द्रित बनाने की दिशा में प्रयास प्रारम्भ हुए।

पेस्टालॉजी के शिष्यों-फ्रॉबेल तथा हरबर्ट ने उसक विचार और उपागम को आगे बढ़ाते हुए शिक्षणशास्त्र को मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित बनाने पर बल दिया। फ्रोबेल ने किण्डरगार्टन पद्धति और हरबार्ट ने अनुदेशन विधि को जन्म दिया। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बालकेन्द्रित बनाने के दिशा में चल रहे आन्दोलन में मैडम मॉरिया मॉन्टेसरी ने इसे शिक्षण के स्थान पर सीखने (अधिगम) पर जोर देकर आगे बढ़ाया। मॉन्टेसरी के विचार स्व-शिक्षा द्वारा सीखने पर आधारित थे। फ्रोबेल ने खेल द्वारा सीखने को अपनी पद्धति का आधार बनाया। आधुनिक युग में जॉन ड्यूवी ने अनुभव द्वारा सीखने के सिद्धान्त को शिक्षण पद्धति का आधार बताया।

शिक्षणशास्त्र के विकास के प्रारम्भिक काल से लेकर आधुनिक काल के विकास को ध्यान में रखकर मनोविज्ञान के विकास के साथ अनेकों शिक्षण विधियों का विकास विभिन्न मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों द्वारा किया गया। विभिन्न समय कालों में विकसित विधियां अलग अलग विषयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित की गयी हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक विधि की अपनी विशेषताएं और सीमाएं भी हैं। जिस प्रकार मनोविज्ञान का विकास होता गया, समाज की आवश्यकता के अनुरुप पाठ्यवस्तु में परिवर्तन होता गया और बच्चे शिक्षा का क्रेन्द्र बनते गए उसी के अनुरुप शिक्षण विधियों के विकास को भी नया आधार मिलता गया। प्रारम्भिक काल में विकसित अधिकतर विधियां शिक्षक केन्द्रित थीं। लेकिन कालान्तर में विभिन्न बालकेन्द्रित शिक्षण विधियों का भी विकास होता गया।

शिक्षण युक्तियां और प्रविधियाँ शिक्षण कला को सजीव एवं प्रभावशाली बनाती हैं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इन प्ररविधियों की महत्ता इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि इसमें मानक के जीवन में सामाजिक एवं नागरिक पक्षों की वास्तविक परिस्थितियों का सटीक चित्रण आवश्यक है। प्रस्तुतीकरण को इन प्रविधियों के अवलम्बन से सफल एवं सजीव बनाया जाता है। दूसरे, ये प्रविधियाँ ज्ञानार्जन में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती हैं। विभिन्न प्रविधियाँ विभिन्न उद्देश्यों के लिए भिन्न-भिन्न अवसरों पर प्रयोग में लाई जाती हैं। वस्तुतः इन सबका अभिप्राय ज्ञानार्जन को प्रभावशाली, ग्राह्य, बोधगम्य एवं रोचक बनाना होता है। प्रविधियों का प्रयोग प्रायः स्वतन्त्र रुप से नहीं होता, वरन् किसी-न किसी पद्धति के साथ प्रयोग किया जाता है।

विधि प्रक्रियाओं का वह सुपरिभाषित ढांचा है जिसमें परिस्थितयों की माँगों के अनुसार विभिन्न प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।'' इस दृष्टि से विद्वान् प्रयोगशाला विधि, योजना विधि आदि को शिक्षण-विधियों के अन्तर्गत मानते हैं। शिक्षण-विधि कार्य की वह सामान्य योजना है जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक परिणाम या उद्देश्य की प्राप्ति वह सामान्य योजना है जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक परिणाम या उद्देश्य की प्रापित के लिए किया जाता है। अतः शिक्षण-विधियाँ शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धिता हैं। शिक्षण-विधि का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। इसके विपरीत शिक्षण-प्रविधि 'शिक्षक क्या करता है?' को बताती है। साथ ही इसका कोई सामान्य ढाँचा नहीं होता है, वरन् उसकी संरचा विधि की संरचना पर निर्भर होती है। इसके अन्तर्गत शिक्षण प्रविधि का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है। इसकी पुष्टि में हम कह सकते हैं, किसी भी मुख्य शिक्षण-विधि के साथ सहायक के रुप में जो भी युक्तियां शिक्षण में प्रयुक्त की जाती हैं, उन्हें रीति या प्रविधि कहते हैं।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास है कि आपको कुछ प्रमुख शिक्षण विधियों की संरचना, विशेषताओं, दोषों के बारे में स्पष्ट किया है। ताकि आपको को शिक्षण विधि का चयन करत समय आसानी हो। इसके लिए शिक्षण विधियों से जुड़े सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। जिससे आप अनुदेशन के लिए उपयुक्त विधि का चयन कर सकें।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप -

7. शिक्षण विधि को परिभाषित कर सकेंगे।
2. व्याख्यान विधि के बारे में वर्णन कर सकंगे।
3. वाद-विवाद विधि की व्याख्या कर सकेंगे।

4. सामाजिक अभिव्यक्ति विधि को स्पष्ट कर सकेंगे।

5. स्रोत और योजना के बारे में वर्णन कर सकेंगे।

6. सभी विधियों की तुलना और समीक्षा कर सकेंगे।

आपके पाठ्यक्रम के अनुसार निम्न शिक्षण विधियों का वर्णन किया गया है-

8.3 व्याख्यान विधि

इस विधि को भाषण विधि भी कहते हैं। इसमें शिक्षक प्रकरण को सरल और बोधगम्य भाषा में में विद्यार्थियों को समझाने का कार्य करता है। सामान्यतः इस विधि में शिक्षक पुस्तक एवं अन्य किसी साधन का प्रयोग नहीं करता है। भारत के विद्यालयों में यह विधि बहुत अधिक प्रयोग की जाती है। इस विधि को जिस रुप में शिक्षक प्रयोग करते हैं उक दृष्टि से इसकी आलोचना भी बहुत होती है। क्योंकि यह विधि विद्यार्थियों की रुचि एवं मानसिक स्तर के अनुसार नहीं मानी जाती है। बल्कि शिक्षक ही कक्षा क्रियाओं में सबसे अधिक सक्रिय रहता है, और वह विद्यार्थियों की जिज्ञासा और ज्ञान उत्सुकता को ध्यान में नहीं रखता है। इसी कारण इसे शिक्षक केन्द्रित विधि माना जाता है। व्याख्यान विधि में कक्षा का स्वरुप प्रजातान्त्रिक नहीं होता है। सुविधा की दृष्टि से शिक्षक इस विधि को बहुत अपनाते हैं। लेकिन इस विधि में अनेकों कमी होने के बाबजूद भी हम इसे नकार नहीं सकते हैं और शिक्षकों को भाषण विधि का प्रयोग करते समय विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक पक्षों और व्यक्गित भिन्नता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

यह विधि वर्तमान शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से मेल नहीं खाती है क्योंकि यह बालकेन्द्रित न होकर शिक्षक केन्द्रित है। इसके प्रयोग से विद्यार्थियों में रुचि विकसित नहीं हो पाती है। परन्तु अगर शिक्षक चाहे तो इसमें उपयुक्त आरोह-अवरोह और उपयुक्त उदाहरणों का प्रयोग करके रोचक बना सकता है। इस विधि में विद्यार्थी क्रेन्द्रित न होकर भी कई प्रकरणों में विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्यान विधि का प्रयोग प्राचीनकाल से ही होता रहा है और हमारे देश में वर्तमान में भी इस विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्य रुप से व्याख्यान का अर्थ पाठ को भाषण के रुप में पढ़ाने से है, इसमें शिक्षक अपने पाठ को मुख से अपने विचार प्रकट करके पढ़ाता है। इसे 'कथन विधि' भी कहा जाता है। लेकिन व्याख्यान विधि को बालकेन्द्रित विधि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है क्योंकि इस विधि में शिक्षक को ज्यादा महत्व

प्राप्त होता है। परन्तु फिर भी व्याख्यान विधि की सफलता-पाठ्यवस्तु के चयन तथा उस पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण के ढंग पर निर्भर करती है। पाठ के प्रस्तुतीकरण का ढंग शिक्षण के व्यक्तित्व पर निर्भर है। इसके लिए शिक्षण की पाठ सम्बन्धी तैयारी बहुत गहन होनी चाहिए साथ ही विषय का ज्ञान उच्चकोटि का होना चाहिए।

अधिकांश प्रगतिशील विचारकों, मनोवैज्ञानिकों और शिक्षाविदों का मानना है कि व्याख्यान विधि शिक्षण के लिए उपयुक्त नहीं है। क्योंकि शिक्षक द्वारा कक्षा में इसके प्रयोग के दौरान बालक निष्क्रिय श्रोता बना रहता है। लेकिन बहुत से शिक्षाविदों का मानना है कि यह तर्क उचित प्रतीत नहीं होता है क्योंकि यह विधि भी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के विपरीत नहीं है। अगर शिक्षक समुचित तैयारी करे तो इस विधि से भी विद्यार्थियों की मानसिक क्रियाओं में संलग्न किया जा सकता है। शिक्षक रोचक ढंग से अपने व्याख्यान को कक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष रखे तथा सक्रिय बनाए रखने के लिए बोधात्मक और खोजपूर्ण प्रश्न पूछता रहे तो यह कमी दूर की जा सकती है।

व्याख्यान द्वारा शिक्षण में ज्ञान अर्जित करने वाली इन्द्रियों में से विद्यार्थी की केवल कर्णेन्द्रिय ही सक्रिय रहती है। फिर भी व्याख्यान शिक्षक के ज्ञान कौशल के प्रयोग से विद्यार्थियों के मस्तिष्क के विकास में उपयोगी साबित हो सकता है। लेकिन यह विधि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी नही है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए यह विधि लाभदायक है। क्योंकि सामाजिक विज्ञान में विभिन्न समस्याओं, योजनाओं तथा संस्थाओं का समावेश होता है और शिक्षक अपने व्याख्यान द्वारा उनकी संक्षिप्त रुपरेखा तथा प्रस्तावना सरलता से विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत कर सकता है।

पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता है। इस विधि में शिक्षक को अधिक क्रियाशील रहना पड़ता है और विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के लिये शिक्षक प्रश्न प्रविधि की सहायता भी लेता है। चूंकि मुख्य वक्ता शिक्षक होता है इसलिए इस विधि में शिक्षक को अधिक तैयार करनी पड़ती है और छात्र सुनने का कार्य करते हैं। यह विधि निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित है-

1 . पाठ्यवस्तु को पूर्णरूप से प्रस्तुत करने पर जोर दिया जाता है।

2. पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर अधिक केन्द्रण किया जाता है।

3. विद्यार्थी सुनकर अधिक सुगमता से सीखते हैं।

4. इसके अतिरिक्त इस विधि से अन्य विषयों सहसम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

इस विधि द्वारा प्रस्तुतीकरण अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है लेकिन इसके उपयोग में शिक्षक को सावधानी रखनी होती है। पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण के समय स्पष्टीकरण के लिये अध्यापक को सहायक सामग्री, चार्ट, रेखाचित्र का भी समुचित प्रयोग करना चाहिए।

8.3.1 व्याख्यान विधि के लाभ

7. यह विधि विद्यार्थियों और अध्यापकों के मध्य सम्पर्क स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। वाणी के उतार चढाव से और अन्य उद्दीपन परिवर्तनों की सहायता से रोचक बनाया जा सकता है। इस विधि के माध्यम से महापुरुषों की जीवनी व उपलब्धियां, आन्दोलनों की चर्चा, एवं ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन बहुत अच्छे से किया जा सकता है।

2. यह विधि विद्यार्थियों में श्रवण कौशलों का विकास करने में सहायक होती है लेकिन इसके लिए अध्यापकों में विभिन्न उद्दीपन परिवर्तनों को प्रयोग करने की दक्षता हो।

3. यह विधि व्याख्या करते हुए विभिन्न अवधारणाओं या मुद्दों का स्पष्टीकरण करने में भी यह विधि बहुत मदद करती है।

4. इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों और शिक्षकों के समय और शक्ति की बचत होती है तथा अन्य विधियों के क्रियान्वयन में सहायक होती है- जैसे योजना विधि, प्रदर्शन विधि।

5. यह विधि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी हो सकती है क्योंकि इससे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में औश्र पुस्तकों के अध्ययन के प्रति रुचि जाग उठती है।

8.3.2 व्याख्यान विधि के दोष

7. यह विधि विद्यार्थियों को निष्क्रिय बनाती है इससे उनका सीखना मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरुप नहीं होता है।

2. इस विधि के प्रयोग में सभी दक्ष नहीं होते हैं इसलिए वे इसका सही उपयोग नहीं कर पाते हैं। इसके साथ ही यह विधि स्व-श्रम को हतोत्साहित करती है।

3. इस विधि के प्रयोग से शिक्षण में अनावश्यक बातों के शामिल होने की सम्भावना रहती है।

शिक्षकों के लिए सुझाव-

7. योग्य शिक्षकों को ही व्याख्यान विधि का उपयोग करना चाहिए।

2. शिक्षकों को विद्यार्थियों के मानसिक स्तर एवं रूचियों का ध्यान रखना चाहिए तथा उदाहरण विद्यार्थियों के मानसिक स्तर तथा सामाजिक जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए।

3. व्याख्यान की भाषा सरल तथा बोधगम्य होनी चाहिए और व्याख्यान की गति अधिक तेज नहीं होनी चाहिए।

4. व्याख्यान के समय विकासात्मक प्रश्न भी पूछने चाहिये जिससे बालकों का ध्यान केन्द्रित हो सके।

5. इस विधि का प्रयोग पूर्व माध्यमिक या माध्यमिक कक्षाओं से किया जा सकता है। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर प्रयोग अधिक किया जा सकता है।

6. व्याख्यान में कक्षा का वातावरण नीरस तथा गम्भीर हो जाता है। इसलिये पाठ के दौरान नियन्त्रित हास्यविनोद का उपयोग किया जा सकता है।

7. व्याख्यान के समय विषय से हटकर बात चीत नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे समय का नुकसान होता है और विद्यार्थी इसका सम्बन्ध भी पाठ्यवस्तु से कर सकते हैं।

8. व्याख्यान को प्रभावी बनाने के लिए वद विवाद प्रविधि का उपयोग भी इसके साथ किया जा सकता है।

8.4 वाद-विवाद विधि

इस विधि में शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर विचार विमर्श करके विभिन्न प्रकरणों के स्पष्टीकरण के लिए आगे बढ़ते जाते हैं। शिक्षक विभिन्न प्रश्नों को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता है और विद्यार्थी इन समस्याओं का समाधान ढूढ़ने के लिए विचार और मन्थन करते हैं ताकि सम्बन्धित समस्या के समाधान की दिशा में बढ़ सकें। इसके उपरान्त विद्यार्थी अपने अपने निष्कर्षों को कक्षा में साझा करते हैं तथा अध्यापक उनके तर्कों के आधार पर आए निष्कर्षों में सुधार या उनकी पुष्टि करता है।

सामाजिक विज्ञान के विभिन्न प्रकरणों जैसे विचार विशलेषण वाले प्रकरण, भविष्य की योजना वाले निर्णय या विद्यार्थियों को कोई विषय स्पष्ट करना हो तो यह विधि काफी उपयोगी साबित हेाती है। वाद विवाद विधि में शिक्षक को पर्याप्त तैयारी कर लेनी चाहिए क्योंकि इससे वह विद्यार्थिरूों को सही ढ़ंग से वाद विवाद में सक्रिय रुप से भागीदार बना सके। इसके लिए जरुरी है कि कक्षा में सभी विद्यार्थी वाद विवाद के समय स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचार रख सकें तथा कक्षा में बैठने की व्यवस्था ऐसी हो कि विद्यार्थियों को विचार अभिव्यक्त करने में सुविधा हो। साथ ही विषयवस्तु का स्पष्ट होना बहुत आवश्यक है। वाद विवाद सके प्रमुख अंग-

नेता

2. समूह

3. समस्या

4. सामग्री

5. मूल्यांकन

वाद विवाद का संचालन भी बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका संचालन विद्यार्थी और अध्यापकों में से कोई भी कर सकता है। संचालन के द्वारा ही विद्यार्थियों को वाद विवाद के उद्देश्यों और समस्या को बताया जा सकता है। संचालन के में प्रमुख चार बिन्दु शामिल किए जाते है-

7. प्रारम्भ

2. विश्लेषण

3. व्याख्या

4. सारांश।

इसके कुशल संचालन के लिए आवश्यक है कि कक्षा को विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार समूहों में बांट लेना चाहिए और सरलता की दृष्टि से एक समूह में 4-5 विद्यार्थी से ज्यादा न हों। यह समूह आपस में दी गयी समस्या पर विचार विमर्श करते हैं और अन्त में समूह के नेता के द्वारा समूह की रिपोर्ट को प्रस्तुत किया जाता है तथा कक्षा में इन सभी रिपोर्टों पर वाद विवाद या विचार विमर्श होता है।

वर्तमान में आधुनिक शिक्षा का क्रेन्द्र बच्चे हैं इसका प्रमुख उद्देश्य और उन्हें उनकी प्रकृति के अनुसर शिक्षा प्रदान करने तथा उनकी अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करने का अवसर प्रदान करना है। आधुनिक शिक्षा प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना है जिसमें बालकों की रुचि हो क्योंकि जब रुचि होगी तभी वह पाठ्यवस्तु को ग्रहण कर सकता है। आधुनिक शैक्षिक विचारधारा

और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार बालक या अधिगमकर्ता को निष्क्रिय श्रोता नहीं समझा जा सकता है। बल्कि उसे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाने पर जोर देना चाहिए। बालक जिस ज्ञान को अन्तर्क्रिया करके प्राप्त करता है, वह स्थायी रहता है। बालक को सक्रिय बनाये रखने के दृष्टिकोण से विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है, उनमें से एक शिक्षण विधि वाद-विवाद भी है जो विद्यार्थियों को शिक्षण प्रक्रिया के दौरान अन्तर्क्रिया करने का अवसर प्रदान करती है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी मिल जुलकर किसी समस्या के सम्बन्ध में सामूहिक परिचर्चा में विचारों का आदान प्रदान करते हैं। इसी कारण यह विधि बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों की श्रेणी में आ जाती है। इसमें अधिगमकर्ता की रुचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं और अधिगम आवश्यकताओं को महत्व दिया जाता है। शिक्षक और अधिगमकर्ता दोनों ही सक्रिय रुप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं तथा शिक्षक इस विधि में सहायक एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।

जेम्स, एम.ली. के अनुसार ''वाद-विवाद एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी सहयोगात्मक रुप से किसी समस्या या प्रकरण पर परिचर्चा करते हैं।''

वाद-विवाद को दो रुपों में बांटा जा सकता है-

(1) अनौपचारिक वाद-विवाद

(2) औपचारिक वाद-विवाद

(1) **अनौपचारिक वाद-विवाद** -अनौपचारिक वाद विवाद को आयोजित करने के लिए किन्हीं निर्धारित नियमों या किसी पूर्व निर्धारित योजना की आवश्यकता नहीं होती है। इसमें विद्यार्थी किसी प्रकरण पर स्वतन्त्रापूर्वक विचारों को साझा करते हैं। इस प्रक्रिया का काफी प्रयोग किया जाता है तथा शिक्षक ही इसका नेतृत्व करता है और उसके रुप में निम्नलिखित दायित्व होते हैं -

1. वाद-विवाद के लिए प्रस्तुत की गई समस्या या प्रकरण को सदैव केन्द्र में रखना जिससे अधिगमकर्ता प्रकरण से न भटकें।

2. अधिगमकर्ताओं की अधिक से अधिक भागीदारी कर जोर देना चाहिए।

3. वाद-विवाद को संचालित करने के साथ इसे गतिशील बनाए रखना भी शिक्षक का दायित्व है।

4. वाद-विवाद से विद्यार्थियों को सीखने के लिए तैयार रखना शिक्षक का दायित्व है।

5. विद्यार्थियों को अर्जित ज्ञान के मूल्यांकन में सहायता करना भी शिक्षक का दायित्व है।

(2) औपचारिक वाद-विवाद

औपचारिक वाद-विवाद का आयोजन या संचालन पूर्व निर्धारित नियमों या पद्धति के अनुसार किया जाता है। इस प्रकार के वाद-विवाद के लिए छात्र स्वयं में से वाद-विवाद को सही रुप से आगे बढ़ाने के लिए सभापति, मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी चुनते हैं। वाद-विवाद में भागीदार सभी विद्यार्थी इन पदाधिकारियों के निर्देशन में परिचर्चा में भाग लेते हैं तथा शिक्षक एक साधारण सदस्य के रुप में कार्य करता है। औपचारिक वाद-विवाद के निम्नलिखित रुप प्रचलित हैं- पैनल या चर्चा तथा परिसंवाद।

पैनल या चर्चा

जब अधिक संख्या के कारण आपसी विचार-विमर्श सम्भव नहीं हो सके वहां पैनल चर्चा (समूह चर्चा) का उपयोग किया जा सकता है। इसमें पैनल के सदस्य अपने-अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं तथा एक दूसरे से बातचीत करते और अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं और सम्बन्धित प्रकरण पर अपना मत देते हैं। इस प्रकार इसमें भाषण को स्थान प्राप्त नहीं होता है। पैनल चर्चा की समाप्ति पर श्रोता अपनी शंकाओं को प्रस्तुत करते हैं तथा इन शंकाओं का निवारण पैनल सदस्यों द्वारा किया जाता है।

परिसंवाद

इसमें भी पैनल की भांति चार से आठ की संख्या छात्र किसी विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। इसमें प्रत्येक सदस्य को 5 से 25 मिनट का समय अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए दिया जाता है। ये समस्त सदस्य जब अपने विचार प्रस्तुत कर लेते हैं तब उसके बाद प्रश्न आमन्त्रित किये जाते हैं। ये सदस्यगण ही इन प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

वाद-विवाद विधि के संचालन के लिए नेता, भाग लेने वालों (Participants) की समस्या तथा सामग्री की आवश्यकता है। वाद-विवाद के लिए छात्रगण स्वयं या शिक्षक समस्या प्रस्तुत कर सकता है। समस्या के प्रस्तुत होने के पश्चात् शिक्षक उद्देश्यों पर प्रकारश डालेगा तथा उससे सम्बन्धित सामग्री के स्रोतों को बतायेगा। छात्रगण इन विभिन्न स्रोतों से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करेंगे। वे इस प्रकार समस्या के किसी पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए तैयारी करेंगे। छात्रों के विभिन्न समूह समस्या से सम्बन्धित सामग्री, आंकड़ों, सूचनाओं को एकत्रित एवं आत्मसात् करके निश्चित तिथि पर वाद-विवाद का कार्य प्रारम्भ करेंगे। निर्वाचित नेता या शिक्षक द्वारा वाद-विवाद का संचालन किया जायेगा। उसके निर्देशों के अनुसार वाद-विवाद का कार्य चलेगा। शिक्षक का कार्य छात्रों के सन्देहों को दूर करना होगा। वह एक साधारण सदस्य के रुप में कार्य करेगा। छात्रों के विचार-विमर्श के पश्चात् निर्धारित नेता विषय से सम्बन्धित संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करेगा। इसके पश्चात् वाद-विवाद कार्य की समाप्ति हो जायेगी। इस सम्पूर्ण कार्यवाही को मन्त्री द्वारा नोट किया जायेगा।

7. इसके द्वारा छात्रों में सहयोग एवं सहिष्णुता की भावना का विकास किया जाता है।

2. यह छात्रों को मिल-जुलकर कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान करती है।

3. इसके द्वारा छात्रों में किसी वस्तु के सम्बन्ध में चिन्तन करने की शक्ति का विकास सीख जाते हैं।

4. इसके द्वारा छात्रा अपने भावों और विचारों को सुव्यवस्थित रुप से अभिव्यक्त करा सीख जाते हैं।

5. इसके द्वारा छात्र सामूहिक रुप से निर्णय करना सीख जाते हैं।

6. यह छात्रों में स्वतन्त्र अध्ययन करने की आदत का विकास करती है।

7. इसके द्वारा छात्रों की तर्क-शक्ति का विकास किया जाता है।

8. यह छात्रों को विषय-सामग्री का चयन एवं संगठन करना सिखाती है।

यह छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास करती है तथा उनको सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए सक्रिय बनाती है।

2.4.7 वाद विवाद के गुण

7. यह विधि प्रजातान्त्रिक है और इसमें सभी विद्यार्थियों को वाद विवाद में भागीदरी करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है जो उन्हें भविष्य के जीवन के लिए तैयार करती है।

2. कक्षा में आयोजित वाद विवाद का प्रयास यह होना चाहिए कि समस्या का सामूहिक निर्णय निकले।

3. यह विधि स्वतन्त्र अध्ययन पर जोर देती है। इसमें विद्यार्थी स्वयं अपने और अपने साथियों के विचारों के तर्कों के आधार पर ज्ञान को ग्रहण करते है। इसमें रटने का कोई स्थान नही है।

4. यह विधि मनोवैज्ञानिक है इसमें विद्यार्थी रुचि लेकर सक्रिय रुप से सीखते हैं।

5. वाद विवाद विधि पाठ्यवस्तु का चयन करना और उसे संगठित करना भी सिखाती है।

6. यह विधि विद्यार्थियों में सहयोगात्मक रुप से अधिगम करने को प्रेरित करती है। साथ ही विद्यार्थियों के विचारों में तर्क और स्पष्टता लाती है।

2.4.2 वाद विवाद के दोष

7. अगर वाद विवाद को सुनियोजित करके आयोजित नहीं किया जाता है तो निरर्थक हो जाता है और अनावश्यक समय की बरबादी होती है।

2. इसके प्रयोग करने से समय अधिक लगता है और पूरा पाठ्यक्रम इस विधि से पढ़ाना बहुत मुश्किल होता है।

3. इसमें भी कुछ छात्र संकोचवश सक्रिय रुप से भाग नहीं ले पाते है। वाद विवाद को कुशलता से संचालन करने के लिए दक्ष अध्यापकों की जरुरत होती है।

8.5 सामाजिक अभिव्यक्ति विधि

बाइनिंग और बाइनिंग के अनुसार सामाजिक अभिव्यक्ति के दो रुप हैं- 1 . संकुचित और 2. विस्तृत। संकुचित रुप में सामाजिक अभिव्यक्ति एक ऐसी प्रक्रिया मानी जाती है जिसमें शिक्षक अपनी जिम्मेदारी विद्यार्थियों का समिति पर सौंप देता है। जबकि विस्तृत सामाजिक अभिव्यक्ति पहले के मुकाबले सामूहिक रुप से श्रेष्ठ है। बाइनिंग एवं बाइनिंग के अनुसार कोई भी कक्षा काल जो एक वर्ग रुप में सामूहिक सजगता एवं व्यक्तिगत चेतना प्रदर्शन करे, सामाजिक अभिव्यक्ति है। इसके बाइनिंग और बाइनिंग ने निम्न रुप बनाए हैं-

1 . **औपचारिक वर्ग योजना-** इसमें विद्यार्थी एक घेरे में बैठकर एक सभा के बैठने का रुप ले लेते है। इसमें एक अध्यक्ष और एक संयोजक हेाता है। इसमें किसी पूर्व निर्धारित समस्या पर विचार विमर्श होता है। सभी विद्यार्थी अध्यक्ष को सम्बोधित करके बोलते हैं और कोई भी प्रस्ताव पारित होता है तो उसे सभा के औपचारिकताओं के समर्थन से ही पास किया जाता है।

2. **अनौपचारिक वर्ग योजना-**इसमें सभा या सदन की औपचारिकताओं का निर्धारण नहीं होता है और बिना किसी निर्धारित औपचारिकताओं का पालन किए विचार विमर्श किया जाता है। विद्यार्थी प्रश्न करते हैं और शिक्षक उनका जबाब देते हैं।

3. **आत्म निर्देषित वर्ग योजना-**इसमें शिक्षक की भूमिका नगण्य होकर विद्यार्थियों की भूमिका प्रमुख होती है। विद्यार्थी समस्या का चयन स्वयं करते हैं तथा कक्षा की गतिविधियों का निर्धारण और संचालन स्वयं करते हैं। जैसे- अध्यक्ष का चुनाव। फिर अध्यक्ष व संयोजक मिलकर कार्यवाही का संचालन करते हैं तथा शिक्षक केवल मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। लेकिन यह विधि उच्च कक्षाओं में सही से उपयोग की जा सकती है।

4. **सेमिनार वर्ग योजना-**सेमिनार वर्ग योजना में विद्यार्थियों को इस उद्देश्य से विभिन्न भागों में बांट दिया जाता है। प्रत्येक वर्ग अपने संयोजक का चुनाव करके समस्या के विभिन्न पक्षों पर चर्चा होती है। अन्त में प्रत्येक संयोजक अपनी अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करता है तथा इससे सामहिक रिपोर्ट तैयार की जाती है।

इस विधि में अध्यापकों को निम्न बातें ध्यान रखनी चाहिए-

7. अधिक से अधिक कार्य सामूहिक रुप से वर्गों में करने चाहिए, तथा प्रत्येक विद्यार्थी को विचार व्यक्त करने का अवसर पदान करना चाहिए।

2. वातावरण प्रजातान्त्रिक होना चाहिए तथा प्रत्येक विद्यार्थी को अपने विचार अध्यक्ष को सम्बोधित करके व्यक्त करने चाहिए।

3. सभी विद्यार्थियों को विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। लेकिन विचार व्यक्त करने के लिए समय सीमा भी निर्धारित कर देनी चाहिए।

4. अध्यापकों को इसमें कम से कम विचार व्यक्त करने चाहिए और उन्हें विद्यार्थिरूों को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे विरोधी पक्ष के भी विचार ठीक से सुनें।

2.5.7 **सामाजिक अभिव्यक्ति पद्धति के गुण-**

7. विद्यार्थी विभिन्न वर्गों में बंटकर कार्य करना सीखते हैं तथा नया ज्ञान अर्जित करते हैं।

2. इससे उनकी मानसिक चिन्तन, स्मरण शक्ति, और तर्क का विकास होता है।

3. सभा या सदन के आयोजन का अनुभव भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही सहिष्णुता, सहयोग और सदभाव का विकास होता है।

4. यह विधि विद्यिार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार सीखने का अवसर देती है।

5. विद्यार्थियों में कुशल संचालन की क्षमता का विकास होता है।

8.6 स्रोत विधि

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में मूल सामग्री और मूल स्रोतों का प्रयोग बहुत उपयोगी होता है। इसमें ऐतिहासिक स्रोतों के साथ समुदाय में उपलब्ध स्रोतों के माध्यम से बहुत प्रभावी ढ़ंग शिक्षण किया जा सकता है। स्रोत विधि में विद्यार्थियों को प्राथमिक अनुभव होते हैं जिनसे विषय का बोध अच्छा होता है। स्रोतों को दो भागों में बांटा जा सकता है-

प्राथमिक स्रोत 2. द्वितीयक स्रोत

प्राथमिक स्रोत-विभिन्न इतिहास में उपलब्ध विभिन्न भौतिक अवशेष जैसे - ऐतिहासिक स्थल, सड़कें, पिरामिड, मानव अवशेष, कपड़े, भोजन, उपकरण, बर्तन, मिट्टी की बनी आकृतियां, भवन, मशीनें, फर्नीचर, हथियार, कलाएं, संग्रहालय, लेख, कहानियां, ऐतिहासिक इमारतें, मकबरे, सिक्के, मोहरें, भूदृश्य, मूर्तियां, ऐतिहासिक पेन्टिंग, आदि को प्राथमिक स्रोतों की श्रेणी में रखा गया है।

इसी प्रकार लिखित स्रोतों में संविधान, राजपत्र, न्यायालय के निर्णय, अधिकारिक दस्तावेज, आत्मजीवनी, पत्र, डायरी, सविंदा दस्तावेज, कार्यपत्र, वसीयत, लायसेन्स, शपथपत्र, कथन या भाषण, घोषणापत्र, प्रमाणपत्र, रसीदें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र, फिल्म, कैटालॉग, पुस्तकें, लेखा विवरण, विज्ञापन, चित्र, मानचित्र, पम्फलेट्स, पेन्टिंग, रिकॉडिंग, अनुसंधान रिपोर्ट आदि लिखित स्रोत आते हैं।

द्वितीयक स्रोत- द्वितीयक स्रोत वे स्रोत होते हैं जिनको उन व्यक्तियों द्वारा लिखा गया हो जोकि घटना के स्थान पर या समय पर मौजूद नहीं थे। बल्कि इनके द्वारा उन लोगों के अनुभवों या प्रतिवेदन का वर्णन किया होता है जोकि घटना के समाय और स्थान पर मौजूद थे या फिर जो किसी घटना में भागीदार थे। कई बार ऐसे स्रोतों को घटना के प्राथमिक विवरणों में रखा भी नहीं जाता है। इसलिए ये स्रोत बहुत महत्वपूर्ण नहीं होते हैं।

संसद द्वारा पास किया गया कोई कानून प्राथमिक स्रोत के रुप में गिना जाएगा जबकि समाचार पत्र में छपा इसका सारांश द्वितीयक स्रोत के रुप में लिया जाएगा। किसी आयोग द्वारा दी गयी रिपोर्ट प्राथमिक और किताब में छपे आंकडे और विषयवस्तु द्वितीयक आंकड़ों के रुप में माना जाएगा। एनसाइक्लापीडिया और किताबें द्वितीयक आंकड़ों की श्रेणी में आती हैं।

8.6.1 **स्रोत विधि का प्रयोग**

7. इस विधि को पाठ योजना के पूर्व संसाधनों के रुप में उपयोग किया जा सकता है। किसी ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण किया जा सकता है।

2. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सारांश या निष्कर्षों का उपयोग पाठ के शिक्षण के मध्य में प्रयोग किया जा सकता है।

3. विद्यार्थियों को पाठ शिक्षण के पश्चात भी दत्त कार्य दिया जा सकता है ताकि वे पाठ से जुड़े विभिन्न बिन्दुओं के बारे में आलोचनात्मक रुप से चिन्तन कर सकें।

8.6.2 **स्रोत विधि के गुण-**

7. इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकरणों के बारे में वास्तविकता और स्पष्टता का ज्ञान बढ़ता है।

2. यह विधि वस्तुनिष्ठता का भी विकास करती है।

3. यह विधि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए व्यावहारिक और प्रेरणादायक वातावरण का विकास करती है।

4. इससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि का विकास होता है। साथ ही विद्यार्थियों में जिज्ञासा को भी जगाती है।

5. सामाजिक विज्ञान से जुड़े विभिन्न विषयों पर अनुसंधान करने की पहल के लिए प्रेरित करती है।

6. सबसे महत्वपूर्ण बात इस विधि के बारे में ये है कि यह विद्यार्थियों को आंकड़ों का एकत्र करने के कौशल, इनकी प्रासंगिकता की समझ और इन्हे संगठित और व्यवस्थित करने की क्षमताओं का विकास करती है।

7. इसके प्रयोग से विद्यार्थियों को पर्याप्त मानसिक अभ्यास करने, सही ढ़ंग से सोचने, कल्पना करने, तुलनर करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का अवसर प्राप्त होता है।

8. यह विधि वास्तविक में स्रोतों को देखने से धीमी गति से सीखने वाले और पिछड़े विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि विकसित करती है।

8.6.3 **स्रोत विधि के दोष**

7. शिक्षकों को इस विधि के माध्यम से शिक्षण करने में सबसे बड़ी समस्या आवश्यक स्रोतो का उपलब्ध होना होती है।

2. विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण की कमी के कारण इन स्रोतों का अधिगम की दृष्टि से इनका उपयोग कर पाना बहुत कठिन हो जाता है।

3. यह विधि जटिल और तकनीकी है। इसमें यक समस्या यह भी आती है कि अधिकांश प्राचीन स्रोत संस्कृत, पालि, अरबी या फारसी और कुछ अंग्रेजी भाषा में हैं। इसलिए भाषा की वजह से भी कठिनाई आती है।

4. स्रोत विधि से शिक्षण करना काफी खर्चीला और अधिक समय लेने वाला होता है।

8.6.4 **स्रोत विधि को प्रभावशाली बनाने के उपाय-**

पुस्तकालयों में उपलब्ध संसाधन किताबों को पढने के लिए विद्यार्थियों के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए कुछ शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन किया जा सकता है। इस दौरान विद्यार्थियों को भ्रमण स्थल के बारे अपने अनुभवों और निष्कर्षों को लिखने को कहा जा सकता है। कुछ प्रमुख निष्कर्षों को विद्यालय के सूचनापट पर लगाया जा सकता है। कुछ उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों को कक्षा में प्रयोग में भी लाया जा सकता है।

8.7 योजना विधि

योजना विधि को डब्लू. एच. किलपैट्रिक ने विकसित किया था। इनके अनुसार योजना ऐसी सोउद्देश्य क्रिया है जो सामाजिक वातावरण में पूर्ण तन्मयता के साथ सम्पन्न की जाती है। इस विधि का विकास प्रयोजनवादी मनोविज्ञान सम्प्रदाय के कारण हुआ है। योजना विधि के निम्नलिखित पद हैं-

7. **समस्या या परिस्थिति उत्पन्न करना-** इस विधि का पहला चरण है कि विद्यार्थियों के समक्ष कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न होनी चाहिए। जिससे वे इस परिस्थिति के बारे में कार्य करन के लिए प्रेरित हों। परन्तु यह परिस्थिति विद्यार्थियों के मानसिक स्तर और रुचि के अनुरुप होनी चाहिए। ऐसी परिस्थिति कक्षा में परिचर्चा करके, मॉडल दिखाकर, वार्तालाप करके, कहानियों या घटनाओं के द्वारा, शैक्षिक भ्रमण के द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। इसी में से विद्यार्थी कोई एक समस्या अध्ययन के लिए चुन लेते हैं।

2. **योजना का चयन-** अध्ययन के लिए किसी परिस्थिति का चयन करने में यह बात अवश्य ध्ययन रखी जानी चाहिए कि समस्या विद्यार्थियों के स्तर के अनुरुप हो और वे सामाजिक प्रकृति की हों। इसका अध्ययन किया जा सके तथा इससे समबन्धित सामग्री, आंकड़े उपलब्ध होने चाहिए। इसके अतिरिक्त इसमें आने वाले खर्च को भी ध्यान में रखना चाहिए तथा विद्यार्थी इसके पश्चात किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकें।

3. **योजना का नियोजन-**मस्या का अध्ययन करने के लिए कौन सी विधि का प्रयोग किया जाए ताकि सही निष्कर्षों तक पहुंचा जा सके। साथ ही शिक्ष्क और विद्यार्थी मिलकर यह भी तय करते हैं कि समस्या के अध्ययन में कौन कौन सी चुनौतियां आएंगी तथा उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है? योजना के लिए किन साधनों की आवश्यकता होगी और कितना खर्च आएगा?

4. **योजना पर कार्य करना-** योजना का नियोजन करने के उपरान्त इसे क्रियान्वित करने का समय आता है। योजना के कार्यों को समूह के सभी विद्यार्थियों में अपनी रुचि के अनुसार बांट लेना चाहिए

ताकि योजना को क्रियान्वित करना आसान हो सके। शिक्षकों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सभी विद्यार्थियों को योजना का कुछ न कुछ कार्य अवश्य मिलना चाहिए और आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का मार्गदशन करना चाहिए ताकि वे कार्य करने के लिए प्रेरित रहें।

5. **योजना का मूल्यांकन-**योजना के पूरा होने के पश्चात योजना का मूल्यांकन आवश्यक है क्योंकि किन उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकी है और क्या कमी रह गयी है तथा योजना से क्या निष्कर्ष प्राप्त हुए?

8.7.7 **अच्छी योजना विधि के आवष्यक तत्व-**

7. योजना विद्यार्थियों के जीवन की दृष्टि से उपयोगी होनी चाहिए।

2. योजना को रुचिकर भी होना चाहिए ताकि विद्यार्थी उसके अध्ध्यन में रुचि ले सकें।

3. योजना विद्यार्थी जीवन के अनुसार मितव्ययी हो उसमें अधिक खर्च न हो।

4. योजना विद्यार्थियों की आयु, पाठ से सम्बन्धित, मानसिक स्तर, अभिवृत्तियों, योग्यताओं, रुचियों, वातावरणीय और मौसम सम्बन्धी कारकों के अनुरुप होनी चाहिए।

5. योजना विद्यार्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण हो अर्थात योजना न तो बहुत सरल हो और न ही बहुत कठिन हो।

6. योजना में विद्यार्थियों को समृद्ध अधिगम अनुभव मिलने चाहिए। योजना से विद्यार्थियों में चरित्र का प्रशिक्षण और सामाजिक सम्पर्कों के अनुभवों से शैक्षिक उद्देश्यों की भी पूर्ति होनी चाहिए।

7. योजना में विद्यार्थियों को अधिकतम क्रियाएं करने का अवसर मिलना चाहिए ताकि विद्यार्थी अधिक से अधिक अनुभवों को साझा करे सकेंगे।

8. संसाधनों की उपलब्धता योजना को लागू करने में बहुत महत्वपूर्ण है। योजना से जुड़े संसाधन या तो विद्यालय में या आस पास में उपलब्ध होने चाहिए।

9. योजना का पूरा करने में विद्यार्थियों में आपस में स्वतन्त्र रुप और सहयोग करके योजना को पूर्ण करने की की भावना होनी चाहिए और विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रुप से सक्रिय रहें।

8.7.2 **योजना विधि के गुण-**

7. योजना विधि अधिगम के नियमों पर आधारित होती हैं जैसे- तैयारी का नियम, अभ्यास का नियम एवं प्रभाव का नियम।

2. योजना विधि जीवन से सम्बन्धित होती है और सभी विषयों को सहसम्बन्धित करती है।

3. योजना विधि प्रजातान्त्रिक जीवन का प्रशिक्षण देती है।

4. योजना विधि अच्छी नागरिकता का भी प्रशिक्षण देती है।

5. योजना विधि श्रम को महत्व प्रदान करती है।

6. योजना विधि चरित्र निर्माण के साथ स्वानुशासित होना भी सिखाती है।

7. समस्या समाधान करने की क्षमताओं का विकास करती है।

8. स्वतन्त्र रुप से अधिगम करने का अवसर प्रदान करती है।

8.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा कक्षा कक्ष में अपनायी जाने वाली विधियों का अध्ययन किया| विभिन्न समय कालों में विकसित विधियां अलग अलग विषयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित की गयी हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक विधि की अपनी विशेषताएं और सीमाएं भी हैं। आपने प्रयोगशाला विधि, योजना विधि,व्याख्यान एवं वादविवाद विधियों का अध्ययन एवं उनके गुण दोषों का विवेचन इस इकाई में किया |

8.9 अभ्यास प्रश्न

7. सामाजिक अभिव्यक्ति विधि की व्याख्या कीजिए।

2. आपके अनुसार कौन सी शिक्षण विधि अनुदेशन के लिए उपयोगी है**?** और क्यों तर्क दीजिए**?**

इकाई-8 (II) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की युक्तियां और प्रविधियां

8(II).1 प्रस्तावना

8(II).2 उद्देश्य

8(II).3 कथन प्रविधि

8(II).4 उदाहरण प्रविधि
8(II).5 प्रश्न प्रविधि
8(II).6 कार्य निर्धारण प्रविधि
8(II).7 कहानी-कथन प्रविधि
8(II).8 क्षेत्र भ्रमण
8(II).9 स्पष्टीकरण प्रविधि
8(II).10 अवधारणा मानचित्रण
8(II).11 अभिक्रमित अनुदेशन
8(II).12 वर्णन विधि
8(II).13सारांश

8(II).7 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में शिक्षण को बोधगम्य और रोचक बनाने के लिए अनेक शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। शिक्षण-प्रविधियाँ अध्ययन को सजीव एवं प्रभावोत्पादक बनाती हैं। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में इन प्ररविधियों की महत्ता और बढ़ जाती है। क्योंकि इसमें सामाजिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का प्रस्तुतीकरण आवश्यक है। प्रस्तुतीकरण को इन प्रविधियों के अवलम्बन से सफल एवं सजीव बनाया जाता है। दूसरे, ये प्रविधियाँ ज्ञानार्जन में बहुत ही उपयोगी होती हैं। विभिन्न प्रविधियाँ विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाई जाती हैं। वस्तुतः इन सबका अभिप्राय ज्ञानार्जन को प्रभावशाली, ग्राह्य, बोधम्य एवं रोचक बनाना होता है। प्रविधियों का प्रयोग प्रायः स्वतन्त्र रुप से नहीं होता, वरन् किसी न किसी पद्धति के साथ प्रयोग किया जाता है।

8(II).2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास रहेगा कि आपको सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विभिन्न शिक्षण प्रविधियों के बारे अवगत करा सकें ताकि आपको शिक्षण विधियों के साथ साथ उपयुक्त प्रविधियों का भी अच्छा ज्ञान हो जाए। इसलिए इस इकाई में पाठ्यक्रम में वर्णित प्रविधियों का वर्णन किया जा रहा है। इससे आपको यह सुनिश्चित करने में आसानी होगी कि किस विधि के साथ कौन सी प्रविधि और कब उपयोगी सिद्ध होगी।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात अपने प्रकरण के अनुसार चयनित शिक्षण विधि के साथ उपयुक्त प्रविधि चुनने में आप को

कथन प्रविधि, उदाहरण प्रविधि, प्रश्न प्रविधि एवं कार्य निर्धारण प्रविधि का ज्ञान होगा|

कहानी-कथन प्रविधि, क्षेत्र भ्रमण एवं स्पष्टीकरण प्रविधि का ज्ञान होगा|

अवधारणा मानचित्रण एवं अभिक्रमित अनुदेशन का ज्ञान होगा|

पाठयक्रम में वर्णित कुछ प्रविधियां निम्न प्रकार हैं -

8(II).3 कथन प्रविधि

विद्यार्थियों की रुचियों तथा उनकी सीखने की प्रक्रिया को कथन प्रविधि द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। कथन का मुख्य लक्ष्य छात्रों को किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रविधि द्वारा वर्णित वस्तु या सामग्री को सरल, सुगम, स्पष्ट तथा सुबोध बनाया जा सकता है। प्रत्येक बात या तथ्य, प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों से नहीं निकलवाया जा सकता है। अतः प्रश्नोत्तर प्रविधि की पूर्ति 'कथन' द्वारा की जाती है। जब न प्रश्न पूछने से तथा न व्याख्या करने से हमारा मन्तव्य सफल होता है तब उस समय कथन हमारी सहायता करता है। सामाजिक शिक्षण के विषयों में इस प्रविधि का प्रयोग बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षक को इसका कुशलता एवं सतर्कता के साथ प्रयोग करना चाहिए। शिक्षक को इस प्रविधि का प्रयोग करते समय आपको निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(7) कथन बालकों की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिए तथा शिक्षक कथन करते समय उनके अवधान विस्तार का ध्यान रखे।

(2) कथन अधिक लम्बे न हों तथा शिक्षक को उनके बाहुल्य पर भी रोक लगानी चाहिए।

(3) कथन की भाषा तथा शैली छात्रों के मानसिक स्तर तथा आयु के अनुकूल होनी चाहिए।

(4) कथन करते समय शिक्षक को प्रश्नोत्तर तथा सहायक सामग्रियों का भी उपयोग करना चाहिए।

8(II).4 उदाहरण प्रविधि

सामाजिक विज्ञान में इस प्रविधि का बहुत महत्व है क्योंकि अध्यापक उदाहरण द्वारा पाठ को रोचक तथा बोधगम्य बनाने के में समर्थ होता है। इनके द्वारा सूक्ष्म विचारों को स्थूल रुप प्रदान करने में समर्थ

होता है। अतः शिक्षक इनके माध्यम से सूक्ष्म तथा जटिल तथ्यों को भी विद्यार्थियों के लिए स्पष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा सरल बनाने में सफल होता है। वर्तमान शिक्षा में इनके प्रयोग पर अधिक बल दिया जा रहा है। क्योंकि इनके द्वारा छात्रों की रुचि एवं अवधान को आकर्षित करने में सहायता मिलती है। दूसरे, ये छात्रों को ज्ञान-प्राप्ति के लिए प्रेरणा भी प्रदान करने में सहायक हैं। तीसरे, ये अनुभवों, को विकसित करने में भी सहायक हैं।

उदाहरणों के प्रकार- सामाजिक अध्ययन में सामान्यतः अग्रलिखित प्रकार के उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है-

(अ) मौखिक उदाहरण

मौखिक उदाहरणों के अन्तर्गत वे उदाहरण आते हैं जो शिक्षक द्वारा मौखिक रुप से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं। इनमें भाषा का प्रयोग किया जाता है। अतः इन्हें शाब्दिक उदाहरण भी कहा जाता है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षक इनका उपयोग सूक्ष्म तथा सामान्य सिद्धान्तों की व्याख्या करने के लिए करता है। इनका उपयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे सरल एवं बोधगम्य हों तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से सम्बन्धित हों।

(ब) प्रदर्षनात्मक उदाहरण

यह उदाहरण विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को विकसित करने में सहायक हैं। सामाजिक विज्ञान में इनका महत्वपूर्ण स्थान हैं, क्योंकि इनके द्वारा विद्यार्थियों का अवधान आकर्षित किया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रदर्शनात्मक उदाहरण के रुप में चित्र, प्रतिरुप, मानचित्र, चार्ट, ग्राफ आदि उदाहरणों का प्रयोग किया जाता है।

8(II).5 प्रश्न प्रविधि

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रश्न प्रविधि उपयोगी साबित होती हैं क्योंकि इसके द्वारा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। प्रश्नों का परम्परागत उद्देश्य विद्यार्थियों के ज्ञान को परखना होता था। परन्तु आधुनिक शैक्षिक प्रक्रिया में पाठ प्रस्तुतीकरण के दौरान प्रश्नों के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण प्रयोजनों की पूर्ति की जाती है। प्रश्नों के द्वारा कक्षा में निम्न प्रयोजनों को प्राप्त किया जाता है-

7. विद्यार्थियों में कार्य के प्रति कौतूहल एवं रुचि जाग्रत करना तथा सीखने की प्रक्रिया में इनके द्वारा पथ-प्रदर्शन करना।

2. विचार-प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना और निर्धारित कार्य के लिए प्रेरणा प्रदान करना।

3. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों तथा तात्कालिक समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करना और उनके कार्य के मुख्य बिन्दुओं की व्याख्या करना।

4. विद्यार्थियों के अर्जित ज्ञान तथा उन्नति को मापना तथा सामाजिक जीवन की जटिलताओं को समझने के लिए उनके मस्तिष्क को तैयार करना।

5. अन्वेषण तथा अनुसंधान के लिए प्रोत्साहित करना तथा प्रश्नों द्वारा तथ्यों के ज्ञान तथा अनुभवों को व्यवस्थित करने में सहायता प्रदान करना।

6. विद्यार्थियों की कमियों तथा कठिनाईयों का पता लगाना।

प्रश्नों के प्रकार

मानसिक प्रक्रियाओं के आधार के अनुसार हम प्रश्नों को निम्न प्रकार बांट सकते हैं। प्रश्नों द्वारा मानसिक प्रक्रियाएं उत्तर देते समय उत्तेजित एवं तीव्र होती हैं। शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर प्रश्नों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(अ) प्रस्तावनात्मक प्रश्न

(ब) विकासात्मक प्रश्न

(स) विचारात्मक या विचारोत्तेजक प्ररश्न

(द) पुनर्वृत्यात्मक प्रश्न

(य) परीक्षात्मक या बोध प्रश्न

(र) समस्यात्मक प्रश्न

प्रश्न प्रविधि में ध्यान देने योग्य बातें

7. आपके द्वारा किए गए प्रश्न निश्चित, सरल एवं संक्षिप्त होने चाहिए तथा प्रश्न साधारण एवं सरल भाषा में स्पष्ट रुप से प्रस्तुत करने चाहिए।

2. प्रश्नों की भाषा बालक के मानसिक स्तर के अनुकूल हो एवं प्रश्न का अर्थ स्पष्ट हो।

3. प्रश्न समस्त छात्रों को चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहित करे, चाहे वह एक ही से पूछा जाये।

4. सामाजिक विज्ञान के अध्यापन में जिन प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में आता हो, उनको प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। आपको कोई शिक्षण बिन्दु को शिक्षण करने के तुरन्त बाद ही उसी शिक्षाण् बिन्दु पर आधारित प्रश्न नहीं करना चाहिए।

5. आप जब भी प्रश्न करे तो कक्ष के लगभग सभी विद्यार्थियों तक प्रश्न पहुरंचने चाहिए। आपको ऐसे विद्यार्थियों से भी प्रश्न करने चाहिए जो कक्षा में रुचि नहीं ले रहे हैं।

6. प्रश्न करने के उपरान्त विद्यार्थियों को सोचने का समय दिया जाना चाहिए, तथा आपको पूरी कक्षा के सामने अपना प्रश्न रखने के पश्चात् किसी भी विद्यार्थी को उसका उत्तर देने के लिए कहना चाहिए।

8(II).6 कार्य निर्धारण प्रविधि

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कार्य-निर्धारण, एक प्रयोगात्मक प्रविधि में समझा जाता है, सामान्यतः इसका प्रयोग पाठ की समाप्ति के उपरान्त किया जाता है। लेकिन इसका प्रयोग पाठ के प्रारम्भ में भी हो सकता है। यह कई रुपों में निर्धारित किया जा सकता है। जैसे- कक्षा कार्य-निर्धारण, अवकाश के समय के लिए कार्य, प्रतिदिन के लिए कार्य, गृह-कार्य आदि। कार्य निर्धारण के दो आधार हैं- प्रथम, परम्परागत कार्य-निर्धारण जो पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित होता है तथा द्वितीय, आधुनिक कार्य-निर्धारण जो छात्रों की रुचियों, आवश्यकताओं तथा येाग्यताओं पर आधारित होता है। लेकिन हमारे देश में अध्यापक कार्य निर्धारण के प्रथम रुप को ही अपनाते हैं। इसलिए बहुत से शिक्षाविद इस प्रविधि की कड़ी आलोचना करत हैं। आलोचकों के अनुसार इस प्रविधि के प्रथम आधार का प्रयोग हेाने के कारण विद्यार्थी नीरस महसूस करने लगते हैं। लेकिन यह दोष कार्य-निर्धारण प्रविधि का नही है, बल्कि इस प्रविधि के समुचित ढ़ंग से प्रयोग न करने के कारण यह स्थिति उत्पन्न होती है। यदि कार्य-निर्धारण बालकों की रुचियों, आवश्यकताओं एवं प्रवृत्तियों के अनुसार दिया जाये तो ये दोष दूर हो सकते हैं।

सामाजिक विज्ञान में द्वितीय प्रकार के आधार को ग्रहण करके कार्य-निर्धारण करना चाहिए। आधुनिक कार्य-निर्धारण में छात्रों की योजनाओं, समस्याओं, इकाईयों की सूची में से अपनी योग्यता, रुचि तथा

आवश्यकता के अनुसार कार्य चुनना पड़ता है। इसका विकेन्द्रीकरण छोटे-छोटे प्रकरणों, क्रियाओं तथा मुख्य प्रतिवेदन कार्यों के रुप में किया जा सकता है। मुफॉत का कथन है, ''आज का कार्य-निर्धारण एक ऐसी क्रिया या कार्य है जिससे कार्य करने के सम्बन्ध में बालक या बालकों के वर्ग तथा शिक्षक में समझौता रहता है।''

उसने आगे लिखा है, ''कार्य-निर्धारण के लिए अभ्यास-पुस्तिकायें, गाइड सीट, स्क्रेपबुक्स तथा रुपरेखाओं को बनाने के लिए दी जायें। यदि पाठ्य-पुसतक के आधार पर ही कार्य-निर्धारण किया जाये तो वह ऐसा होना चाहिए। जिससे छात्रों को विचार करने के लिए अवसर प्रदान किये जायें। इस प्रविधि द्वारा सामाजिक अध्ययन का शिक्षक सीखने की प्रक्रिया को प्रभावोत्पादक बना सकता है।''

सामाजिक विज्ञान में आधुनिक कार्य-निर्धारण प्रविधि का उपयोग निम्नलिखित कार्य देकर किया जा सकता है-

(7) वायुमण्डल और मानव गतिविधियां।

(2) सहकारी बैंक तथा दुकान।

(3) समाज में लिंग विभेद के प्रभावों का अध्ययन करना

(4) कला के नमूनों का संग्रह।

(5) स्क्रेप बुक्स का निर्माण।

(6) मानचित्रों तथा रेखाचित्रों आदि का निर्माण।

(7) भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति।

(8) जाति प्रथा का समाज पर प्रभाव।

(9) भारतीय किसान की आर्थिक स्थिति।

अभ्यास प्रश्न

7.आप सामाजिक विज्ञान शिक्षण की उपरोक्त प्रविधियों में से किस प्रविधि को प्रभावशाली माने हैं और क्यों?

8(II).7 कहानी-कथन प्रविधि

यह प्रविधि छोटी कक्षाओं के लिए बहुतउपयोगी है। परन्तु अगर शिक्षक कहानी कहने में दक्ष है तो वह माध्यमिक स्तर पर भी कहानी कथन प्रविधि का प्रयोग कर सकता है। इसके साथ ही यह प्रविधि दिव्यांग विद्यार्थियों के कक्षाओं में बहुत प्रभावपूर्ण रहती है। यह प्रविधि विद्यार्थियों की कल्पनाप्रियता एवं जिज्ञासा की भावना को तृप्त करने में बहुत सहायक है। यह प्रविधि पूर्णत मनोवैज्ञानिक है और इससे विद्यार्थियों की कल्पनात्मक सोच से जुड़ी विभिन्न नैसर्गिक प्रवृत्तियों का विकास किया जा सकता है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षक इस प्रविधि के प्रयोग से समाज के विकास के इतिहास को मनोरंजक ढंग से विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षक को इस प्रविधि का प्रयोग करते समय आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(7) आपका कहानी कहने का ढंग रुचिकर, स्वाभाविक तथा भावपूर्ण होना चाहिए।

(2) कहानी की भाषा, शैली तथा विषय-वस्तु विद्यार्थियों के मानसिक स्तर, रुचि, व्यवस्था एवं स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार होनी चाहिए, तथा कहानी को क्रमानुसार सुनाया जाये।

(3) आपकी कहानी की विषय-वस्तु को विद्यार्थियों के सामाजिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित किया जाये तथा इसके अतिरिक्त, कहानी की विषय-वस्तु स्थानीय सन्दर्भों से युक्त अवश्य रखना चाहिए।

8(II).8 क्षेत्र या शैक्षिक भ्रमण

शिक्षण प्रक्रिया का उद्देश्य अधिगम के लिए उपयुक्त परिस्थिति उत्पन्न करना होता है जों कि विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार अनुभव प्रदान कर सके। कक्षा में विद्यार्थियों को वास्तविक अनुभव प्राप्त नहीं हो पाते हैं। इसलिए प्रत्यक्ष रुप से जानकारी न मिलने के कारण वे सूचनाओं को बहुत जल्दी भूल जाते हैं। सामाजिक विज्ञान में ऐसे कई प्रकरण होते हैं जिनका अध्ययन करने के लिए प्रत्यक्ष अनुभव उन्हें और बोधगम्य और सुगम बना देते हैं। किसी भी ऐतिहासिक स्थल के बारे में शिक्षण करना हो तो उस जगह जाकर उसका वास्तविक अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए विद्यार्थियों को ऐतिहासिक एवं भौगोलिक महत्व के स्थलों के भ्रमण पर ले जाते है। चूंकि क्षेत्र भ्रमण से विद्यार्थियों को प्रत्यक्षीकरण के अवसर मिलते है इसीलिए इस विधि को बहुत प्रभावशाली माना जाता है।

आप सब जानते हैं कि भ्रमण करना सबकों बहुत अच्छा लगता है। बचपन में आपकों भी भ्रमण करना अच्छा लगता होगा। विद्यार्थियों की इसी प्रवृति को शिक्षण अधिगम की दृष्टि से उपयोगी माना जाता

है। वैसे भी क्षेत्र भ्रमण मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है और अधिगम में इसके प्रयोग से प्रत्यक्षीकरण के अवसर प्राप्त होते हैं। विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में सीखते हैं।

क्षेत्र या शैक्षिक भ्रमण का नियोजन

7. भ्रमण का उद्देश्य विशिष्ट और पूर्व निर्धारित होना चाहिए।

2. भ्रमण पर निकलने से पहले सभी संस्थागत नियमों को ध्यान में रखकर सम्बन्धित अधिकारियों से अनुमति ले लेनी चाहिए।

3. नियोजन तिथि, विद्यार्थियों की संख्या, समय, आर्थिक व्यवस्था, और भ्रमण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

4. भ्रमण स्थलों की पूर्व जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए कि आवास, भोजन, मौसम, यातायात की सुविधाएं कैसी हैं? इसके साथ ही विद्यार्थियों की सुरक्षा के बारे मे भी पहले विचार कर लेना चाहिए।

5. विद्यार्थियों को भी स्पष्ट निर्देश होने चाहिए कि उन्हें क्या करना है और कैसे करना है। ताकि वे सही ढ़ंग से निरीक्षण कर सकें।

क्षेत्र या शैक्षिक भ्रमण के अनुप्रयोग

विद्याथियों को तैयार करना

शैक्षिक भ्रमण से पूर्व ही विद्यार्थियों को इसके बारे में बता देना चाहिए ताकि उनमें भ्रमणण् के दौरान सीखने के लिए उत्सुकता बनी रहे। और भी अच्छा होगा यदि शिक्षक शैक्षिक भ्रमण से पहले ही कक्षा में जिन स्थलों का भ्रमण करना है उनके चित्र, फिल्म, मानचित्र आदि को शिक्षण के दौरान उपयोग भी करे, जिससे बच्चों में स्थलों को जानने की जिज्ञासा बनी रहे।

शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्था करना-विद्यार्थियों को क्षेत्र भ्रमण से सम्बन्धित निर्देश पत्र अवश्य देने चाहिए तथा इनके उपयोग और प्रयोग करने की विधि भी बता देना चाहिए। आप निर्देशन पत्र को भ्रमण से पूर्व 4-7 दिन पहले तैयार कर सकते हैं, जब आपके भ्रमण आयोजन की योजना पूरी हो गयी हो। इसमें उन स्थलों के नाम एवं सम्बन्धित आवश्यक बातें लिखी होती हैं जिन्हें विद्यार्थी भ्रमण के दौरान देखेंगे। पहले से पता होने पर विद्यार्थी उन स्थलों के चित्र बना सकते हैं या फोटो ले सकते हैं या कुछ विशेष बातों का भी अवलोकन कर सकते हैं। तथा उनका वर्णन अपनी डायरी में लिख सकते हैं।

भ्रमण के समाय विद्यार्थियों के लिए भ्रमण स्थलों से सम्बन्धित तथ्यों, आंकड़ों एवं चित्र आदि एकत्र करने के लिए प्रेरित करत रहना चाहिए। समय समय पर अध्यापक को देखना भी चाहिए कि विद्यार्थी मुख्य बिन्दुओं को लिख रहे हैं या नहीं।

क्षेत्र या शैक्षिक भ्रमण पर परिचर्चा

शैक्षिक या क्षेत्र भ्रमण के बाद जितना जल्दी हो सके विद्यार्थियों से इसकी उपयोगिता पर वाद विवाद या वार्तालाप करना चाहिए। ताकि क्षेत्र भ्रमण से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं पर स्पष्ट चर्चा हो सके। विद्यार्थियों को मिले निर्देश पत्र कक्षा में अभ्यास का भी अवसर देते हैं। कक्षा में भ्रमण किए स्थलों से सम्बन्धित विषयों पर वाद विवाद भी आयोजित किया जा सकता है।

मूल्यांकन

क्षेत्र भ्रमण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जांच करने के लिए विद्यार्थियों का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। इससे विद्यार्थियों के ज्ञान, बोध और कौशल विकास को परख सकते हैं तथा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का निदान किया जा सकता है और तुरन्त ही उनके समाधान के लिए आप प्रयास कर सकते हैं।

क्षेत्र या शैक्षिक भ्रमण का महत्व

7. कक्षा शिक्षण रोचक और बोधगम्य हो जाता है क्योंकि विद्यार्थियों को वास्त्विक और प्रत्यक्ष अनुभवों से विभिन्न अवधारणाओं का बोध आसानी से हो जाता है।

2. प्राकृतिक, भौगोलिक, व मनुष्य द्वारा बनाई गई कृतियों से लगाव और उनके संरक्षण का भाव का विकास भी होता है।

3. विभिन्न स्थानीय भौगोलिक आकृतियों, उद्योग, इमारतों आदि को देखकर जीवन के लिए उपयोगी ज्ञान प्राप्त होता है।

4. निरीक्षण, कल्पना शक्ति, विश्लेषण, तर्क और निर्णय करने की क्षमता का विकास होता है।

5. समूह में कार्य करने की भावना का विकास होता है और प्राकृतिक और मानव निर्मित संसाधनों के संरक्षण के लिए भी विद्यार्थी प्रेरित होते हैं।

कमियां-

7. क्षेत्र भ्रमण में समय, धन, और शक्ति अधिक लगती है। इसलिए क्षेत्र भ्रमण को सार्थक होना बहुत जरुरी होता है।

2. कक्षा शिक्षण की निरन्तरता में बाधा उत्पन्न होती है और पाठ्यक्रम को शिक्षण प्रभावित होता है।

3. आर्थिक दृष्टि से कमजोर बच्चे क्षेत्र भ्रमण में भाग नहीं ले पाते हैं और इसका शैक्षिक लाभ नहीं उठा पाते हैं।

4. शैक्षिक उद्देश्य से भ्रमण को कई बार विद्यार्थी मनोरंजन की तरह ले लेते हैं और वे इसका शैक्षिक लाभ नहीं उठा पाते हैं।

8(II).9 स्पष्टीकरण प्रविधि

कई बार कक्षा में विभिन्न प्रत्ययों को समझाने के लिए उन्हें स्पष्ट करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए स्पष्टीकरण प्रविधि को अपनाया जाता है। इस प्रविधि में विषय वस्तु को क्रमबद्ध और विस्तृत रुप से रखा जाता है। स्पष्टीकरण प्रविधि में विस्तार पूर्वक वर्णन और तार्किक विवेचन की सहायता से विषयवस्तु को स्पष्ट किया जाता है। स्पष्टीकरण में विषयवस्तु के सभी बिन्दुओं को विशिष्ट रुप से समझा और समझाया जाता है। यहां पर विवरण और व्याख्या दोनों ही स्पष्टीकरण से भिन्न होते हैं। विवरण एक सहायक कथन के रुप में दिया जाता है तथा व्याख्या प्रकरण से सम्बन्धित जटिल और मुश्किल भागों के लिए की जाती है। जबकि में कुछ विशेष बातों या पक्षो ंपर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

जैसे- स्वास्थ्य में खनिजों की उपयोगिता के बारे में स्पष्टीकरण देना।

अच्छे स्पष्टीकरण के लिए आपको निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए-

7. समग्रता- आपको विषयवस्तु को सजीव ढ़ंग से प्रस्तुत करना चाहिए और इसके लिए आवश्यक है कि आपको सभी बिन्दुओं का ज्ञान भलीभांति हो। स्पष्टीकरण देते समय आपको विस्तृत विवरण उदाहरणों के साथ देना चाहिए।

2. उपयुक्तता-जिस विषयवस्तु का स्पष्टीकरण देना हो वह विद्यार्थियों के मानसिक स्तर, रुचि, योग्यता के अनुसार होना चाहिए।

3. सरल भाषा-स्पष्टीकरण की भाषा शुद्ध, सरल, बोधगम्य, मनोरंजक और स्पष्ट होनी चाहिए।

4. विशेषीकरण-स्पष्टीकरण देते समय आपको ध्यान रखना चाहिए कि यह विशेष पक्षों पर केन्द्रित होना चाहिए।

स्पष्टीकरण की कमियां

7. स्पष्टीकरण में केवल विशेष पक्षों पर ही ध्यान देना होता है और कई बार विशेष पक्षों का निर्धारण करना बहुत कठिन होता है।

2. आप बिना पूर्व तैयारी के स्पष्टीकरण को तार्किक क्रम में संगठित नहीं कर सकते हैं।

3. स्पष्टीकरण दिए जाने वाले विशेष पक्षों का निर्धारण करना आसान नहीं होता है।

4. स्पष्टीकरण देते समय व्यक्तिगत भिन्नता का ध्यान रखे बिना आप उपयुक्त स्पष्टीकरण नहीं कर सकते हैं।

स्पष्टीकरण प्रविधि का उपयोग करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

7. स्पष्टीकरण को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ को छोटी छोटी इकाइयों में विभक्त कर लेना चाहिए ताकि विद्यार्थी उसे बोधगम्य कर सकें।

2. स्पष्टीकरण अनुदेशन उद्देश्यों के अनुरुप होना चाहिए तथा इसकी भाषा सरल होनी चाहिए।

3. स्पष्टीकरण में विद्यार्थियों की शंकाओं और भ्रान्तियों का समाधान होना चाहिए। इसके लिए स्पष्टीकरण में उदाहरणों, चित्रों, एवं अन्य सहायक सामग्री को समावेश होना चाहिए।

4. स्पष्टीकरण के दौरान विद्यार्थियों उनमें तर्क विकसित करने के लिए उन्हें प्रश्न पूछने का अवसर देना चाहिए।

5. स्पष्टीकरण के विशेष पक्षों का निर्धारण पहले ही कर लेना चाहिए।

8(II).70 अवधारणा मानचित्रण

अवधारणा चित्र एक ऐसा चित्रात्मक उपकरण है जिसके माध्यम से हम सूचनाओं, प्रत्ययों, एवं अन्य विषयवस्तु को संगठित, संश्लेषण और सम्बन्ध स्थापित करते हैं। अवधारणा चित्र विषय वस्तु से

सम्बन्धित प्रत्ययों को वृत्ताकार या आयतकार घेरों में दर्शाते हैं, और आप घेरे में लिखे प्रत्ययों के मध्य सम्बन्ध को उनको जोड़ने वाली रेखा से प्रदर्शित कर सकते हैं। इस प्रकार हम विभिन्न प्रत्ययों के मध्य सम्बन्धों को चित्रात्मक रुप में प्रदशित करने की प्रक्रिया को अवधारणा चित्रण कहते हैं। निम्न चित्र में आपको समझाने के लिए अवधारणा चित्र दिया गया है-

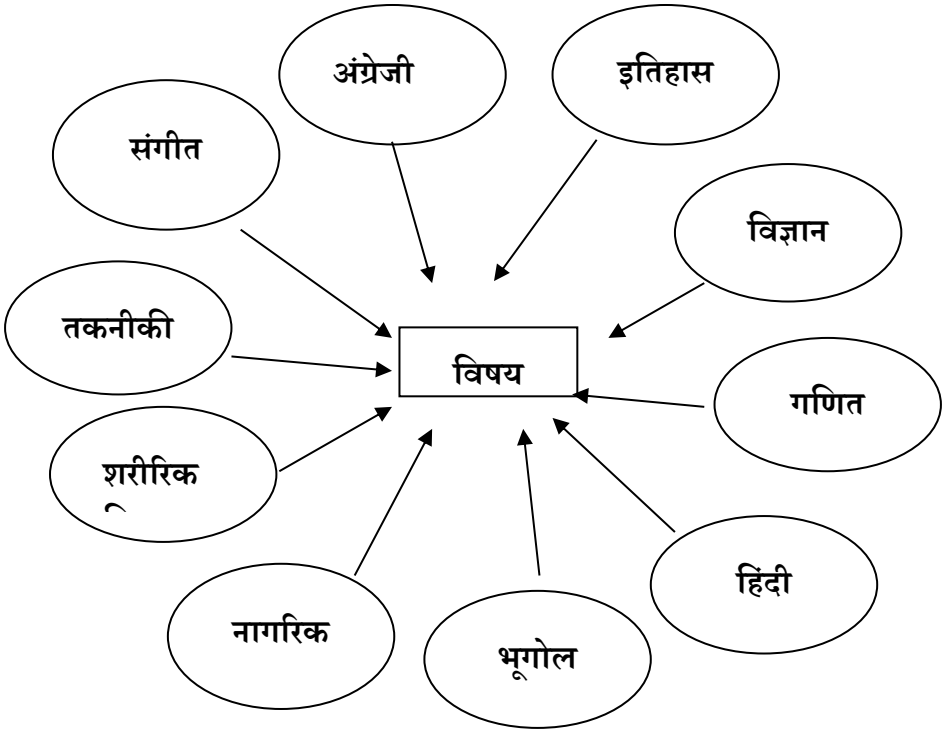

अवधारणा चित्र के प्रकार

मकड़ी अवधारणा चित्र- मकड़ी अवधारणा चित्र किसी एक विषय या प्रकरण के विभिन्न पक्षों की खोजबीन या जांच परख के लिए प्रयोग किया जाता है तथा यह विद्यार्थियों को विचारों को संगठित करने में सहायता प्रदान करता है। केन्द्र में स्थित चित्र आस पास बाहर की तरफ फैलने वाले उप-प्रकरणों को संगठित करना ऐसे चित्र से काफी आसान हो जाता है। मकड़ी अवधारणा चित्र का एक उदाहरण आपके लिए नीचे दिया गया है-

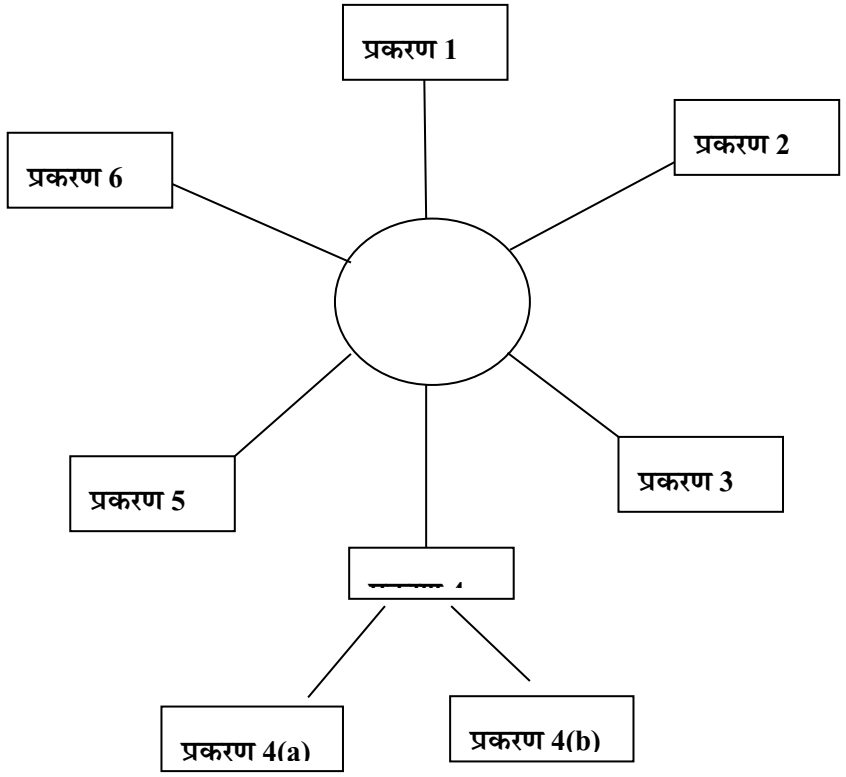

पदक्रम अवधारणा चित्र- पदक्रम अवधारणा चित्र में प्रकरण सम्बन्धी सूचनाएं घटते हुए महत्व के क्रम में प्रस्तुत की जाती है। विद्यार्थी क्रमशः दिए घेरों में सूचनाओं को लिखते जाते हैं। यह विद्यार्थियों को विभिन्न अवधारणाओं को समझने और सहसम्बन्धित करने में सहायता करता है। आकी सरलता के लिए इसका प्रतिरुप चित्र नीचे दिया गया है-

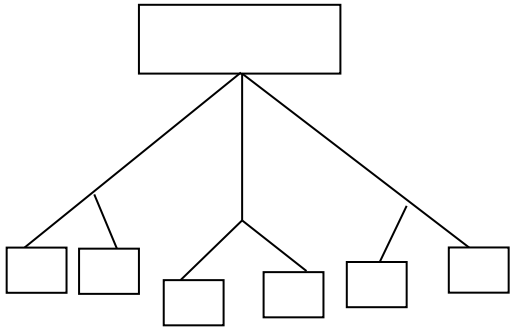

प्रवाह संचित्र या अनुक्रम चार्ट- प्रवाह अवधारणा चित्र में सूचनाएं रेखीय क्रम में व्यवस्थिम की जाती हैं। इसका उदाहरण स्वरुप चित्र नीचे दिया गया है।

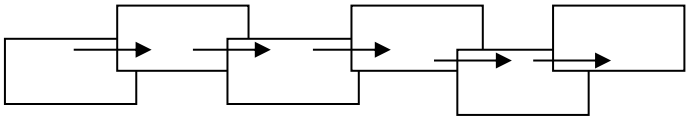

प्रणाली अवधारणा चित्र- प्रणाली अवधारणा चित्र में सूचनाएं एक विशेष रुप में रखी जाती है और इनके आपस में बहुत से सम्बन्ध को दर्शाने में सहायता करती हैं। इसका चित्र नीचे दिया गया है।

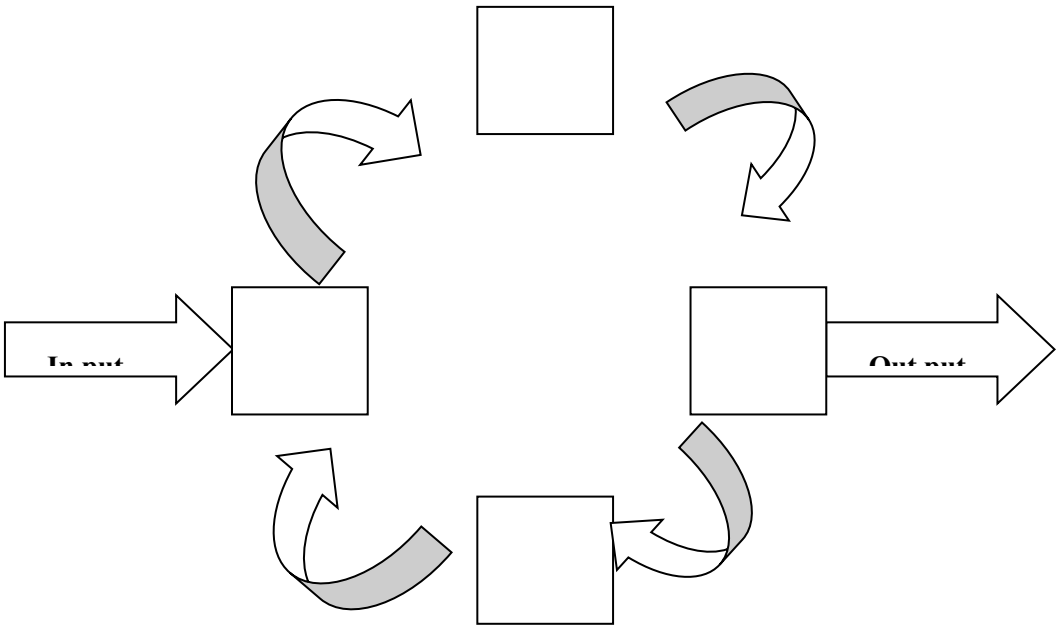

5. बहुआयामी (त्रिविमीय) अवधारणा चित्र-इस प्रकार के अवधारणा चित्रों का प्रयोग तब किया जाता है जब अवधारणाएं बहुत जटिल होती हैं। इसका उदाहरण निम्न प्रकार है-

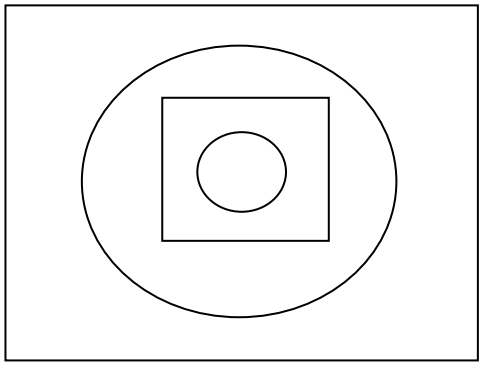

अवधारणा चित्र के लाभ

7. विभिन्न अवधारणाओं को विद्यार्थी आसानी से समझ सकते हैं और सहसम्बन्धित कर सकते हैं।

2. अपने विचारों को संगठित करके अन्य अवधारणाओं का चित्रण करने के लिए कल्पना कर सकते हैं।

3.विषय से सम्बन्धित बोध और स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि इसमें चित्रों का सहारा लिया जाता है तो जटिल अवधारणाएं भी काफी सरलता से समझी और याद रखी जा सकती हैं।

4. इससे शिक्षण और अधिगम बहुत आसान हो जाता है।

5. इससे विद्यार्थियों को प्रत्ययों का समझने में स्पष्टता होती है।

8(II).77 अभिक्रमित अनुदेशन

अभिक्रमित अधिगम के कई रुप हैं। इसमें विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु छोटे छोटे पदों मंे पढ़ने को दी जाती है तथ प्रत्येक पद के साथ उसे अनुक्रिया लिखनी होती है और इसी अनुक्रिया से वह नया ज्ञान सीखता है। और विद्यार्थी को पढ़ने के साथ उस अनुक्रिया की पुष्टि भी करनी होती है। यदि अनुक्रिया सही होती है तो उसे पुनर्बलन मिलता है।

अभिक्रमित अनुदेशन के नियम

स्किनर के अभिक्रमित अनुदेशन में पांच नियम बताए गए हैं जोकि निम्न प्रकार है-

7. छोटे पदों का नियम
2. तत्पर अनुक्रिया का नियम
3. तत्कालीन पुष्टि का नियम
4. स्वतः अध्ययन का नियम
5. विद्यार्थी अध्ययन आलेख का नियम

अभिक्रमित अनुदेशन का उपयोग

अभिक्रमित अनुदेशन का प्रमुख रुप से ज्ञानात्मक पक्ष के विकास के लिए करते हैं। इस विधि द्वारा नियमों, प्राथमिक तथ्यों, तथा अधिनियमों को बोध सरलता से कराया जा सकता है। इसके द्वारा

भावात्मक पक्ष का विकास नहीं किया जा सकता है। यह विधि पूरी तरह से व्यक्तिगत अनुदेशन पर आधारित है।

अभ्रिकमित अनुदेशन की कमियां

7. इसका प्रयोग सभी विषयों के लिए नहीं किया जा सकता है। इतिहास विषय के लिए यह उपयुक्त नहीं है।

2. इसका निर्माण करना कठिन है। इसके लिए अच्छा प्रशिक्षण और अनुभव की आवश्यकता होती है।

3. इसके द्वारा भावात्मक और कौशलात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकती है।

4. विद्यार्थियों को पढ़ने के बाद अनुक्रिया को लिखने और फिर अनुक्रिया की पुष्टि करनी होती है।

8(II).72 वर्णन विधि

वर्णन प्रविधि का प्रयोग किसी घटना, दृश्य, या किसी वृतान्त या किसी नियम का विस्तारपूर्वक व्याख्या के लिए किया जाता है। भाषा के शिक्षण द्वारा वर्णन की योग्यता विकसित की जा सकती है और आपके विद्यार्थी भाषण, निबन्ध आदि के अभ्यास से वर्णन करने के कौशल को विकसित कर सकते हैं। इसका प्रयोग करने के लिए आपको निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिए-

7. वर्णन की शैली- वर्णन करते समय उद्दीपन परिवर्तन अर्थात भावों में उतार चढ़ाव, संकेतों उचित एवं रोचक व अर्थपूर्ण वाक्यों का गठन करना और शुद्ध व सरल भाषा का प्रयोग करना ही वर्णन की शैली को प्रभावित बनाते हैं।

2. वर्णन की उपयुक्तता- वर्णन विद्यार्थियों की दृष्टि से उनकी रुचि और मानसिक योग्यता के अनुसार होना चाहिए।

3. पूर्णत:- वर्णन करते समय इस बात का ध्यान में रखना चाहिए कि आप जो भी वर्णन कर रहे हैं उसमें सम्पूर्णता हो और एक सूत्र में वर्णन का अर्थ विद्यार्थी समझ सकें।

वर्णन की कमियां

वर्णन प्रविधि का प्रयोग सभी विषयों के लिए नहीं किया जा सकता है। इस दृष्टि से वर्णन की कई सीमाएं हैं-

7. वर्णन की भाषा और विषयवस्तु उपयुक्त और रोचक न होने पर इसमें नीरसता आ जाती है।

2. इसमें शिक्षक अधिक और विद्यार्थी कम सक्रिय होते हैं।

3. वर्णन में समय अधिक लगने की सम्भावना रहती है।

4. वर्णन को विषय पर केन्द्रित रखना भी बहुत मुश्किल होता है।

5. वर्णन को प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करने के लिए शिक्षक को वर्णन को प्रभावपूर्ण बनाने की कला आनी चाहिए।

8(II). 73सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने सामाजिक विज्ञान शिक्षण में शिक्षण को बोधगम्य और रोचक बनाने के लिए अनेक शिक्षण प्रविधियों का अध्ययन किया है। कथन प्रविधि का मुख्य लक्ष्य छात्रों को किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रविधि द्वारा वर्णित वस्तु या सामग्री को सरल, सुगम, स्पष्ट तथा सुबोध बनाया जा सकता है। अध्यापक उदाहरण विधि द्वारा पाठ को रोचक तथा बोधगम्य बनाने के में समर्थ होता है। इनके द्वारा सूक्ष्म विचारों को स्थूल रुप प्रदान करने में समर्थ होता है। कहानी कथन प्रविधि छोटी कक्षाओं के लिए बहुत उपयोगी है। परन्तु अगर शिक्षक कहानी कहने में दक्ष है तो वह माध्यमिक स्तर पर भी कहानी कथन प्रविधि का प्रयोग कर सकता है। इसके साथ ही यह प्रविधि दिव्यांग विद्यार्थियों के कक्षाओं में बहुत प्रभावपूर्ण रहती है।

अभ्यास प्रश्न

7. अवधारणा चित्रण से आपका क्या तात्पर्य है? इसके प्रकारों का वर्णन कीजिए।

2. क्षेत्र भ्रमण की अधिगम में क्या उपयोगिता है? बताइए।

इकाई–9 शिक्षण उपागमों और सामग्री में अनुकूलन

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 दिव्यांग विद्यार्थियों के शिक्षण उपागम में अनुकूलन
9.3.7 सहयोग आधरित अधिगम
9.3.2 सहकार आधरित अधिगम
9.3.3 सम-कक्षी शिक्षण
9.4 अनुदेशन उद्देश्यों के निर्धारण में अनुकूलन
9.5 विषयवस्तु के चयन में अनुकूलन
9.6 वातावरण एवं सामग्री में अनुकूलन
9.7 पाठ योजना में अनुकूलन
9.8 सारांश
9.9 निबंधात्मक प्रश्न

9.7 प्रस्तावना

दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा के सन्दर्भ में अनुकूलन का तात्पर्य सामान्यतरू उनकी शैक्षिक आवश्यकतायों को पूरा करने के लिए आकलनए सामग्रीए पाठ्यक्रम और कक्षा वातावरण में समायोजन करने से हैद्य ताकि ये विद्यार्थी अपने शैक्षिक अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंद्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आपको कक्षा के लिए अनुदेशन उद्देश्यों को निर्धारित करने के समय से ही ये ध्यान रखना होगा की आपकी कक्षा में कुछ दिव्यांग बच्चे हैं जिनकी अधिगम आवश्यकताएं अन्य बच्चों से काफी अलग होती हैंद्य इसके लिए सबसे पहले कक्षा के ऐसे दिव्यांग बच्चों की कठिनाइयों और उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं का आकलन करना चाहिए। उसके पश्चात ही आप ऐसे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ समावेशी कक्षा के अनुदेशन उद्देश्यों का सफलतम निर्धारण करके उनके लिए उपयुक्त योजना बना सकेंगे। हालांकि शिक्षण योजना से पहले बड़े स्तर पर पाठ्यक्रम में भी अनुकूलन करना आवश्यक होता है। लेकिन कक्षा शिक्षक सीधे नहीं जुड़े होते हैं। इसलिए पाठ्यक्रम में अनुकूलन करने या परिवर्तन करने के लिए वे केवल सुझाव दे सकते हैं। परन्तु शिक्षण योजना बनाने, विषयवस्तु का चयन करने, शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन करने, शिक्षण विधियों और प्रविधियों के चयन करने में, मूल्यांकन करने में और कक्षा वातावरण को दिव्यांग बच्चों के भी अनुकूल बनाने में परिवर्तन करने होते हैं।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई में हमारा प्रयास रहेगा कि आपको शिक्षण उपागम और सामग्री में क्या अनुकूलन दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं अनुसार किया जा सकता है। इस इकाई के अध्ययन करने के प्श्चात आप ये समझ पाएंगे कि किन किन शिक्षण अधिगम विधियों का प्रयोग किया जाए ताकि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वे उपयोगी सिद्ध होकर उनके अधिगम बढ़ सके।

9.3 दिव्यांग विद्यार्थियों के शिक्षण उपागम में अनुकूलन

दिव्यांग विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए अनुकूलन करने में शिक्षण विधियों और प्रविधियों में अनुकूलन करना होगा। इस दृष्टि से अगर हम देखें तो सबसे अधिक उपयुक्त अधिगम विधियां या प्रविधियां जो इन विद्यार्थियों के लि आवश्यक हैं वह सहयोग या सहकार प्रत्यय पर आधारित हैं। इनमे से प्रमुख हैं-

7. सहयोग आधारित अधिगम

2. सहकार आधारित अधिगम

3. साथी या सहपाठी या सम-कक्षी शिक्षण

9.3.1 सहयोग आधरित अधिगम

सहयोग प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण प्रत्यय के रुप में उपलब्ध रहता है। इसके आधार पर हम विभिन्न कार्य पूर्ण करते हैं और सीखने में भी यह बहुत आवश्यक होता है। आप सभी को अपने बचपन की कक्षाओं के किस्से याद होंगे कि किस तरह आप अपने मित्रों के साथ सहयोगात्मक अन्तर्क्रियाएं करते थे। सहयोग में हमेशा दूसरे के विकास का मन्त्र छिपा रहता है।

जॉन कमेनियस के अनुसार शिक्षकों को ऐसी विधि अपनानी चाहिए कि जिससे शिक्षक कम पढ़ाए लेकिन विद्यार्थी अधिक सीखे। इसलिये आपको एक शिक्षक हेाने के नाते ऐसी अधिगम परिस्थितियां और अधिगम अनुभव निर्मित करने चाहिए जोकि विभिन्नता से पूर्ण अधिगमकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। हमें प्रेरणादायक अधिगम वातावरण सृजित करना चाहिए और बच्चों को अपनी अधिगम शैली खुद चुनने देना चाहिए अर्थात इसमें लचीलापन रखना चाहिए।

टेड (7996) के अनुसार सहयोग एक दर्शन है जिसमें सहकार किन्हीं लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आन्तरिक संरचना का आधार है तथा यह कोई प्रविधि नहीं है। सहयोग आधारित अधिगम एक बहुत बडा प्रत्यय या शब्दावली है जिसके अन्दर ऐसी सभी शैक्षिक उपागमों को शामिल करते हैं जोकि विद्यार्थियों और शिक्षकों के सहयोग निर्मित होती हैं। यह पूर्णतः विद्यार्थी केन्द्रित है। इसमें बच्चों के

कार्य करने और उनके अन्तर्क्रिया करने पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जाता है तथा सीखने सम्बन्धी सभी गतिविधियां समूह मे ही सम्पन्न करनी होती हैं।

लाभ

7. यह अच्छा वातावरण प्रदान करता है क्योंकि यहां पर प्रतिस्पर्धा के वजाए सहयेग पर ध्यान दिया जाता है।

2. सहयोग दूसरे की सहायता करने का संयुक्त प्रयास होता है।

3. इसमं मानक निष्पादन होता है जिससे मूल्यांकन व्यस्था में सुधार होता है।

4. किसी भी समस्या पर संयुक्त रुप से उसका हल ढूढ़ने का प्रयास किया जाता है।

5. सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करता है।

दोष

7. समूहों में एक दूसरे के प्रति हीन भावना बन जाती है तथा इसमें दृष्टिकोण व्यापक हो सकता और कई बार नहीं भी हो सकता है।

2. समूह में ईर्ष्या भाव विकसित होने की सम्भावना रहती है।

3. दो समूहों के मध्य कई बार आपसी समझदारी से नहीं होने से समझा नहीं बन पाती है।

9.3.2 सहकार आधरित अधिगम

सहकार आधारित अधिगम कोई नया प्रत्यय नहीं है, यह सहयोग आधारित अधिगम छाता समूह के अन्तर्गत आता है। रोमन दार्शनिक सेनेका ने सहकार अधिगम का पक्ष लेते हुए कहा है कि जब तुम पढ़ाओगे तो तुम दोगुना सीखोगे। जॉन कमेनियस ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा कि सहकार आधारित अधिगम में सीखने वाला और सिखाने वाला दोनों ही सीखते हैं। जॉन डॅयूवी ने भी अपने अनुदेशन प्रोजेक्ट में सहकार अधिगम समूहों को शामिल किया था। इस प्रकार के अधिगम में बच्चे एक निर्धारित अनुदेशन परिस्थिति में छोटे छोटे समूहों मिल जुलकर कार्य करते हुए सीखने का अवसर मिलता है। इसमें निम्नलिखित गमिविधियों को शामिल किया जा सकता है-

सम-कक्षी शिक्षण

बात चीत दर्शाते कार्डस

थिंक-पेयर-शेयर

भूमिका निर्वाह

जिगशॉ

मुक्त वार्तालाप

समस्या समाधान

कहानी कथन

सहकारी परियोजना

ब्रेन स्टॉर्मिंग

वाद-विवाद करना, कथन करना, वर्णन करना एवं व्याख्या करना

ओपिनियन को साझा करना

लाभ

7. इसमें सभी विद्यार्थियों का विकास होने के साथ और एक दूसरे को परस्पर प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

2. सामाजिक कोशलों का विकास होता है और संकोच भी दूर होता है।

3. समूह में प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने कार्य के लिए जबाबदेह रहे।

4. विद्यार्थी समायोजन करना भी सीखते हैं तथा उनमें आत्मविश्वास के वृद्धि भी होती है।

5. इससे नेतृत्व क्षमता का विकास भी होता है।

दोष

7. इस उपागम में विद्यार्थियों द्वारा समय दुरुपयोग कि सम्भावना बनी रहती है।

2. भाषा शिक्षण के मुकाबले इसमें सामाजिक कौशलों पर अधिक जोर होता है।

3. विद्यार्थियों को विषय का गहन ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है।

4. समूह में आपसी ताल मेल बनाए रखना कई बार मुश्किल होता है।

9.3.3 सम-कक्षी शिक्षण

समकक्षी शिक्षण में एक कक्षा का विद्यार्थी अपनी ही कक्षा के किसी अन्य विद्यार्थी को पढ़ाता है। जब शिक्षक कई बार बच्चों पर कक्षा में विशेष ध्यान नहीं दे पाता है, या किसी विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी का पढ़ाने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

समकक्षी शिक्षण के उद्देष्य

7. इसका उद्देश्य होता है कि विद्यार्थी आत्म निर्भर होकर सोचे और कार्य करे।

2. सहकार का कार्य करके समाज को बेहतर बनाना।

3. इससे शिक्षण सुलभ और सुविधाजनक बन जाता है।

4. अधिगम के लिए स्वतन्त्र वातावरण की व्यवस्था करना।

लाभ

7. समकक्षी शिक्षण लेने वाले विद्यार्थी अपनी पढाई में सुधार कर लेते हैं।

2. बिना किसी परेशानी के वे अपनी समस्यों के हल का समाधान कर सकते हैं।

3. परस्पर निर्देशन और सुझावों से अपनी समस्याएं हल कर लेते हैं।

4. समकक्षी शिक्षण देने वाले विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ता है।

5. कई शिक्षण प्रदान करने वाले विद्यार्थी शिक्षण में अपनी रुचि विकसित कर लेते हैं।

6. शिक्षको का भी कार्य कम हो जाता है।

दोष

7. कक्षा में अधिक संख्या होने पर समकक्षी द्वारा शिक्षण सम्भव नहीं होता है।

2. विद्यार्थी और शिक्षकों में कई बार मतभेद हो जाते हैं।

3. समकक्षी शिक्षकों को प्रशिक्षण देना कठिन कार्य होता है।

9.4 अनुदेशन उद्देष्यों के निर्धारण में अनुकूलन

जिस कक्षा के लिए आप शिक्षण करने की योजना बना रहे हैं उसके विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को केन्द्र में रखते हुए अनुदेशन के लिए उद्देश्यों को संक्षिप्त, स्पष्ट और सरल रुप में रखना चाहिए। ताकि उनके लिए अधिगम आसान हो सके। क्योंकि उद्देश्यों के संक्षिप्त, स्पष्ट और सरल होने से दिव्यांग बच्चों के लिए प्रत्यय बोधगम्य हो जाते हैं। अनुदेशन उद्देश्यों के संक्षिप्त और स्पष्ट होने से विषयवस्तु छोटे खण्डों में विभाजित हो जाती है। उद्देश्यों के निर्धारण से सहायक शिक्षण अधिगम सामग्री के चयन के लिए भी दिशा मिलती है।

9.5 विषयवस्तु के चयन में अनुकूलन

विषयवस्तु में अनुकूलन करने के लिए शिक्षकों को उसे छोटे और सरल भागों में बांटा जा सकता है। कुछ जटिल प्रकरणों के विभाजन के बाद भी दिव्यांग बच्चों के साथ उनकी कक्षा के साथी बच्चों को साथी शिक्षक की भूमिका में रखा जा सकता है। ताकि वे भी दिव्यांग बच्चों को सीखने में सहयोग कर सकें। विषयवस्तु का विश्लेषण करने से पाठय सामग्री को आप दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक कठिनाई के अनुसार बांट सकते हैं।

9.6 वातावरण एवं सामग्री में अनुकूलन

शिक्षण अधिगम सामग्री में अनुकूलन करके शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी निशक्तता की प्रकृति और गम्भीरता के अनुसार सम्बन्धित पाठ के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री को अनुकूलित किया जा सकता है। जैसे- अगर आपकी कक्षा में दृष्टि निशक्त और श्रवण निशक्त दिव्यांग बच्चे हैं तो फिर आपको इन दोनो वर्ग को ध्यान मे ंरखकर दृश्य और श्रव्य सामग्री का प्रयोग करने पर जोर देना चाहिए। क्योंकि दृष्टि निशक्त दिव्यांग बच्चों के लिए श्रव्य सामग्री अधिक उपयोगी होगी तथा श्रवण निशक्त दिव्यांग बच्चों के लिए दृश्य सामग्री उपयुक्त होगी और सम्बन्धित प्रत्यय स्पष्ट हो सकेंगे। वर्तमान समय में सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी की सहायता से शिक्षण अधिगम सामग्री में अनुकूलन और भी आसान है। सी.ई.आई.टी. और एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कई वीडियों कार्यक्रमों को भी प्रयोग किया जा सकता है। लेकिन अगर कोई दिव्यांग व्यक्तिगत शैक्षिक योजना के अन्तर्गत आता है तो फिर उसके लिए और अधिक अनुकूलन की आवश्यकता होगी। जिससे विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ सके और वह अपने अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। इसे अतिरिक्त और भी अनुकूलन किए जा सकते हैं-

कम्प्यूटर का प्रयोग ऐसे विद्यार्थियों की अधिगम सहायता के लिए अधिक से अधिक करना चाहिए। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कार्य निर्धारण कम रखना चाहिए।

अधिगम समूहों में भी परिवर्तन करते रहना चाहिए।

इसके साथ ही शिक्षण विधियों के प्रयोग में यह ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी अधिक से अधिक सहयोगात्मक भागीदारी करें।

नोट टेकिंग गाइड की सहायता ली जा सकती है।

कक्षा के किसी साथी विद्यार्थी के साथ अधिगम की दृष्टि से जोड़ी बनाना भी उपयोगी होता है।

विद्यार्थी की निशक्तता की प्रकृति और गम्भीरता के आधार पर सहायक तकनीकी उपकरणों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

बड़े छापे वाली मुद्रित सामग्री का प्रयोग करना चाहिए तथा टेप्ड या रिकाडिंग की गई पुस्तको को सुनने का अवसर देना चाहिए

सहकारी अधिगम प्रविधियों का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

दिए गए कार्याेंं को पूरा करने के लिए दिव्यांग विद्यार्थियों की निशक्तता के अनुरुप उन्हें समय प्रदान करना चाहिए।

दिव्यांग विद्यार्थियों को दिए गए कार्य की कठिनाई का स्तर भी उनकी निशक्तता के अनुरुप निर्धारित किया जा सकता है।

दिव्यांग बच्चों को दिया जाने वाला अधिगम सहयोग भी आवश्यकतानुसार कम ज्यादा किया जा सकता है।

इसी प्रकार दिव्यांग बच्चे की अधिगम क्षमता के अनुरुप ही अधिगम विषयवस्तु, शब्दावली, अर्थ, प्रत्ययों की संख्या एवं आकार को निर्धारित किया जाए।

दिव्यांग बच्चों की अधिगम गतिविधियों में सहभागिता की मात्रा को भी ध्यान में रखना चाहिए। अर्थात जो कार्य वह सहभागी होकर कर सकते हैं उतना ही कार्य करने देना चाहिए।

दिव्यांग विद्यार्थियों से अधिगम उद्देश्यों या परिणामों की अपेक्षा में भी अनुकूलन किया जा सकता है। जैसे- सामाजिक विज्ञान विषय में एक विद्यार्थी को राज्यों के नाम लिखने को जबकि अन्य विद्यार्थियों को राज्यों के नाम और उनकी राजधानी के नाम लिखने को भी कहा जा सकता है।

अधिगमकर्ताओं की अधिगम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्नतापूर्ण अनुदेशन और सामग्री उपलब्ध करानी चाहिए।

प्रभावपूर्ण अधिगम के लिए श्रेष्ठ अधिगम वातावरण का निर्माण करना अति आवश्यक होता है। क्योंकि अधिगम परिस्थितियों के लिए भौतिक संसाधनों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए दिव्यांग बच्चों के लिए भौतिक वातावरण में अनुकूलन करना भी आवश्यक हो जाता है। कक्षा कक्ष की भौतिक सुविधाएं भी पाठ योजना के क्रियान्वयन में अहम भूमिका निभाती हैं। जैसे-प्रकाश, तापमान, वायु तथा कक्षा के स्तर के अनुरुप उसकी सजावट, आई.सी.टी. सुविधाएं, उत्तम श्यामपट्ट आदि। कक्षा का आरामदायक फर्नीचर, कक्षा में लगे शैक्षिक उपकरण एवं बाधामुक्त वातावरण अधिगम के लिए बच्चों के ध्यान को आकर्षित करता है। अगर दिव्यांग बच्चों के अनुसार कक्षा में वातावरण बाधामुक्त नहीं है तो बच्चों की रुचि पढ़ने में नहीं बन पाएगी। कक्षा के भौतिक वातावरण को अधिक से अधिक अधिगम गतिशीलता बनाए रखने वाला होना चाहिए जिससे शिक्षक को अपना पाठ क्रियान्वित करने में आसानी हो और विद्यार्थियों को अधिगम में। कक्षा में दिव्यांग बच्चों के बैठने का क्रम इस प्रकार होना चाहिए कि शैक्षिक कठिनाई महसूस करने वाल बच्चे को परेशानी न हो।

अनुदेशन को प्रभावशाली बनाने के लिए अधिगम विद्यार्थियों की अक्षमताओं या बाधाओं के अनुरुप पाठ योजना में परिवर्तन करने चाहिए। कक्षा में सामान्य बच्चों को मिलाकर एक जैसी अक्षमता वाले बच्चों को सामूहिक रुप से अधिगम में भागीदारी करने को प्रेरित किया जा सकता है। ऐसी परिस्थितियों में टोली शिक्षण, साथी शिक्षण, सहयोगपूर्ण अधिगम एवं सहकारी अधिगम बहुत प्रभावी हो सकता है। दिव्यांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार उन्हें स्व-अध्ययन सामग्री प्रदान की जा सकती है। वर्तमान में शिक्षकों के लिए अत्याधुनिक शैक्षिक तकनीकी के विकल्प उपलब्ध हैं। जैसे- कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टेलीविजन, रेडियो, ऑडियो और वीडियो सी.डी. एवं डी.वी.डी., स्मार्ट मोबाइल फोन, पेनड्राइव, ब्लॉग, सामाजिक जाल स्थल, आभासी कक्षाएं, एन.सी.आर.टी. और सी.आई.ई.टी. द्वारा निर्मित ऑडियो और वीडियो कार्यक्रम, यू-टयूब, यू-टयूब किड्स जैसे न जाने कितने संसाधन आ गए हैं, जिनका उपयोग शिक्षक अपनी कक्षा में कर सकते हैं।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कई ऐसे सॉफ्टवेयर बन चुके हैं कि वे कम्प्यूटर की स्क्रीन पर आने वाले शब्दों को स्पीकर के माध्यम से लोगों को बोलकर बता सकते हैं, कई वेवसाइट्स पर लिखा भी होता है स्क्रीन रीडर। आई.सी.टी. संसाधनों की वर्तमान कक्षा में बहुत उपयोगिता बढ़ गयी है और विशेषकर दिव्यांग बच्चों के सन्दर्भ में ये और भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। इनके उपयोग से दिव्यांग बच्चे अपनी अधिगम गति से सीखते हैं। दिव्यांग बच्चों को एक और सबसे बड़ी कठिनाई का सामना करना होता है और वो है कार्य को पूरा करने में लगने वाला समय। इसलिए अनुदेशन के दौरान या उसके पश्चात दिव्यांग बच्चों को अपना कार्य पूरा करने या विभिन्न प्रत्यय सीखने समझने के लिए अतिरिक्त समय की व्यवस्था की जा सकती है।

रुचि के आधार पर भी शैक्षिक गतिविधियों की प्राथमिकता तय की जा सकती है अर्थात आवश्यकतानुसार समय सारिणी में लचीलापन रखा जा सकता है ताकि अनुदेशन के लिए वातावरण मनोवैज्ञानिक आधारों पर निर्मित हो सके। कक्षाओं/विद्यालयों में भाषा की कठिनाई का सामना करने वाले विद्यार्थियों के लिए व्याख्याकर्ता, नोट टेकर आदि सहयोगी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इनकी सहायता भी शिक्षकों को लेनी चाहिए।

9.7 पाठ योजना में अनुकूलन

सामान्य रुप से दिव्यांग बच्चों की सभी शैक्षिक आवश्यकताओं को समावेशी कक्षा में पूरा करने के लिए सम्बन्धित विषय शिक्षक को अपनी पाठ योजना में भी अनुकूलन करने चाहिए। विषयवस्तु का समुचित विशलेषण करना ताकि विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों के अनुरुप विषयवस्तु को संक्षिप्त खण्डों में विभाजित किया जा सके। संक्षिप्त विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण करना और उनके अनुरुप विषयवस्तु को सरल और सुगम ढ़ंग से कक्षा में प्रस्तुत किया जा सके। शिक्षण गतिविधियों का पूर्व निर्धारण करना जिससे शिक्षक यह तय कर सके कि कक्षा में शिक्षण के दौरान क्या संकेत देने हैं? और क्या सामग्री का उपयोग करना है? कक्षा में अधिगम में सहायता प्रदान करने वाली सामग्री का उपयोग और चयन दिव्यांग बच्चों की आवश्यकता के अनुरुप करना चाहिए। जैसे- अगर कक्षा में दृष्टि बाधित और श्रवण बाधित बच्चे हैं तो दोनों की आवश्यकता के अनुसार अधिगम सामग्री होनी चाहिए। दृष्टि बाधित बच्चे सुन सकते हैं और श्रवण बाधित बच्चे देख सकते हैं इसलिए श्रव्य-दृश्य अधिगम सामग्री बच्चों को समझने में सहायता करेगी। दृष्टि बाधित बच्चों के लिए ब्रेल लिपि में उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। जबकि सामान्य बच्चों के लिए केवल दृश्य या केवल श्रव्य सामग्री भी कार्य कर सकती थी।

शिक्षण विधि में भी आवश्यक अनुकलन जरुरी हो जाता है। शिक्षण विधि ऐसी होना चाहिए जिसमें बच्चों को अधिक से अधिक स्वयं या अपने साथियों के साथ मिलकर कार्य करके सीखने की प्रेरणा मिले और उनका आवश्यक पुनर्बलन भी प्रदान करना चाहिए। तथा दिव्यांग बच्चों के अनुसार उन्हें अतिरिक्त समय भी दिया जाना चाहिए। अनुदेशन से होने वाली प्रगति का निरीक्षण अवश्य करना चाहिए और दिव्यांग विद्यार्थियों की सफलताओं को सबके सामने प्रोत्साहन के रुप में रखना चाहिए।

कार्य को छोटे छोटे भागों में बांटकर विद्यार्थियों से करवाना चाहिए तथा जिससे दिव्यांग बच्चों की कार्य क्षमता के अनुसार कार्य की मात्रा, काम करने की गति और कक्षा गतिविधियों में परिवर्तन करके

ऐसी परिस्थितियों निर्मित की जाएं की ये बच्चे आसानी से वो कार्य कर सके और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हो सकें। दिव्यांग बच्चों की अधिगम कठिनाई के अनुसार उनको दिए जाने वाले कक्षा सम्बन्धी कार्य या गतिविधियों में भागीदारी में अगर कठिनाई आती है तो उसमें परिवर्तन करके उसी के समान कोई अन्य कार्य दिया जा सकता है जो करने रुचिकर हो या फिर उसे छोटे छोटे भागों में बांटकर पूरा करने को कहा जा सकता है।

9.8 सारांश

इस इकाई के अध्ययन करने के पश्चात् आप ये समझ गए होंगे कि किन किन शिक्षण अधिगम विधियों का प्रयोग किया जाना चाहता है| अनुदेशन उद्देष्यों के निर्धारण , सहयोग आधारित एवं सहकार आधारित अधिगम शिक्षण एवं अधिगम सामग्री में अनुकूलन करके शिक्षक दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उनकी निशक्तता की प्रकृति और गम्भीरता के अनुसार सम्बन्धित पाठ के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री को अनुकूलित किया जा सकता है।

9.9 निबंधात्मक प्रश्न

7. दिव्यांग बच्चों की कक्षा में आप सामग्री में आप क्या अनुकूलन करेंगे?

2. सम-कक्षी शिक्षण पर टिप्पणी कीजिए।

इकाई-10 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए अनुदेशन सामग्री

10.7 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 श्रव्य-दृश्य सामग्री
10.4 श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण
10.5 समय रेखा
10.6 आनुवांशिक या वंशावली चार्ट
10.7 श्यामपट्ट
10.8 फ्लानेल बोर्ड
10.9 स्मार्ट बोर्ड
10.10 मानचित्र
10.11 ग्लोब
10.12 चलचित्र तथा फिल्म खण्ड
10.13 टेलीविजन
10.14 रेडियो
10.15 टेप-रिकॉर्डर
10.16 ओवरहेड प्रोजेक्टर
10.17 पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन
10.18 सामाजिक विज्ञान खेल
10.19 सारांश
10.20 निबंधात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में भी अन्य विषयों की तरह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए अनुदेशन सामग्री आवश्यक होती है। प्राचीन काल से ही कुछ न कुछ शिक्षण के ढ़ंग प्रचलन में

रहे हैं। इन शिक्षण के तौर तरीकों या शिक्षण विधियों का उपयोग विद्यार्थियों तक सरलता से ज्ञान पहुंचाने के लिए किया गया होगा।

प्रभावी शिक्षण के लिए आदिकाल से आज तक के शिक्षण में अनेक ढंग प्रचलित रहे हैं, जिनमें उद्देश्यों की समानता के होते हुए भी विधि एवं प्रविधियों तथा साधनों की विविधता देखने को मिलती है। एक समय था जब विद्यालय एक ऐसी संस्था थी, जिनमें शिक्षण-कार्य स्वयं शिक्षक द्वारा मौखिक रुप से किया जाता है। उनको किसी भी अन्य साधन से इस कार्य में सहायता नहीं मिलती थी और बालक निष्क्रिय श्रोता बना रहता है आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित हैं शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बालक की योग्यता, रुचि, मनोवृत्तियाँ, आवश्यकता आदि को आधार बनाया जाता है। अतः शिक्षण-क्रिया को सरल, सजीव तथा प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि नवीन सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाये कि उसका स्वरुप छात्र को अधिकाधिक सरल एवं स्पष्ट हो जाये। ऐसा करने के लिए शैक्षिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। इन शैक्षिक उपकरणों को शिक्षण-सामग्री के नाम से पुकारा जाता है।

शिक्षण-सामग्री के दो प्रमुख तत्व हैं- (7) माध्मय तथा (2) विधा। इस प्रकार आपके लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए रेखाचित्र, छायाचित्र, प्रतिरुप मानचित्र, वंशावली चार्ट, समय रेखाएं एवं अनेक आधुनिक शिक्षण अधिगम सामग्री वर्तमान में उपलब्ध हैं। आजकल हार्डवेयर तथा सोफ्टवेयर शब्दों का प्रचलन बहुत हो रहा है। शिक्षण-सामग्री में प्रयुक्त की जाने वाली मशीन सम्बन्धी वस्तुएं जैसे-फिल्म खण्ड प्रोजेक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर जिन्हें हम ऊपर माध्यम कह आये हैं, हार्डवेयर कहलाते हैं और इनमें उपयोग आने वाली वस्तुएं जैस- फिल्म, छायाचित्र, रेखाचित्र जो कि सूचना, अवधारणा आदि का निर्माण करते हैं, सोफ्टवेयर का निर्माण करते हैं। इस प्रकार हार्डवेयर तथा सोफ्टवेयर दोनों के मिश्रण से शिक्षण-सामग्री का निर्माण होता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में कुछ उपयोगी शिक्षण सामग्री का वर्णन आपकी सुविधानुसार नीचे किया जा रहा है-

10.2 उद्देश्य

इकाई में जो भी स्वअध्ययन सामग्री आपके समक्ष प्रस्तुत की जा रही है, इसका उद्देश्य यह कि आप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में उपयोगी सामग्री, साधन या उपकरण, तकनीकी तन्त्र है। उससे आप भलीभांति परिचित हो सकें। वर्तमान में जिस प्राकर तेज गति से तकनीकी विकास हो रहा

है उससे शिक्षा जगत भी अछूता नहीं रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी ऐसी नई तकनीकियों के प्रयोग की सम्भावनाएं शिक्षाविद तलाशने लगते हैं। परम्परागत शिक्षण सामग्री से लेकर अत्याधुनिक तकनीकी उपकरणों से सम्बन्धित जानकारी देने का हमारा प्रयास है। हमें आशा है कि आप इस इकाई को पूरा करने के पश्चात उपयुक्त अनुदेशन सामग्री का चयन करने में सक्षम हो सकेंगे।

10.3 श्रव्य-दृश्य सामग्री

श्रव्य-दृश्य सामग्री मुद्रित अथवा लिखित शब्द के अतिरिक्त वे साधन हैं जो वस्तु- विशेष या बिन्दु-विशेष की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। वस्तुतः किसी वस्तु की स्पष्ट धारणा के निर्माण मंे उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उदाहरणार्थ, हम आम को दखकर, छूकर, सूँघकर तथा चखकर सबसे अच्छी तरह समझ सकते हैं, परन्तु इस विशाल एवं जटिल संसार की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस कारण हमें उसे समझने के लिए प्रतिरुपों की सहायता लेनी पड़ती है। श्रव्य-सामग्री द्वारा ही हमें इन प्रतिरुपों को प्रदान किया जाता है। इनका श्रव्य दृश्य इस कारण कहा जाता है, क्योंकि वे श्रवण तथा दर्श (देखने) की दो इन्द्रियों द्वारा ही प्रभावित होते हैं। अतः श्रव्य-दृश्य सामग्री का अर्थ उस सामग्री से है जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गयी पाठ्य-सामग्री को समझाने में सहायता देती है।

10.4 श्रव्य-दृष्य सामग्री का वर्गीकरण

इन्द्रियों के प्रयोग पर श्रव्य-दृश्य सामग्री को अग्रलिखित तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(अ) श्रव्य सामग्री

(ब) दृश्य सामग्री

(ग) श्रव्य-दृश्य सामग्री

आपको समझने के लिए श्रव्य-दृश्य सामग्री के विभाजन को निम्नांकित चार्ट द्वारा प्रस्तुत है-

श्रव्य-दृष्य सामग्री

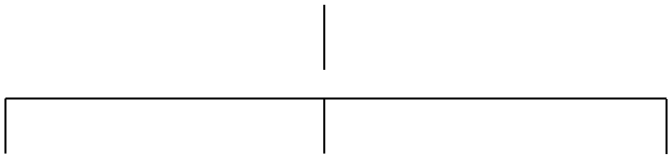

श्रव्य सामग्री	दृष्य सामग्री	श्रव्य-दृष्य सामग्री
7.रेडियो	7. वास्तविक वस्तुएँ	7.चलचित्र
2.ग्रामोफोन तथा लिंग्वाफोन	2. नमूने	2. समाचार सम्बन्धी फिल्म
3. टेप-रिकॉर्डर	3.चित्र	3. दूरदर्शन
	4. मानचित्र	4. वीडियो टेप
	5.रेखाचित्र तथा खाके	5. रिकॉर्ड ध्वनि से युक्त मुद्रित सामग्री
	6. समय रेखाएं	6.ड्रामा
	7.वंशावली चार्ट	
	8.ग्राफ	
	9.चार्ट	
	70.बुलेटिन बोर्ड	
	77.फ्लानेल बोर्ड	
	72.फ्लैश कार्ड	
	73. मेग्नेटिक बोर्ड	
	74. पोस्टर	
	75. छायाचित्र	
	76. मूक फिल्म	
	77. स्लाइड	
	78. जादू की लालटेन	
	79. चित्र विस्तारक यन्त्र	

इसके अतिरिक्त श्रव्य-दृश्य सामग्री को प्रक्षेपण के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है- (7) प्रक्षेपित सामग्री (2) अप्रेक्षित सामग्री -

श्रव्य-दृष्य सामग्री

प्रक्षेपित सामग्री	अप्रेक्षेपित सामग्री
7. फिल्म	
2. फिल्म	
3. ओपेक प्रोजेक्शन	
4. ओवरहेड प्रोजेक्शन	
5. स्लाइड	

प्रतीकात्मक सामग्री प्रदर्शन पट आयामी सामग्री श्रव्य सामग्री श्रव्य-दृश्यसामग्री क्रियात्मक सामग्री

7.कार्टून	7. श्यामपट	7. प्रतिरुप	7.रेडियो	7.दूरदर्शन	7. अभिनयीकरण
2.चार्ट	2. विज्ञप्ति पट	2. वस्तुयें	2. रिकॉर्डिंग	2.ड्रामा	2. प्रयोग
3.रेखाचित्र	3.फ्लानेल बोर्ड	3.कठपुतलियाँ	3. ग्रामोफोन व लिंग्वाफोन		3. क्षेत्रीय पर्यटन
4.फ्लैश कार्ड	4. पेग बोर्ड	4. रेखाचित्र			4. अभिक्रमित
अनुदेशन					
5. ग्राफ	5. मेग्नेटिक बोर्ड	5. नमूने			5. कम्प्यूटर

6. मानचित्र 6.
शिक्षण-मशीनें

7. चित्र

8. छायाचित्र

9. पोस्टर

उपरोक्त वर्णित श्रव्य-दृश्य सामग्री के अतिरिक्त आपके पाठ्यक्रम के अनुसार कुछ अन्य अनुदेशन सामग्री का वर्णन नीचे किया जा रहा है-

10.5 समय रेखाएं

समय रेखाएं किन्हीं भी समय आधारित घटनाओं को एक विशेष क्रम में व्यवस्थित करके विद्यार्थियों के समक्ष रखने से विभिन्न इतिहास सम्बन्धी प्रकरणों को समझने में आसानी होती है। मान लीजिए अगर आप ऐतिहासिक घटनाओं के प्रकरण का शिक्षण कर रहे हैं तो आप विद्यार्थियों के समक्ष घटनाओं के घटित होने के क्रम में व्यवस्थित कर लेते हैं तो ये घटनाएं विद्यार्थियों को आसानी से याद रह पाएंगी और विद्यार्थी उनमें तारतम्यता भी स्थापित कर सकते हैं।

आवश्यकतानुसार शिक्षक अपने विषय की घटनाओं के आधार पर समय रेखा की रचना कर सकते हैं और उसका उपयोग कक्षा में कर सकते हैं। आपके समझने के लिए एक ऐतिहासिक घटनाओं की समय रेखा का उदाहरण दिया जा रहा है-

जैसे- अगर आपको सन 7857 से लेकर 7947 तक की प्रमुख घटनाओं का शिक्षण करना है। तो आप एक क्रम में 7857 से प्रारम्भ करके तिथि/वर्ष के साथ घटना का नाम लिखकर सभी प्रमुख घटनाओं का नाम और समय लिखते जाइए और आपकी समय रेखा तैयार हो जाएगी। इसके प्रयोग करने से आपको बहुत अधिक प्रयास बार बार नहीं करने होते हैं, कि किस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं का शिक्षण किया जाए। इनके माध्यम से विभिन्न कहानियां/घटनाओं को मनोवैज्ञानिक और तार्किक क्रम में बता सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर इसी समय रेखा का प्रयोग कर सकत हैं। लेकिन इनके बनाने में थोड़ा समय लगता है, परन्तु विद्यार्थियों की दृष्टि से ये समय रेखाएं उन्हें अधिगम करने बहुत सुविधा प्रदान करती हैं।

10.6 आनुवंशिक या वंशावली चार्ट

इतिहास में वंशावली चार्ट की बहुत महत्ता होती है। वंशावली चार्ट सामान्य चार्ट से अलग होकर किसी राजवंश के वंश के सभी सदस्यों के सम्बधों के आधार पर बनाया गया चार्ट होता है। जिसमें कि विद्यार्थियों का उस राजवंश के सभी सदस्यों और उनके परस्पर सम्बन्ध तथा उनके पदो ंके बारे में बड़ी आसानी से जानकारी हो जाती है। इस प्रकार इस चार्ट में विभिन्न सदस्यों के मध्य रेखाओं का प्रयोग करके सम्बन्धों को दर्शाया जाता है। इस प्रकार के चार्ट का प्रयोग सामाजिक विज्ञान शिक्षण में विशेषकर इतिहास से जुड़े प्रकरणों में बहुत उपयोगी होता है। जहां किसी राजवंश की वंशावली पढ़ानी हो। हालांकि इसका उपयोग अन्य प्रकरणों में भी किया जा सकता है जहां पर कोई वर्गीकरण बताना हो। ऐसे चार्ट सामान्य चार्ट से अधिक मनोवैज्ञानिक होते हैं और विद्यार्थियों को जटिल वंशावली भी सरलतम रुप में प्रस्तुत करने में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए ऐसे चार्ट का एक उदाहरण दिया गया है।

मुगल की वंशावली का चार्ट (सौजन्यःमैपसइन्डिया डॉट कॉम)

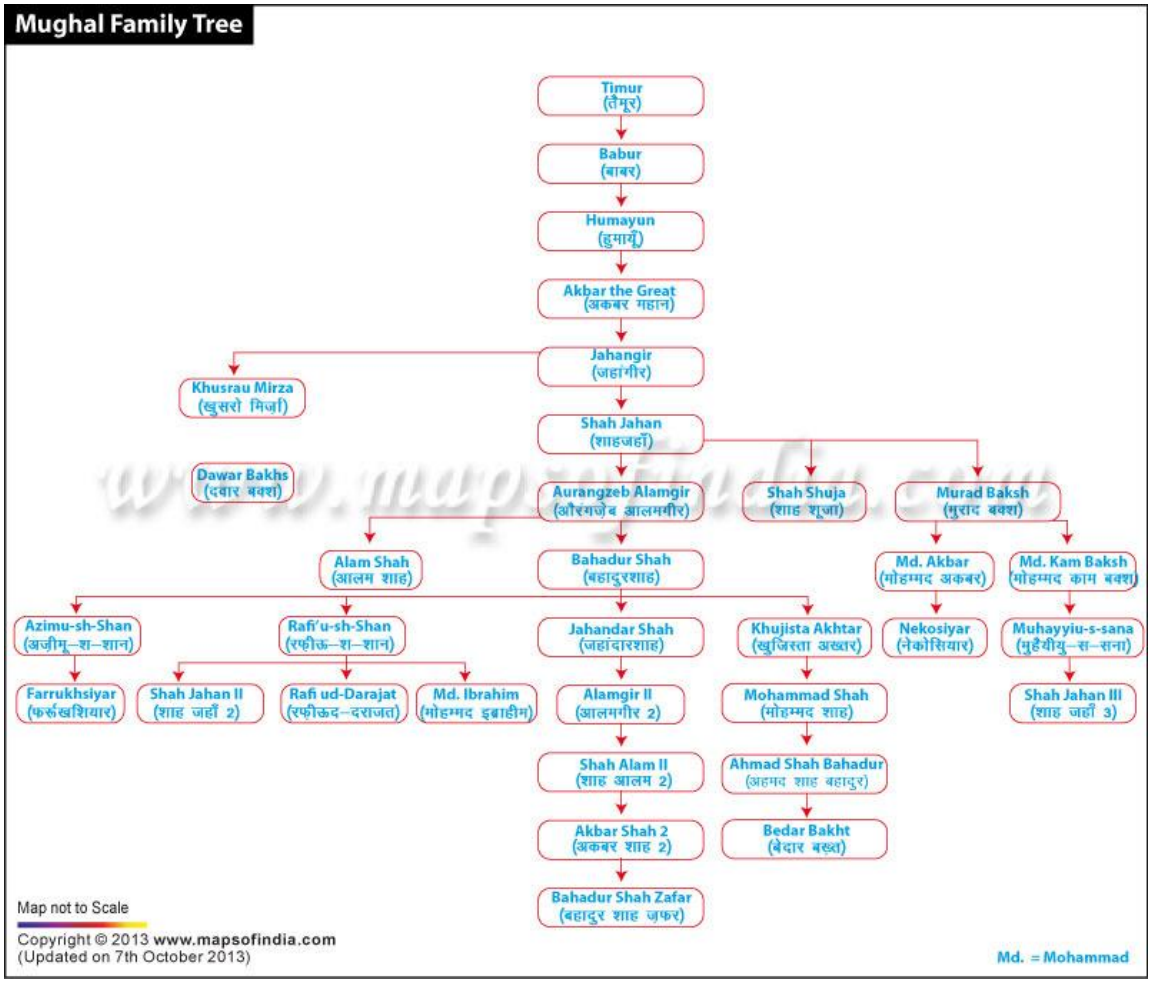

10.7 श्यामपट्ट

प्राचीन समय से ही यह शिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रुप में माना जाता रहा है। लेकिन हमारे देश में उपेक्षित विद्यालय उपकरण के रुप में आज भी प्रचलन में है। हालांकि वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी विकास के चलते विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी आधारित नवीन पट्टों के की तरफ ध्यान अधिक है। परन्तु परम्परागत श्यामपट्ट का कक्षा में अपनी अलग स्थान है। आजकल विद्यालयों के भवनों का निर्माण करते समय कक्षाओं में श्यामपट्ट के लिए पर्याप्त स्थान रखने की ओर ध्यान नहीं होता है। आज भारत में श्यामपट्ट का उतना प्रयोग नहीं किया जाता जितना तीस-चालीस वर्ष पूर्व अध्यापक करते थे।

श्यामपट या चॉकबोर्ड कोई आकर्षक वस्तु तो नहीं है लेकिन यह एक आकर्षण रहित काले रंग की वस्तु है। लेकिन वर्तमान में हरे रंग के और सफेद रंग के बोर्ड ज्यादा चलन में हैं। श्यामपट्ट का प्रयोग ठीक किया जाए तो है तब यह काफी प्रेरणादायक हो जाता है। स्वच्छता, शुद्धता तथा तीव्रता के मानक स्थापित करने में इसका महत्व बहुत अधिक है। किसी पाठ के दौरान श्यामपट्ट पर बनाया गया कोई चित्र समूची कक्षा का ध्यान पाठ की ओर आकर्षित करने में सफल होता है। श्यामपट्ट पर ऐसा साधन है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है। उसके उपयोग के लिए किसी तकनीकी की आवश्यकता नही है और न उच्च कोटि के कलात्मक कौशल की। इसके उपयोग के लिए कोई अतिरिक्त उपकरण पास रखना भी जरुरी नहीं।

श्यामपट के उपयोग से सम्बन्धित ध्यान रखने योग्य बातें

7. कक्षा का कार्य प्रारम्भ होने से पहले ही श्यामपट्ट के लिए आवश्यक सब वस्तुएँ एकत्र कर लें।

2. श्यामपट पर केवल महत्वपूर्ण बातें ही लिखें याद रखें कि श्यामपट्ट विस्तारपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता।

3. श्यामपट पर बने मानचित्र या रेखाचित्र पर छात्रों को ध्यान को केन्द्रित करने के लिए संकेतक का प्रयोग अवश्य करें।

4. श्यामपट्ट को झाड़न या कपड़े से साफ करें, हाथ से या अँगुलियों से नहीं

5. श्यामपट्ट की स्थिति ऐसे स्थान पर हो जहाँ से सभी छात्र उसको सुविधापूर्वक देख सकें। उस पर प्रकाश का प्रतिबिम्ब न हो।

6. श्यामपट्ट पर सुन्दर लिखना चाहिए। इसके अतिरिक्त जो भी बात श्यामपट पर लिखी जाये, वह क्रम में होनी चाहिए, जिससे छात्रों में भी क्रम में लिखने की आदत बन जाये।

7. श्यामपट पर लिखे शब्दों का आकार ऐसा होना चाहिए, जिनको समस्त छात्र आसानी से देख सकें। उस पर छोटे-छोटे शब्द नहीं लिखने चाहिए।

8. शिक्षक को लिखते समय श्यामपट को ढक नहीं लेना चाहिए, बल्कि उसे 450 के कोण पर खड़ा होकर लिखना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो कक्षा में अनुशासनहीनता आने के अवसर उत्पन्न हो जायेंगे।

9. शिक्षक को श्यामपट पर लिखने के पश्चात् एक ओर खड़ा होना चाहिए, कक्षा का निरीक्षण करना चाहिए और उनकी वैयक्तिक कठिनाइयों को सुलझाना चाहिए। उसको ऐसा इसलिए करना चाहिए, जिससे प्रत्येक छात्र लिखी हुई बात को ठीक प्रकार से देख सके।

70. आप श्यामपट पर जो कुछ लिखें उसे साथ-साथ बोलते जाएं तथा लिखते समय कभी-कभी विद्यार्थियों पर नजर रखनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

7. क्या कक्षा शिक्षण में परम्परागत श्यामपट्ट या चॉक बोर्ड वर्तमान तकनीकी के समय में भी उपयोगी है? विचार व्यक्त कीजिए।

2. वंशावली या आनुवांशिक चार्ट की इतिहास शिक्षण में उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

3. श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण लिखिए।

10.8 फ्लानेल बोर्ड

इसको फ्लानेल ग्राफ भी कहते हैं। यह लकड़ी का एक बोर्ड होता है। जिस पर फेल्ट (नम्दा) या फ्लानेल चढ़ा रहता है। इस पर चित्रों को केवल थोड़ा दबाकर चिपकाया जा सकता है। चित्रों को एक क्रम मंे प्रदर्शित करने तथा उनमें अंकित व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करने के लिए यह उपकरण बहुत उपयोगी है। फ्लानेल बोर्ड का उपयोग प्रदर्शित सामग्री के विकासशील पक्षों को समझाने के लिए किया जा सकता है।

10.9 स्मार्ट बोर्ड

वर्तमान में आधुनिक सूचना और सम्प्रेषण तकनीकी के विकास के फलस्वरुप कम्प्यूर और लिक्युिड क्रिस्टल डिस्प्ले प्रोजेक्टर के संयोग से स्मार्ट कक्षा की अवधारणा को बल मिला है। इसके साथ ही हमारी कक्षा का श्यामपट्ट भी सामान्य न होकर अब अन्तर्क्रियात्मक सफेद बोर्ड के रुप में उभर कर सामने आया है। इस बोर्ड को छूकर भी इस पर कार्य किया जा सकता है। इसके अंगों के रुप में अन्तर्क्रियात्मक सफेद बोर्ड, कम्प्यूटर और प्रोजेक्टर को माना जा सकता है। आज के तकनीकी युग में हमारे देश के विद्यालय भी अपनी कक्षाओं में स्मार्ट बोर्ड के प्रयोग पर बहुत जोर दे रहे हैं। स्मार्ट बोर्ड के उपयोग से कक्षा में वातावरण काफी सजीव और अन्तर्क्रियात्मक बन जाता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को वीडियो, ऑडियो और आनलाइन इन्टरनेट की सहायता से कक्षा को बहुत रोचक बनाया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में स्मार्ट बोर्ड की सहायता से अधिगम करते विद्यार्थी

10.10 मानचित्र

सामाजिक अध्ययन में मानचित्र का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा छात्रों के सम्मुख अमूर्त वस्तुओं का ज्ञान मूर्त कर दिया जाता है। सामाजिक विज्ञान शिक्षक इसका उपयोग निम्नलिखित बातों का ज्ञान प्रदान करने के लिए कर सकता है-

(7) शिक्षक विद्यार्थियों को राजनीतिक तथा प्राकृतिक दशा का सम्यक् ज्ञान कराने में मानचित्र का प्रयोग कर सकता है।

(2) मानचित्रों का प्रयोग स्थानों की पहचान करने के लिए किया जा सकता है। यदि आप सामाजिक विज्ञान शिक्षक के रुप में स्थानीय वातावरण के विषय में अध्यापन करा रहे हैं तो उसके स्थानों को निर्धारित करने में इसके द्वारा सफल होगा तथा उसकी भौगोलिक स्थिति को समझ सकेगा।

(3) मानचित्रों द्वारा क्षेत्रों का तुल्नात्मक ज्ञान दिया जा सकता है।

(4) मानचित्रों द्वारा किसी स्थान के भौगोलिक सम्बन्धों को प्रदर्शित करने में सहायता मिलती है।

(5) मानचित्रों का उपयोग सामाजिक विज्ञान का शिक्षक भौगोलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों को दिखाने के लिए भी कर सकता है।

(6) मानचित्रों का उपयोग विभिन्न प्रदेशों की जातियों, उपज तथा भाषाओं आदि का ज्ञान कराने के लिए भी किया जा सकता है।

मानचित्र के प्रकार

7. पाठ्य-पुस्तकों के मानचित्र

2. चित्रात्मक मानचित्र- इनमें विभिन्न वस्तुओं, इमारतों, स्मारकों तथा स्थितियों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं।

3. दीवार मानचित्र

ये मानचित्र कक्षा की दीवारों पर अंकित किये जाते हैं। ये छात्र तथा शिक्षक-दोनों की दृष्टि से लाभदायक हैं शिक्षक किसी बात को समझाते समय पूर्ण कक्षा के ध्यान को इनकी सहायता से अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। यदि सामाजिक अध्ययन का शिक्षक मानचित्रों का उपयोग का वास्तविक लाभ उठाना चाहता है तो उसको बाजार के बने हुए मानचित्रों का उपयोग कम करना चाहिए, क्योंकि छात्रों द्वारा बनाये हुए मानचित्र अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे। यदि विद्यार्थी मानचित्र स्वयं बनायेंगे तो उनकी

कल्पना-शक्ति तथा निर्णय शक्ति का विकास होगा। जब तक वे मानचित्रों को सही से बनाना नहीं सीखेंगे तब तक वे उनको पढ़ने में भी सफल नहीं हो सकेंगे। इनके बनाने में सीखने की प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धान्त 'करके सीखने' का उपयोग होता है। करके सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। इसलिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षक को अपने बच्चों से मानचित्र बनवाने चाहिए।

मानचित्रों का उपयुक्त चयन और उपयोग

चित्रों का प्रभाव उनमें उपयुक्त चयन और उपयोग पर निर्भर है। अपने अनुभवों के कारण बालक प्रायः गलत धारणाएँ बना लेते हैं। उपयुक्त चित्रों उपयुक्त चित्रों द्वारा इन गलत धारणाओं को दूर किया जा सकता है। विषयों के उपयुक्त चयन एवं उपयोग में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

7. किसी भी अध्ययन सामग्री के चयन की भांति कक्षा के लिए चित्रों के चयन में यह ध्यान रखना चाहिए चयनित सामग्री या मानचित्र विद्यार्थियों की आवश्यकता पूरी कर सकेंगे।

2. श्रव्य-दृश्य साधनों के समान मानचित्रों का चयन भी विद्यार्थियों के औसत स्तर के अनुकूल होने चाहिए।

3. छोटे बच्चों के लिए चुने गये चित्र तेज रंगों वाले होने चाहिए और उनमें विवरण अधिक नहीं होने चाहिए।

4. शिक्षण के लिए उन चित्रों का चयन किया जाना चाहिए जो बच्चों के समक्ष वस्तुओं का यथार्थ रुप प्रस्तुत करें।

5. चित्र का चयन करते समय चित्रगत वस्तुओं के आकार की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

6. कक्षा में दिखाये जाने वाले चित्रों का आकार इतना बड़ा और स्पष्ट होना चाहिए कि वे सभी छात्रों को साफ-साफ दिखाई दें।

7. चित्र का उपयोग करते समय उसे उचित स्थान पर रखना या टाँगा जाना चाहिए। चित्र को हाथ में लेकर प्रदर्शित नहीं करना चाहिए।

10.11 ग्लोब

भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए ग्लोब एब महत्वपूर्ण साधन है। आपको भी याद होगा कि बचपन की कक्षाओं में आपने भी इसे देखा होगा। अब ग्लोब एक आवश्यक दृश्य-श्रव्य साधन हो गया है। ग्लोब की सहायता से हम विश्व की भौतिक एकता, उसके एक भाग का शेष भागों के साथ सम्बन्ध तथा संसार के एक भाग से दूसरे भाग की दशा-स्थिति देख और समझ सकते हैं।

ग्लोब की सहायता से अक्षांश और रेखांश या देशान्तर, समय-परिवर्तन और ऋतु-परिवर्तन सरलता से समझे जा सकते हैं।

ग्लोब तीन प्रकार के होते हैं- (7) **राजनीतिक ग्लोब**, (2) **भौतिक राजनीतिक ग्लोब (**3) **स्लेट-पृष्ठीय ग्लोब।** प्राइमरी कक्षाओं में राजनीतिक ग्लोब का उपयोग किया जाता है। इनमें न्यूनतम विवरण दिए रहते हैं। ऊँची कक्षाओं में भौतिक राजनीतिक ग्लोबों का प्रयोग किया जाता है। इनमें उच्चावस्था अथवा रंग की सहायता से ऊँचे भूखण्ड दिखाये जाते हैं। स्लेट-पृष्ठीय ग्लोब सभी कक्षाओं के लिए उपयोगी होता है, क्योंकि विशिष्ट आवश्यकता के अनुसार इस पर मानचित्र खींचा जा सकता है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण मंे ग्लोब अत्यन्त आकर्षक तथा उपयोगी उपादान है। इनके द्वारा हम पृथ्वी के आकार का ज्ञान सरलता से दे सकते हैं। ग्लोब द्वारा उन सब बातों का स्पष्टीकरण सरलता से किया जा सकता है जो एटलस तथा दीवार मानचित्रों से नहीं किया जा सकता। वातावरण का मानव के साथ क्या सम्बन्ध है? इसका स्पष्टीकरण ग्लोब द्वारा सुगमता से किया जा सकता है। पृथ्वी की आकृति तथा उसकी गति, ऋतुएँ आदि बातें जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर निर्भर हैं, बिना ग्लोब की सहायता से नहीं पढ़ाई जा सकतीं। इसीलिए सामाजिक अध्ययन के शिक्षक का यह एक महत्वपूर्ण उपादान है।

10.12 चलचित्र तथा फिल्म खण्ड

मनोवैज्ञानिकों के परीक्षणों ने इनके शिक्षा में प्रयोग को प्रोत्साहन दिया। इनके उपयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में सहायता मिलती है। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में चलचित्रों तथा फिल्म-खण्डों का बहुत महत्व है। सामाजिक विज्ञान का शिक्षक इनकी सहायता से मानवीय सम्बन्धों को स्पष्ट करने में सफल हो सकता है। वह इनके माध्यम से छात्रों को विभिन्न देशों के लोगों के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, पोशाकों, रहन-सहन के ढंगों, त्यौहारों, उत्सवों आदि से अवगत करा सकता है तथा उनकी समानताओं एवं असमानताओं को स्पष्ट कर सकता है। इसके अतिरिक्त वह अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में सहायता प्रदान कर सकता है। इनके माध्यम से वास्तविक परिस्थितियों तथा वर्तमान घटनाओं को सपष्ट कर सकता है।

चलचित्रों के गुण

7. इनके द्वारा छात्रों को सीखने के लिए प्रेरणा दी जाती है।

2. छात्रों को अनुभव करने के लिए स्थितियाँ प्रस्तुत की जाती है।

3. इनके द्वारा वाद-विवाद के लिए भी अवसर प्रदान किये जाते हैं।

4. छात्रों को स्वाध्ययन करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।

5. नवीन पाठ के प्रारम्भ करने के लिए बहुत ही लाभदायक हैं।

6. इनके द्वारा छात्रों की समझने की शक्ति तथा विचारधारा को विकसित किया जाता है।

7. मन्द-बुद्धि बालकों की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उपादान है अर्थात् इनके द्वारा उनके सरलता तथा सुगमता से शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

उपर्युक्त लाभें को तभी प्राप्त किया जा सकता हैं जब शिक्षक विद्यार्थियों से चलचित्र देखने के पश्चात् इससे सम्बन्धित प्रश्न करे। जिससे उसे यह मालूम हो जाये कि विद्यार्थियों ने क्या ग्रहण किया है? इसके पश्चात् उस पर वह विद्यार्थियों से एक छोटा-सा लेख लिखवाकर देख सकता है।

10.13 टेलीविजन

आप जानते हैं कि टेलीविजन नवीनतम श्रव्य-दृश्य उपकरण है। शिक्षा देने के लिए इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। लेकिन इसके ऊँची कीमत के कारण इसका प्रयोग अभी तक सीमित है। टेलीविजन में बालक अपनी देखने तथा सुनने की-दोनों इन्द्रियों का प्रयोग करने के कारण किसी भी तथ्य को शीघ्रता से सीख जाता है। टेलीविजन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वह 'जीवन' होता है अर्थात् वह किसी भी बात को सदैव विकारमुक्त रुप से उसी क्षण पर्दे पर प्रस्तुत कर देता है, जीवन्त होने के कारण यह अत्यधिक वास्तविक होता है। छात्रों को इसके प्रतिबिम्बों की यथार्थता पर सहज विश्वास हो जाता है और यह विश्वास शिक्षण को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त यह उपकरण योग्यतम शिक्षकों को देश की शिक्षा-संस्थाओं तक पहुँचा देता है और शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होता है, इसके सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह हैं कि इसमें मानचित्र, मॉडल, फोटोचित्र, फिल्म आदि विविध प्रकार की श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ताकि शिक्षण प्रभावशाली बन सके। विद्यालय स्तर के कई विषयों के लिए दूरदर्शन पर बहुत से शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। जिनका लाभ विद्यार्थियों को दिलाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पहले से रिकॉर्ड किए गए वीडियों का और आडियो का उपयोग कर सकते हैं।

10.14 रेडियो

रेडियो शिक्षा और मनोरंजन का महत्वपूर्ण उपकरण है। आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान में खेल द्वारा शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए रेडियो की ओर शिक्षा-विशारदों तथा मनोवैज्ञानिकों का ध्यान गया और उन्होंने इस उपकरण की शैक्षिक महत्ता पर विचार किया। आजकल अखिल भारतीय रेडियो द्वारा भी छात्रों तथा बच्चों की शिक्षा और मनोरंजन के लिए कार्यक्रम प्रसारित किये जाने लगे हैं।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में रेडियो की बहुत उपयोगी है। जैसा कि हम देख चुके हैं, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों को तात्कालीन घटनाओं से अवगत कराना है। इसके अतिरिक्त उसका उद्देश्य सद्भावना का विकास करना भी है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किये गये प्रयासों में रेडियो बहुत ही सहायक है। रेडियो की सहायता से विश्व तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न सामाजिक,

आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापक बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त इसके माध्यम से विद्यालय तथा समाज को एक-दूसरे के निकट लाया जा सकता है। उनसे उस विषय पर वाद-विवाद कराये तथा लेखाबद्ध करने के लिए आदेश दे। ऐसा करने से छात्रों में तर्कसम्मत चिन्तन करने की वृत्ति का विकास होगा तथा इस प्रकार का ज्ञान स्थायी होगा। इससे छात्रों को बोलने की कला तथा अपने विचारों का क्रमबद्ध करना आ जायेगा। रेडियो प्रसारणों को भी दो भागों में बांटा जा सकता है- सामान्य प्रसारण एवं शैक्षिक प्रसारण। रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों को आवश्यकतानुसार रिकॉर्ड करके रखा जा सकता है या फिर उनके प्रसारण का समय नोट करके विद्यार्थियों को सुनाया जा सकता है।

10.15 टेप-रिकॉर्डर

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में टेप-रिकॉर्डर और इसके रिकॉर्डस की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। आप इसका प्रयोग कक्षा में ऐसे समय कर सकते हैं जब समय की कमी के कारण में रेडियो से कार्यक्रम सुन और सुना नहीं पा रहे हो। रेडियो के कार्यक्रम निश्चित समय पर आते हैं। यदि रात्रि के साढ़े आठ बजे प्रधानमन्त्री या अन्य किसी विद्वान या राजनीतिज्ञ का भाषण प्रसारित होने वाला है तो हम उसका उपयोग नहीं कर सकते। इसके लिए विशिष्ट भावों तथा विचारों को टेप-रिकॉर्डस में भर लिया जाये तो हम उसका उपयोग विभिन्न तथा मनचाहे अवसरों पर कर सकते हैं। इसके द्वारा हम तत्कालीन घटनाओं से छात्रों को अवगत करा सकते हैं जो विद्यार्थियों को योग्य नागरकि बनने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

10.16 ओवरहेड प्रोजेक्टर

ओवरहैड प्रोजेक्टर ऐसा प्रोजेक्टर है जिसमें दिखाई जाने वाली सामग्री का चित्र सामने लगी स्क्रीन पर व्यक्ति के सिर से ऊपर बनता है। इसमें ट्रॉन्सपैरेन्सी को इसकी ऊपरी सतह पर लगे कांच के ऊपर रखा जाता है, और इस कांच के नीचे लगे हैलोजन के बल्ब को जलाया जाता है। जिससे इसके छाया प्रोजेक्टर में लगे लेन्स से और दर्पण से टकराने के बाद सामने लगी स्क्रीन पर बनीती है। यह एक ऐसा उपकरण है जो सामान्यतः प्रचलन में नहीं लेकिन तुल्नात्मक रुप से अन्य साधनों से सस्ता और प्रभावशाली है। ट्रॉन्सपैरेन्सी पर आप चित्र भी बनाकर भी प्रक्षेपण कर सकते हैं या फिर सीधे टा"न्सपैरेन्सी पर ही लिखकर प्रक्षेपित कर सकते हैं।

10.17 पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन

माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस प्रोग्राम का ही एक भाग है। जोकि माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी द्वारा बनाया गया है। माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन 7990 में प्रारम्भ किया गया था। कक्षा में प्रजेन्टेशन के लिए आजकल यह काफी प्रचलन में है। इसमें हम विद्यार्थियों

को विभिन्न फोटो, ऑडियो, वीडियो क्लिप, कार्टून, मानचित्र और ऑनलाइन संसाधनों लिंक का प्रयोग करके रोचक ढ़ंग से विषयवस्तु को प्रस्तुत कर सकते हैं। वर्तमान में तो स्मार्ट फोन में भी माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के भाग के रुप में पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन एप्लीकेशन उपलब्ध है।

इसमें वर्णित विभिन्न बिन्दुओं और तस्वीरों के प्रस्तुत होने के तौर तरीकों को आकर्षक बनाने के लिए इसमें एनीमेशन का भी प्रयोग किया जाता है। जब आपका प्रजेन्टेशन पूरी तरह बन जाऐ तो आप इसे स्लाइड शो के रुप में संरक्षित करके रख सकते हैं, ऐसा करने से कोई भी आपके प्रजेन्टेशन में बदलाव नहीं कर पाएगा। माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में माइक्रोसॉफ्ट पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन के कई नमूने उपलब्ध रहते हैं। इनका प्रयोग करके भी प्रजेन्टेशन बनाया जा सकता है।

10.18 सामाजिक विज्ञान गेम्स

भाषा एवं विज्ञान की तरह ही सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भी सामाजिक विज्ञान गेम्स को महत्व दिया जाने लगा है। कुछ सामाजिक विज्ञान आधारित खेलों का वर्णन यहां किया जा रहा है। आशा है कि आपके लिए उपयोगी साबित होंगे-

7. **सामाजिक प्रश्नोंत्तरी-** सामाजिक विज्ञान में सामाजिक प्रश्नोत्तरी के माध्यम से सामाजिक विज्ञान के तथ्यों को सिखाना रुचिकर हो सकता है। कोई एक इकाई पढाने के बाद भी आयोजित की जा सकती है। इससे विद्यार्थियों को प्रतियोगिता में भागीदारी करने की प्रेरणा भी मिलती है और अपने विषय का तथ्यात्मक ज्ञान का आधार भी मजबूत होता है। सामाजिक प्रश्नोत्तरी को इकाई योजना में रखते हुए इन्हें कुछ निश्चित अन्तराल के बाद भी कराया जा सकता है।

2. **सामाजिक पहेली-** पहेली प्राचीन काल से ही मानव के आमोद विनोद का माध्यम रहीं हैं और लोगों का मनोरंजन के साथ ही साथ पहेलियों ने मानव के ज्ञान और अनुभवों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानान्तरित करने में अहम भूमिका निभाई है। पूर्व माध्यमिक और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आज भी पहेलियों पर आधारित खेलों में रुचि देखने को मिलती है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान पर आधारित पहेलियों का निमार्ण करके ऐसी प्रतियोगिता का आयोजन या खेल का आयोजन किया जा सकता है।

10.19 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए रेखाचित्र, छायाचित्र, प्रतिरुप मानचित्र, वंशावली चार्ट, समय रेखाएं एवं अनेक आधुनिक शिक्षण अधिगम सामग्री वर्तमान में उपलब्ध हैं। आजकल हार्डवेयर तथा सोफ्टवेयर शब्दों का प्रचलन बहुत हो रहा है। शिक्षण-सामग्री में प्रयुक्त की जाने वाली मशीन सम्बन्धी वस्तुएं जैसे-फिल्म खण्ड प्रोजेक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर जिन्हें हम ऊपर माध्यम कह आये हैं, हार्डवेयर कहलाते हैं और इनमें उपयोग आने

वाली वस्तुएं जैस- फिल्म, छायाचित्र, रेखाचित्र जो कि सूचना, अवधारणा आदि का निर्माण करते हैं, सोफ्टवेयर का निर्माण करते हैं।

10.20 निबंधात्मक प्रश्न

7. स्मार्ट कक्षा से आप क्या समझते हैं**?** शिक्षण अधिगम को प्रभावी बनाने में इसे किस प्रकार उपयोगी मानते है**?**

2. सामाजिक विज्ञान शिक्षण में आप रेडियो के महत्व पर परिचर्चा कीजिए।

3. टेलीविजन मनोवैज्ञानिक रुप से अधिक प्रभावशाली शिक्षण अधिगम उपकरण के रुप में उपलब्ध है। विवेचना कीजिए।

इकाई 11सामाजिक विज्ञान में मूंल्याकन

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्वेश्य
11.3 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन का अर्थ व परिभाषा
11.4 सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन का महत्व
11.5 मूल्यांकन के प्रयोजन
11.6 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के साधन
11.7 सारांश
11.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
11.9 शब्दावली
11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

सामाजिक अध्ययन की औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखकर आयोजित एवं क्रियांवित की जाती है। बालक की शिक्षा प्रारम्भ करने से पहले यह निश्खित किया जाता है, कि हम उसमें क्या–क्या परिवर्तन चाहते हैं। अर्थात् पहले शिक्षा के उद्वेश्य निर्धारित किये जाते हैं। उन उद्वेश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों तथा सहायक साधनों का प्रयोग करके छात्रों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किये जाते हैं। इन अनुभवों से प्राय: यह उम्मीद की जाती है। कि बालक में अपेक्षित परिवर्तन हो जायेगें। परन्तु यदि ये परिवर्तन हुए की नहीं यदि हुये तो कहॉ तक हुए और यदि नहीं हुए तो उसके क्या कारण हैं? इन प्रश्नों का उत्तर मूल्यांकन द्वारा किया जाता है। अत: मूल्यांकन सामाजिक विज्ञान अध्ययन का अभिन्न अंग है। किसी भी छात्र ने कितनी प्रगति की शिक्षक इसका मूल्यांकन विभिन्न विधियों के माध्यम से करता है।

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन का बड़ा महत्व है। क्योंकि मूल्यांकन के द्वारा ही सामाजिक विज्ञान के शिक्षक अपने शिक्षध में सुधार करता हुआ बालक के व्यवहार में परिवर्तन कर शिक्षा के उद्वेश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है। इस इकाई में आप मूल्यांकन के अर्थ, परिभाषा, महत्व तथा प्रयोजन को जान पायेगें।

11.2 उद्वेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझ पायेगें।

सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन का अर्थ जान पायेंगे।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन की विभिन्न परिभाषायें जान पायेंगे।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के महत्व पर चर्चा कर पायेंगे।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के साधनों को जान पायेंगे।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के लिये प्रयोग होने वाली परीक्षा व्यवस्था को जान पायेंगे।

11.3 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन का अर्थ व परिभाषा

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा छात्रों की उपलब्धियों के सम्बन्ध में निर्णय दिया जाता है। शिक्षक द्वारा सुविचारित योजनानुसार शिक्षण कार्य किया जाता है। एवं शिक्षार्थी उस ज्ञान को हृदयंगम करने का प्रयास करते हैं। छात्र ने यह ज्ञान किस सीमा तक हृदयंगम किया है? एवं शिक्षा के हैं इन बातों को जानना या उसकी सही-सही जॉच करना ही मूल्यांकन है। मूल्यांकन के अर्थ एवं परिभाषा पर विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषायें इस प्रकार हैं-

क्विलन व हन्ना- मूल्यांकन वह प्रक्रिया है। जिसमें स्कूल द्वारा बालकों में होने वाले व्यवहार परिवर्तनों के सम्बन्ध में सूचना एकत्रित की जाती है। तथा उनकी व्याख्या की जाती है।

क्लार एवं स्टार- मूल्यांकन वह निर्णय या विश्लेषण है। जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है।

जेम्स एम0ली- मूल्यांकन विद्यालय कक्षा तथा स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यो को प्राप्त करने के सम्बन्ध में छात्र की प्रगति का पता लगाना है। मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन छात्रों के अधिगम को निर्देशित करना एवं आगे बढ़ाना है। इस प्रकार मूल्यांकन एक नकारात्मक प्रक्रिया न होकर सकारात्मक प्रक्रिया है।

वबेस्टर शब्दकोश- मूल्यांकन वह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा किस वस्तु के सही मूल्य को निर्णय पर पहुचाया जाता है।

शिक्षा आयोग- मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली को एक महत्वपूर्ण अंग है। यह शैक्षिक उद्वेश्यो से घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित है। यह केवल शैक्षिक उपलब्धि के मापन में ही सहायक नहीं है। वरन् उसमें सुधार भी करता है।

माइकेलिस- मूल्यांकन उद्वेश्य की प्राप्ति की सीमा का निर्धारण करने वाली प्रक्रिया है। इसमें निर्देश के परिणामों को जॉचने के लिए शिक्षक बालकों, प्रधानाचार्य तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली सभी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं।

उपयुक्त परिभाषा के आधार पर मूल्यांकन के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं।

मूल्यांकन उद्वेश्य केन्द्रित होता है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है। जो निरन्तर चलती रहती है।

सामाजिक विज्ञान में पूल्यांकन सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सम्बन्धित है।

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन केवल निर्देशन की उपलब्धि को ही नही जॉचता वरन् उसमें सुधार भी लाता है।

मूल्यांकन सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग हैं।

11.4 सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन का महत्व

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन द्वारा यह मालूम किया जाता है। कि उद्वेश्य की प्राप्ति कहॉ तक हो सकी है।

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन क्षरा कक्षा में छात्रों के उद्वेश्यों की प्राप्ति के अनुसार स्तरीकरण किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान में शिक्षण विधियों तथा प्रविधियों की उपादेयता और उनकी कमजोरियों को भी मूल्यांकन द्वारा ज्ञात किया जाता है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन प्रक्रिया शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिये पुनर्बलन का कार्य करती है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन उत्तम पाठ्यक्रम के निमार्ण में सहायक सिद्व होता है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन द्वारा सीखने में सुधार किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन द्वारा शिक्षण में सुधार किया जा सकता है।

11.5 मूल्यांकन के प्रयोजन

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन यह जॉचना होता है। कि बालकों ने योग्यताओं, कुशलताओं, वृत्तियों, रूचियों, समझदारी आदि को स्वयं में किस सीमा तक ग्रहण कर लिया है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन बालकों की सफलताओं, विफलताओं, कठिनाइयों, बाधाओं आदि का यथेष्ट निर्धारण करती है।

सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन से बालकों के उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक पथ प्रदर्शन देने मे सहायता मिलती है।

मूल्यांकन का सामाजिक विज्ञान में प्रयोजन शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि की उपयुक्तता की जॉच करना है।

सामाजिक विज्ञान के पाठयक्रम में सुधार लाने हेतु भी मूल्यांकन परमावश्यक है।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण की सफलता व विफलता की जॉच मूल्यांकन द्वारा ही होती है।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की कुशलता व सफलता का मापन मूल्यांकन द्वारा की सम्भव है।

11.6 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के साधन

वर्तमान समय में स्कूली शिक्ष के विभिन्न स्तरों पर किये जाने वाले मूल्यांकन पर दृष्टि डाले तो पता चला है कि वर्तमान समय में पूल्यांकन के साधनों के रूप में परीक्षा व्यवस्था का ही सहारा लिया जा रहा है। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन में भी पूर्व निर्धारित उद्वेश्यों का मूल्यांकन परीक्षा द्वारा की किया जाता है। जिसे निम्नलिखित प्रकार से समझा जाता सकता है।

परीक्षायें – अ. निष्पति परीक्षायें

ब. बुद्वि परीक्षायें

स. व्यक्तित्व परीक्षायें।

रीतियों- 1. आकास्मिक निरीक्षण अभिलेख

2. आत्मकथा

3. निर्धारण

4. व्यक्ति अध्ययन

5. समाजनिति

6. प्रश्नावली

7. साक्षात्कार

8. निरीक्षण

9. संचयी आलेख पत्र

इस इकाई में आप सामाजिक विज्ञज्ञन अध्ययन में प्रयोग होने वाली परीक्षा व्यवस्था को जान पायोगें।

सामाजिक विज्ञान में तीन प्रकार की परीक्षा व्यवस्था अपनायी जाती है।

सामाजिक परीक्षा

व्यावहारिक परीक्षा

भावात्मक व्यवहार की परीक्षा

सैद्वान्तिक परीक्षा दो प्रकार की होती है-

लिखित परीक्षा

मौखिक परीक्षा

व्यावहारिक परीक्षा तीन प्रकार ही होती है-

रिकार्ड की जॉच

मौखिक

प्रायोगिक

सैद्वान्तिक परीक्षा- सामाजिक विज्ञान अध्ययन में विभिन्न प्रकार के कौशलों आदि को परखने के लिए सैद्वान्तिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस परीक्षा में बालक को लिखकर अपनी योग्यता का

परिचय देना होता है। इस प्रकार की परीक्षा में कम समय में अधिक बालकों का मूल्यांकन किया जा सकता हे। अत- इसे परिमाणात्मक प्रविधि के नाम से भी जाना जाता हे। इसके अन्तर्गत होने वाली परीक्षाओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

लिखित परीक्षा- सामाजिक विज्ञान की परीक्षा में छात्रों को लिखित परीक्षा देनी होती है। वर्तमान में तो शिक्षा का ऐसा कोई स्तर या कक्षा नही हैं। जहॉ पर बालकों का मूल्यांकन करने हेत लिखित परीक्षा का आयोजन न किया जाता हो। लिखित परीक्षा का आयोजन न किया जाता हो। लिखित परीक्षा को अध्ययन की दृष्टि से निम्नलिखित भागों में बॉआ गया है-

परम्परागत या निबन्धात्मक परीक्षा

लघुत्तरात्मक परीक्षा

स. वस्तुनिष्ठ परीक्षा

अ. परम्परागत या निबन्धात्मक परीक्षा – निबन्धात्मक परीक्ष वे परिक्षायें होती हैं। जिनमे छात्रों को कुछ पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में एक निबन्ध के रूप में देने होते हैं। इसलिये इसे निबन्धात्मक कहा जाता है।

सामाजिक विज्ञान में इस प्रकार की परीक्षा का प्रचलन बहुत पहले से ही हो रहा है। इसलिये इसे परम्परागत परीक्षा भी कहा जाता है। सामाजिक विज्ञान में इसका महत्व कम नहीं हुआ है। यद्यपि स्कूल स्तर पर कई राज्यों में इस प्रकार की परीक्ष्ज्ञा का क्षेत्र कम हो गया है। निबन्धात्मक परीक्षा का महत्व कम इसलिये हो रहा है। क्योंकि इसमें निम्नलिखित कमियॉ दृष्टिगत होती है।

इससे रटने की प्रवृत्ति को बल मिलता है।

इसमें नकल करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

इसमें विश्वसनीयता की भी कमी होती है।

इस परीक्षा में निर्धारित विषय-वस्तु की पूरी जॉच नही की जाती है।

छात्र सामाजिक विज्ञज्ञन के पाठ्य-पुस्तक का अध्ययन ना करके परीक्षोपयोगी प्रश्नों को ही देखता है। इससे पाठ्य-पुस्तकों का स्थान बाजार में उपलब्ध वाछिंत पाठन-पठन सामाग्री ने ले लिया है।

ब. लघुत्तरात्मक परीक्षा- सामाजिक विज्ञान की परीक्षा में किसी लघुत्तरात्मक प्रश्न का उत्तर एक या दो पक्तियों तक में दिया जाना वांछित होता है। इस परीक्षा पद्वति में कमोवेश वे ही गुण-दोष मिलते हैं। जो कि वस्तुनिष्ठ परीक्षा में समाहित होते हैं।

स. वस्तुनिष्ठ परीक्षा- विविध स्तरों एवं अत्य प्रतियोगी परीक्षाओं में मूल्यांकन हेत आजकल वस्तुनिष्ठ परीक्षा ही काम में लायी जा रही है, अत: इसे आधुनिक पद्वति का नाम भी दिया गया है। इसका उपयोग दिनों-दिन बढ़ रहा है। क्योंकि इसमें निम्नलिखित गुण हैं-

यह परीक्षा विश्वसनीय है।

इसमें वैधता का गुण भी पाया जाता है।

अंकन का कार्य कम्प्यूटर द्वारा भी सम्भव है।

बालक के ज्ञानात्मक पक्ष्ज्ञ का मूल्यांकन अपेक्षाकृत अधिक अच्छी प्रकार से किया जा सकता है।

परीक्षा परिणाम घोषित करने में विलम्ब की सम्भावना कम होती है।

मौखौक परीक्षा- यह भी सैद्वान्तिक परीक्ष्ज्ञा का ही दूसरा भाग है। इस प्रकार की परीक्षा मुख्यत: उच्च प्राथमिक स्तर तक ली जाती है। इससे छात्र के पढ़ना, समझना, बोलना आदि कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार की परीक्षा के लिए अलग से अंको का निर्धारण किया जाता है।

व्यवहारिक परीक्षा- यह सामाजिक विज्ञान में दूसरे स्थान की परीक्षा व्यवस्था है। सामाजिक विज्ञान में इस प्रकार की परीक्षा माध्यमिक स्त्र से शुरू हो जाती है। सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों जैसे- इतिहास, गृह विज्ञान, कला नृत्य, संगीत आदि में इस प्रकार की परीक्षा के माध्यम से छात्रों द्वारा अर्जित कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है। इस परीक्ष्ज्ञज्ञ से बालक क्षरा अर्जित कौशलों का वास्तविक मूल्यांकन सम्भव है। इसमें सम्बन्धित कौशल सम्बन्धी क्रिया छात्र स्वयं करके दिखाता है। अत: इसमें छात्र शीघ्र सीखता है। इस परीक्षा के तीन उपविभाग हैं।

रिकार्ड की जॉच- सामाजिक विज्ञान के छात्रों क्षरा जो भी प्रायोगिक कर्य किये जाते हैं। उनकी एक रिकार्ड बुक बनायी जाती है। जिसकी जॉच बाह्रा परीक्षक द्वारा की जाती है। इसके लिये सामजिक विज्ञान विभाग द्वारा अंकों का निर्धारणद किया जाता है। इसका लाभ यह है कि छात्र निर्धारित कार्य को पूरे वर्ष ध्यानपूर्वक करता है। और उसका रिकार्ड बनाता जाता है। इससे वांछित कौशलों का विकास करने में आसानी रहती है।

ब. मौखिक परीक्षा- इसे वाई वा वासी भी कहा जाता है। यह सामाजिक विज्ञान की प्रयोगिक परीक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। इसके लिये भी निर्धारित अंक होते हैं। सामाजिक विज्ञज्ञन की परीक्षा में इसका लाभ यह होता है। कि छात्र प्रयोगिक कार्य सम्बन्धी सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करता है। और उसमे अपनी बात को दूसरों के सामने व्यक्त करने की क्षमता का भी विकास होता है।

अर्थात् उसमें आत्मविश्वास की भावना को विकास होता है। तथा परीक्षक भी आमने-सामने होकर वाछिंत जानकारी आसानी से प्राप्त करने में सफल होता है।

स. प्रायोगिक कार्य- सामाजिक विज्ञान की परिक्षा में प्रायोगिक कार्य एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके लिए भी निर्धारक अंग होते है। यह प्रयोगशाला में ही सामान्यत : सम्पन्न होता है। छात्र को निर्धारित कार्य दिया जाता है। वह से प्रयोगशाला में ही सम्पन्न करता है। तथा वही पर उत्तरपुस्तिका में उस की क्रिया विधि के विषय में लिख देता है जिसका मूल्यांकन परीक्षक द्वारा किया जाता है।

भावात्मक व्यवहार की परीक्षा- सामाजिक विज्ञान की तीसरी प्रकार की परीक्षा व्यवस्था में भावात्मक व्यवहार की परीक्षा का स्थान आता है। सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत इस प्रकार की परीक्षा के माध्यम से बालक में होने वाले भावात्मक परिवर्तन का मूल्यांकन किया जाता है। बालक में सामाजिक गुणों का विकास किस सीमा तक हुआ है। तथा उसकी अभीवृत्ति सकारात्मक दिशा में कहॉ तक पहुॅची है आदि तथ्यों का मता लगाया जाता है इन सभी तथ्यों का मता लगाया जाता है। इन सभी तथ्यों का मूल्यांकन करने के लिए विषय तकनीकों का उपयोग किया जाता है। जो कुछ मुख्य तकनीकियॉ निम्न लिखित हैं। -

संचयी आलेख

निरीक्षण

जॉच सूची

रेटिंग स्केल

प्रश्नावली

साक्षत्कार

बुद्वि परीक्षा आदि।

स्वयं मूल्यांकन हेतु प्रश्न

सैद्वान्तिक परीक्षा कितने प्रकार की होती है?

लिखित परीक्षा को कितने भागों में बॉटा गया है?

वस्तुनिष्ठ परीक्षा अधिक विश्वसनीय हैं। क्यों ?

11.7 सारांश

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन की प्रक्रिया का बड़ा महत्व है। क्योंकि मूल्यांकन के द्वारा ही सामाजिक अध्ययन शिक्षक अपने शिक्षण में सुधार करता हुआ बालक के व्यवहार में परिवर्तन कर शिक्षा के उद्वेश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है क्यांकि मूल्यांकन केवल शिक्षक क्षेत्र से ही सम्बन्ध नहीं रखता है। अत: कहा जा सकता हे। कि सामाजिक विज्ञान में शिक्षण के उद्वेश्यों से लेकर सीखने की प्रक्रिया की सफलता एवं सार्थकता तक व शुद्व एवं विश्वसनीय मापक के निर्माण में मूल्यांकन की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्नों के उत्तर-

दो प्रकार की होती है।

तीन भागों में बाटॉ गया है।

इसमें वैधता का गुण पाया जाता है।

11.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा बी.एल, माहेश्वरी बी.के;(2010) , सामाजिक विज्ञान शिक्षण राज प्रिन्टर्स 103/2, जयदेवीनगर गढ़रोड मेरठ

त्यागी गुरसरनदास,(2014-15) सामाजिक अध्ययन शिक्ष्ज्ञण का प्रणाली विज्ञान, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन्स

शर्मा आर.ए.(2007), सामाजिक विज्ञान शिक्षण (सामाजिक विकास), मेरठ, C/o आर.लाल बुक डिपो

शर्मा आर.के. वशिष्ठ मधु (2009) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आगरा राधा प्रकाशन

11.9 शब्दावली

परम्परागत- प्राचीन काल से प्रचलित

अंकन- गणना करना

प्रयोगिक कार्य – प्रयोगशाला में किया जाने वाला कार्य

मौखिक परीक्षा- आमने-सामने प्रत्यक्ष दी जाने वाली परीक्षा

11.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. सामाजिक विज्ञान अध्यययन में मूल्यांकन का अर्थ तथा परिभाषा बताइये।

2. सामाजिक विज्ञान अध्ययन में मूल्यांकन कका क्या महत्व है

3. सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन के कौन-कौन से साधनों को अपनाया जाता है।

4. भवात्मक व्यवहार की परीचा क्या होती है इसइके अन्तर्गत कौन-कौन सी तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है।

इकाई 12 आकलन- उपकरण और तकनीक से किये गए परीक्षण से पाठ्यक्रम और सहपाठ्यक्रम निमार्ण में सतत् और व्यापक मूल्यांकन की तकनीक

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम का अर्थ और परिभाषा
12.4 पाठ्यक्रम का महत्व
12.5 पाठ्यक्रम के प्रकार
12.6 सह पाठ्यक्रम या पाठ्यक्रम सहगामी
12.7 सह पाठ्यक्रम के प्रकार
12.8 सतत् और व्यापक मूल्यांकन
12.9 सामाजिक विज्ञान के मूल्यांकन में तकनीक और उपकरण का उपयोग
12.10 सारांश
12.11 शब्दावली
12.12 स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
12.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
12.14 निबन्धात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

मानव जीवन की सफलता का आधार शिक्षा ही है। शिक्षा के द्वारा ही मानव जीवन के कठिन व उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। शिक्षा मानव को उसके पर्यावरण के साथ अनुकूलन तथा सामजस्य स्थापित करने योग्य बनाती है। सामाजिक विज्ञान की शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति पाठ्यक्रम द्वारा ही सम्भव है। सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम की शिक्षा व्यवस्था की धडकन या शिक्षा के औपचारिक रूप की आत्मा कहा जाता है। पाठ्यक्रम के आभाव में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को महत्वहीन माना जाता है। सामाजिक विज्ञान के औपचारिक शिक्षण हेतु एक सुनिश्चित एवं योजनाबद्ध पाठ्यक्रम की अत्यधिक आवश्यकता होती है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में पाठ्यक्रम को शिचण प्रक्रिया की धुरी माना गया है कि पाठ्यक्रम का अर्थ और स्वरूप बदलता रहा है। समय की आवश्यकता के

अनुसार तथा छात्रों की सीखने की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम में बदलातव होते रहे हैं क्योंकि पाठ्यक्रम द्वारा ही एक शिक्षक ऐसी परिस्थियॉं उत्पन्न करता है जिससे छात्रों को नये अनुभव हो सके और वे सरलतापूर्वक सामाजिक विज्ञान को समझ जायें। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिये जो बालक को भावी जीवनके लिये तैयार कर सके ना कि केवल ज्ञान देने तक सीमित हो।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझ पायेगें साथ ही पाठ्यक्रमतथा सहपाठ्यक्रम निमार्ण में सतत् और मूल्यांकन की तकनीक को समझ पायेगें।

1) सामाजिक अध्ययन में पाठ्यक्रम को समझ पायेगें।

2) सामाजिक अध्ययन के अनुसार पाठ्यक्रम के अर्थ और परिभाषा को समझ पायेगें।

3) सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम तथा सहपाठ्यक्रम के महत्व और आवश्यकता को जान पायेगें।

4) सामाजिक विज्ञानमें सतत् और व्यापक मूल्यांकन की तकनीक को जान पायेगें।

5) सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम के मूल्यांकन में उपकरणों और तकनीक के महत्व को समझ पायेगें।

12.3 सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम का अर्थ और परिभाषा

शाब्दिक दृष्टिकोण के आधार पर पाठ्यक्रम दो शब्दों पाठ्य तथा क्रम का गठबंधन है। पाठ्य का अर्थ पढने योग्य तथा क्रम का अर्थ व्यवस्था से है अर्थात् पढने योग्य सामग्री। विष्ज्ञय वस्तु की व्यवस्था ही पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम का अंग्रेजी पर्याय कैरीकूलम शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द क्यूरेर से हुई है जिसका अर्थ है ''दौड का मैदान'' । यहॉ हम शिक्षार्थी को ''धावक'' तथा पाठ्रयक्रम को ''दौड का मैदान'' कह सकते हैं। पाठ्यक्रम शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को सयुक्त रूप से शिक्षा देने एवं ग्रहण करने में मार्ग दर्शन का कार्य करता है। पाठ्यक्रम को और अधिक स्पष्ट करने के लिये विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। कुछ विद्धानों द्वारा दी गई महत्वपूर्ण परिभाषायें निम्नलिखित हैं।

1) कर्निधम- कलाकार (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यक्रम) एक साधन है जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श उद्देश्य के अनुसार अपने स्टूडियों (स्कूल) में ढाल सके।

2) फ्रोबेल- पाठ्यक्रम को मान व जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए।

3) मुनरो- पाठ्यक्रम में वे सभी क्रियायें सम्मिलित हैं जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के हेतु विद्यालय में उपयोग करते हैं।

4) किलपैट्रिक – पाठ्यक्रम छात्रों का उस सीमा तक सम्पूर्ण जीवन है जिस सीमा तक विद्यालय इसे अच्छा या बुरा बनाने का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है।

5) शिक्षा आयोग(1964-66) ' हमारी राय में पाठ्यक्रम अधिगम अनुभवों की वह योग्यता है। जिन्हें विद्यालय अपनी बहुआयामी क्रियाओं (जो विद्यालय के अन्दर या बाहर होती हैं) के माध्यम से अपने परिवीक्षण में सम्पादित कर उपलब्ध करता है।

6) बेन्ट तथा क्रोनबर्ग – संक्षेप में पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु का ही सुव्यस्थित रूप है। जिसका निर्माण बालकों की आवश्कता की पूर्ति के लिए होता है।

उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में पाठ्यक्रम शिक्षण प्रक्रिया की धुरी होती है।

पाठ्यक्रम के आभाव में सामाजिक विज्ञान का शिक्षण महत्वहीन हो जाता है।

पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों की आवश्यकता की पूर्ति के लिये तैयार किया जाता है।

पाठ्यक्रम में समय और आवश्यकता के अनुसार बदलाव कना संभव होता है।

पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु का ही सुव्यवस्थित रूप है।

पाठ्यक्रम को सम्पूर्ण मानव जाति के ज्ञान और अनुभवों का सार समझाया जाना चाहिए।

12.4 पाठ्यक्रम का महत्व

1. सामाजिक विज्ञान की दृष्टि में एक बालक को लोकतन्त्र के लिए तैयार करने में पाठ्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
2. पाठ्यक्रम द्वारा सामाजिक विज्ञान के सभी छात्रों को पूर्ण विकसित, उत्साहित तथा प्रेरक बनाया जा सकता है।
3. पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों में ईमानदारी, निष्कपटता, मित्रता, सहयोग आदि गुणों का विकास किया जा सकता है।
4. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में जिन गुणों का विकास किया जा सकता है उसे पाठ्यक्रम की सहायता से विकसित करने में पाठ्यक्रम बडा बडा महत्व होता है।

5. सामाजिक विज्ञान में छात्रों की योग्यताओं का मूल्यांकन पाठ्यक्रम की सहायता से किया जा सकता है।
6. पाठ्रयक्रम की सहायता से सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तु का सुव्यवस्थित ढंग से अध्ययन कर शिक्षक तथा छात्र दोनों अपने समय और शक्ति का सही सदुपयोग कर सकते हैं।
7. सामाजिक विज्ञान में अलग अलग विषयों में अलग अलग शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। अत: पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षण विधियों का चयन करके सम्बन्धित विषय को और अधिक सार्थकता से समझा जा सकता है।

12.5 पाठ्यक्रम के प्रकार

विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों द्वारा पाठ्यक्रम के निम्न प्रकार निर्धारित किये हैं।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम :- विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम उस पाठ्यक्रम को कहते हैं जिसमें बालक की अपेक्षा विषय को अधिक महत्व दिया जाता है इस लिये इसे 'पुस्तक केन्द्रित पाठ्यक्रम' भी कहते हैं।

शास्त्रीय पाठ्यक्रम :- यह शिक्षा कमे प्रति परम्परागत दृष्टिकोण रखताहै इसके द्वारा आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन के विकास पर बल दिया जाता है इस प्रकार के पाठ्यक्रम का सूत्रपात प्राचीन यूनान तथा भारत के विद्यालयों में हुआ ।

बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम :- आधुनिक युग में सामाजिक विज्ञान की शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह हुआ है कि विषय केन्द्रित शिक्षा का स्थान बाल केन्द्रित शिक्षा ने ले लिया है। इसमें विषय से ज्यादा बालक को महत्व दिया जाता है। मान्टेसरी, किन्डरगार्टन आदि बाल केन्द्रित पाठ्यक्रम के उदाहरण हैं।

जीवन की स्थायी स्थितियों पर आधारित पाठ्यक्रम :- जीवन की स्थायी स्थितियों पर आधारित पाठ्यक्रम उन जारी रहने वाली स्थितियों में निहित है जिनमें प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अपने विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज में पाता है। जैम्स एम0ली0 ने जीवन की इन स्थितियों को तीन भागों में विभाजित किया है।

व्यक्तिगत क्षमताओं के विकास से सम्बन्धित स्थितियॉ।

सामाजिक साझेदारी के विकास से सम्बन्धित स्थितियॉ।

वातावरण से सम्बिन्धित कारकों तथा शक्तियों के प्रति प्रक्रिया करने की योग्यता से सम्बन्धित स्थितियॉ।

कोर पाठ्यक्रम :- कोर पाठ्यक्रम विषय केन्द्रित तथा बालकेन्द्रित पाठ्यक्रमों के विरूद्ध प्रतिक्रिया के फलस्वरूप विकसित हुआ है। यह अमेरिका में अधिक प्रचलित है। इसका मुख्य कारण आधुनिक युग की सामाजिक अव्यवस्था है। यह पाठ्यक्रम इस बात पर बल देता है कि विद्यालय अधिक सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करें और कुशल व्यक्तियों का निर्माण करें।

क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम :- यह पाठ्यक्रम कार्य पर आधारित होता है। इस पाठ्यक्रम का निर्माण डॉ0 जॉन डी0वी0 के प्रयासों से हुआ है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार अनुभव, ज्ञान या सीखना क्रिया के परिणाम है। इस पाठ्रयक्रम को अनुभव केन्द्रित के नाम से भी जाना जाता है।

12.6 सह पाठ्यक्रम या पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें

सामाजिक विज्ञान में शिक्षा को बालक के सर्वागीण विकास का आधार माना गया है इसलिये प्रत्येक विद्यालय में उन समन्वित कार्यक्रमों के गढन की परिकल्पना की जाती है जिसके द्वारा छात्रों के मानसिक विकास के साथ साथ शारीरिक, चारित्रिक,नैतिक व आर्थिक विकास भी किया जा सकें इसलिये पाठ्यक्रम के साथ साथ सहपाठ्यक्रम या पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन भी किया जाता है। अत: मुख्य पाठ्यक्रम के साथ विद्यालय में जो भी अतिरिक्त क्रिया कलाप करये जाते हैं। वे सह पाठ्यक्रम के नाम से जाना जाता है। जैसे संगीत, कला, खेलकूद आदि। इन क्रियाओं के सम्बन्धि में विभिन्न विचारकों द्वारा दिये गये विचार इस प्रकार है।

रॉस के अनुसार :- शिक्षा प्रक्रिया की धारणा जो बच्चों के प्रत्यक्ष अनुभवों या प्रत्यक्ष जीवन व्यापनद्वारा सीखने में विश्वासा करती है। स्कूल को एक छोटा समाज समझने की धारणा जिसमें बच्चे सामाजिक प्रक्रियाओं में वास्तविक रूप से भाग लेकर सभ्य जीवन व्यतीत करना सीखते हैं। इन आदर्शों की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों को स्वैच्छिक क्रियाओं का मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।

सुल्तान महीयुद्दीन के अनुसार :- इन क्रियाओं को अब अतिरिक्त नहीं माना जाता, बल्कि ये स्कूल कार्यक्रम का अभिन्न अंग है। आधुनिक शिक्षा में पाठ्य-क्रियाओं तथा पाठ्य अतिरिक्त क्रियाओं के अन्तर को समाप्त किया जा रहा है और विद्यार्थियों के सभी अनुभवों बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक, भावात्मक तथा शारीरिक को समन्वित करना स्कूल के प्रयासों का लक्ष्य है। तभी स्कूल विद्यार्थियों के लिये वास्तविक एवं सजीव संसार बन सकता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार :- स्वच्छ, आनन्द प्रद तथा सुव्यवस्थित स्कूल भवन मिल जाने के पश्चात् हम चाहेंगे कि स्कूल में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं का आयोजन हो जो विद्यार्थियों की विकास सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। उसमें मनोरंजन

कार्यों,क्रियाओं तथा योजनाओं की व्यवस्था करनी होगी जो बच्चों को प्रभावित करें और उनकी विभिन्न रूचियों को विकसित करें।

12.7 सह पाठ्यक्रम के प्रकार

किसी भी विद्यालय में जिन प्रमुख सह पाठ्यक्रम का आयोजन किया जाता है उनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित है।

दैनिक प्रार्थना सभा :- विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना सभी का छात्र तथा अध्यापकों दोनों के लिये बहुत महत्व होता है, छात्र इसमें नियमित्ता, अनुशासन, नैतिकता आदि बातें सीखते हैं।

विषय सम्बन्धी समिति :- विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामीक्रियाओं के अन्तर्गत कुछ विषय ऐसे हैं जिन पर विशेष समिति का गठन किया जासकता है, जैसे – विज्ञान क्लब, कृषि समुदाय , भाषा समिति आदि। इस समितियों के निमार्ण का सबसे बडा लाभ यह है कि इनसे छात्रों में विषय के प्रति रूचि को विभिन्न माध्यमों से विकसित किया जा सकता है। समाजिक विज्ञान के कुछ विषय जैसे इतिहास, भूगोल आदि में भ्रमणों का आयोजन इन समीतियों के माध्यम से सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

खेल-कूद सम्बन्धी क्रियाओं :- स्कूल की गतिविधियों में खेलों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रत्येक बच्चा खेल के प्रति आकर्षित होता है और उसमें रूचि भी होता है जहॉ खेलों से मनोरंजन तो होता ही है वहीं इससे शारीरिक, मानसिकतथा सामाजिक विकास में भी सहायता मिलती है।

विद्यालय प्रकाशन :- सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के अन्तर्गत विद्यालय पत्रिका प्रकाशन का भी महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय में प्रकाशित पत्रिका के माध्यम से छात्रों में निम्नलिखित गुणोंका विकास होता है।

लेखन शैली

आत्म सम्मान की भावना

उत्तरदायित्व की भावना

विद्याल से सम्बन्धित ज्ञान

अपने विचारों को व्यक्त करने की कला आदि।

पिकनिक व शैक्षिक भ्रमण :- सामाजिक विज्ञान में कुछ विषयों में सैद्धान्तिक से ज्यादा व्यावहारिक ज्ञान का ज्यादा महत्व होता है जैसे इतिहास में भ्रमण। अत: इन विषयों के बुनियादी अनुभवों के लिये यह आवश्यक है कि पिकनिक व शैक्षिक भ्रमण जैसे सह पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाये।

अभिरूचि प्रदर्शन :- चित्रकला, संगीत, नाटक, सिक्के संग्रह तथा आर्ट आदि कुछ ऐसे कार्य हैं, जो छात्रों की अभिरूचियों के अन्तर्गत आते हैं। अत: छात्रों के इन विशेष गुणों और अभिरूचियों को बढावा देने के लिए विद्यालय में इस प्रकार के अभिरूचि प्रदर्शन सह पाठ्यक्रम क्रियाओं का आयोजन होना चाहिये।

छात्र परिषद :- छात्र परिषद , विद्यालय सभा या छात्र संघ आदि एक ही प्रकार की गतिविधि है। इससे छात्र विद्यालयों में व्यवस्था एवं आचरण सम्बन्धी कार्यवाही में भाग लेते हैं तथा अपने आस पास के छात्र समाज के प्रति उत्तरदायित्व, कर्तव्यनिष्ठा तथा सहयोग आदि गुणों का विकास स्वयं में करते हैं।

12.8 सतत् और व्यापक मूल्यांकन

विद्यालय में मूल्यांकन के अन्तर्गत छात्रों के व्यक्तित्व के विकास सम्बन्धी लगभग सभी क्षेत्रों को शमिल किया जाता है। सतत् मूल्यांकन का अर्थ है कि छात्रों की क्षमता और उनकी कमियों को बार बार बताता तथा व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है, छात्रों के व्यक्तित्व के सभी पहलूओं का समावेश करना। अत: सतत् और व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है कि छात्रों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों की क्षमता और उनकी कमियों का बार बार आंकलन करना ताकि उन्हें अपने आप को समझने तथा सुधारने का बेहतर अवसर मिलता रहे और शिक्षक को भी अपने शिक्षण सम्बन्धी कार्य तथा नीतियों में सुधार का अवसर प्राप्त हो सकें।

बच्चों के मूल्यांकन की यह सतत् एवं व्यापक प्रक्रिया कोई पृथक गतिविधि न होकर सीखने सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न, सतत् और सारगर्भित अंग होतीहै। बच्चों की प्रगति के लिए आवश्यक है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया बालकेन्द्रित हो कक्षा में पायी जाने वाली विविधता अनुसार लचीली हो, तथा हर बच्चे की आयु,सीखने की गति, शैली और स्तर के अनुसार चलने वाली होनी चाहिये। अत: मूल्यांकन की प्रक्रिया कक्षाओं में चल रही सीखने सिखाने की ही एक प्रक्रिया है तथा मूल्यांकन के वही तरीके अच्छे हेाते हैं जो बच्चों के सीखने की गति और सीखने के तरीकों के अनुरूप होते हैं।

12.9 सामाजिक विज्ञान के मूल्यांकन में तकनीक और उपकरण का उपयोग

सामाजिक विज्ञान के छात्रों के व्यवहारों, योग्यताओं, क्षमताओं आदि गुणों का मापन करने तथा शैक्षिक विकास का आकलन करने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों तथा उपकरणों की आवश्यकता होती है। इनका प्रयोग छात्रों के विभिन्न प्रकार के व्यवहार के मापन करने में किया जाता है। इनके द्वारा ज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोचालक तीनों ही प्रारके व्यवहारों का मापन करना सम्भव

होता है। सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन हेतु प्रयोग होने वाले उपकरणों और तकनीकों का स विस्तार वर्णन निम्नलिखित है।

1 सामाजिक विज्ञान में मूल्यांकन हेतु प्रयोग होने वाले उपकरण

अवलोकन – यह व्यवहार मापन की अत्यन्त प्राचीन विधि है। अवलोकन में व्यक्ति या छात्र के वाह्य व्यवहार को देखकर उसके व्यवहार का वर्णन किया जाता है फिर उसके व्यवहार का मापन किया जाता है यह छोटे बच्चों के व्यवहार मापन की उपयोगी विधि है क्योंकि वे मौखिक तथा लिखित परीक्षाओं के प्रति जागरूक नहीं होते हैं इसके अतिरिक्त अनपढ, मानसिक रोगियों या अन्य भाषा भाषी व्यक्तियों के परीक्षण में अवलोकन अत्यन्त उपयोगी विधि है। अवलोकन दो प्रकार का होता है पहला स्वअवलोकन, इसमें व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार का अवलोकन करता है। दूसरा वाह्य अवलोकन, इसमें अवलोकनकर्ता अन्य व्यक्तियों के व्यवहार का अवलोकन करता है।

परीक्षण :- सामाजिक विज्ञान में परीक्ष्ज्ञण वे उपकरण होते हैं जो किसी छात्रों के किसी समूह के व्यवहार का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करते हैं। परीक्षण की प्रकृति के आधार पर परीक्षणों को मौखिक परीक्षण , लिखित परीक्षण तथा प्रयोगात्मक परीक्ष्ज्ञण के रूप में बॉटा जा सकता है।

साक्षात्कार :- साक्षात्कार व्यक्तियों से सूचना संकलित करने का सर्वाधिक प्रचलित साधन है। विभिन्न प्राकर की परिस्थितियों में इसका प्रयोग किया जाता रहा है। साक्षात्कार में किसी व्यक्ति से आमने सामने बैठकर विभिन्न प्रश्न पूछे जाते हैं तथ उसके द्वारा दिये गये उत्तर के आधार पर उसकी योग्यताओं का मापन किया जाता है। साक्षात्कार दो प्रकार का होता है :-

प्रमापीकृत साक्षात्कार

अप्रमापीकृत साक्षात्कार

प्रश्नावली :- यह प्रश्नों का एक समूह है जिसे उत्तरदाता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है तथा वह उसका उत्तर देता है । प्रश्नावली प्रमापीकृत साक्षात्कार का लिखित रूप है । साक्षात्कार में एक एक करके प्रश्न मौखिक रूप में पूछे जाते हैं तथा उनका उत्तर भी मौखिक रूप में प्राप्त होता है जबकि प्रश्नावली प्रश्नों का एक व्यवस्थित संचयन है। प्रश्नावली एक साथ कई व्यक्तियों को दी जा सकती है जिससे कम समय कम व्यय तथा कम श्रम में अनेक व्यक्तियों से प्रश्नों काउत्तर प्राप्त हो जाता है। उत्तर प्रदान करने के आधार पर प्रश्नावली दो प्रकार की हो सकती है (1) प्रतिबन्धित प्रश्नावली (2) मुक्त प्रश्नावली।

निर्धारित मापनी :- निर्धारण मापनी किसी व्यक्ति के गुणों का गुणात्मक विवरण प्रस्तुत करती है। निर्धारण मापनी की सहायता से व्यक्ति में उपस्थित गुणों की सीमा अथवा गहनता या आवृत्ति को मापने का प्रयास कया जाता है। निर्धारण मापनी में उत्तर की अभिव्यक्ति के लिए कुछ संकेत होते हैं

ये संकेत कम से अधिक अथवा अधिक से कम के सातत्व में क्रमबद्ध रहते हैं। उत्तरकर्ता को मापे जाने वाले गुण के आधार पर इन संकेतों में से किसी एक ऐसे संकेत का चयन करना होता है। जो छात्र में उपस्थित उस गुण की सीमा को अभिव्यक्त कर सके। इसके अनेक प्रकार

समाजमिति :- समाजमिति एक ऐसा पद है जो किसी समूह में व्यक्ति की पसन्द अत:क्रिया आदि एवं समूह के गठन आदि का मापन करने वाले उपकरणों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रविधि में व्यक्ति से कहा जाता है कि वह दिए गए आधार पर एक या एक से अधिक व्यक्तियों का चयन करें जैसे कक्षा में आप किसके साथ बैठना पसन्द करेगें आदि। छात्र या व्यक्ति इस प्रकार की एक दो या उससे अधिक पसन्द बता सकता है। इसमें प्राप्त प्रश्नों के लिए प्राप्त उत्तरों से तीन प्रकार का समाज मितीय विश्लेषण समाज मितीय मैट्रिक्स, सोशियोग्राम तथा समाजमितीय गुणांक किया जाता है।

संचयी अभिलेख :- सामाजिक विज्ञान में छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में एकत्रित किया जाता है। इनमें छात्रों की उपस्थिति, शैक्षिक प्रगति, योग्यता, प्रयोगात्मक कार्य, उनकी रूचियॉं, व्यक्तित्व आदि सूचनाओं का विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया जाता है। किसी छात्र की प्रगति को जानने तथा उसका मूल्यांकन करने में ये संचयी

समाजमिति :- समाजमिति एक ऐसा पद है जो किसी समूह में व्यक्ति की पसन्द अत: क्रिया आदि एवं समूह के गठन आदि का मापन करने वाले उपकरणों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रविधि में व्यक्ति से कहा जाता है कि वह दिए गए आधार पर एक या एक से अधिक व्यक्तियों का चयन करें जैसे कक्षा में आप किसके साथ बैठना पसन्द करेंगें आदि। छात्र या व्यक्ति इस प्रकार की एक , दो या उससे अधिक पसन्द बता सकता है। इसमें प्राप्त प्रश्नों के लिए प्राप्त उत्तरों से तीन प्रकार का समाज मित्तीय विश्लेषण समाजमितीय मैट्रिक्स, सोशियोग्राम तथा समाजमितीय गुणांक किया जाता है।

संचयी अभिलेख :- सामाजिक विज्ञान में छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप में एकत्रित किया जाता है। इनमें छात्रों की उपस्थिति ,शैक्षिक प्रगति, योग्यता, प्रयोगात्मक कार्य, उनकी रूचियॉं, व्यक्तित्व आदि सूचनाओं का विस्तृत आलेख प्रस्तुत कियाजाता है। किसी छात्र की प्रगति को जानने तथा उसका मूल्यांकन करने में ये संचयी

ऐनकडोटल अभिलेख :- इसमें वास्तव में छात्रों के शैक्षिक विकास से सम्बिन्धित महत्वपूर्ण तथा सार्थक घटनाओं का वस्तुनिष्ठ प्रस्तुतीकरण है। ये घटनाएं आनौपचारिक या औपचारिक दोनों ही ढंग की हो सकती है अध्यापक को इन घटनाओं का वर्णन घटना के घटित होने के बाद शीघ्रातिशीघ्र लिख देना चाहिए तथा घटना किन परिस्थितियों में घटितहुई उसका विवरण भी लिखना चाहिये। ऐनकडोटल अभिलेख प्रपत्र तैयार किया जाता है।

परीक्षण बैटरी:- परीक्षण बैटरी वास्तव में कुछ सम्बन्धित परीक्षणों या उपपरीक्षणों का एक निर्देशित समूह होता है। इसमें अभिलेख अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। संचयी अभिलेख वास्तव में किसी

छात्र किसी छात्र का शैक्षिक इतिहास होता है जो उसकी शैक्षिक उपलब्धी , उपस्थिति , बुद्धि स्वास्थ्य , चरित्र , पसन्द , नापसन्द आदि की सूचना रखता है संचयी अभिलेख प्रपत्र तैयार किया जाता है । परीक्षणों या उपपरीक्षणों की संख्या कुछ भी हो सकती है इसमें सम्मिलित परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या तथ समयावधि भी कम या अधिक हो सकती है।

2) सामाजिक विज्ञान के मूल्यांकन में प्रयोग होने वाली तकनीक :- मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न तकनीकों को पॉच मुख्य भागों में बॉटा जा सकता है जो कि निम्नलिखित हैं:-

अवलोकन तकनीक :- अवलोकन तकनीक से अभिप्राय किसी व्यक्ति के व्यवहार को देखकर या अवलोकित करके उसके व्यवहार का मापन करने की प्रविधि से है अवलोकन को व्यवस्थित एवं औपचारिक बनाने के लिए अवलोकन कर्ता चैक लिस्ट अवलोकन चार्ट, मापनी परीक्षण आदि उपकरणों का प्रयोग कर सकता है।

स्व-व्याख्या तकनीक :- इसमें मापें जा रहे व्यक्ति से ही उसके व्यवहार के सम्बन्ध में जानकारी पूछी जाती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्तिअपने बारे में स्वयं ही सूचना देता है जिसके आधार पर उसके गुणों को अभिव्यक्त किया जाता है। प्रश्नावली,साक्षात्कार, अभिवृक्ति मापनी इस तकनीक के लिए प्रयोग में आने वाले कुछ उपकरण है।

परीक्षण तकनीक:- परीक्षण तकनीक में व्यक्ति को किन्हीं ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है , जो उसके वास्तविक व्यवहार या गुण को प्रकट कर दें विभिन्न प्रकार के परीक्षण जैसे बुद्धि परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण, अभिरूचि परीक्षण आदि इस तकनीकके उदाहरण है।

समाजमितिय तकनीक :- समाजिमति तकनीक सामाजिक सम्बन्धों, समायोजन व अन्तर्क्रिया के मापन में काम आती है। इस तकनी कमें व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार से सम्बन्ध रखता है तथा अन्य व्यक्ति उससे कैसे सम्बन्ध रखते हैं, जैसे प्रश्नों पर उनके द्वारा दियेगये प्रत्युत्तरों का विश्लेषण किया जाता है सामाजिक गतिशीलता के मापन के लिए यह सर्वोत्तम तकनीक है।

प्रक्षेपीय तकनीक :- इस तकनीक में व्यक्ति के सम्मुख किसी अंसरचित उद्दीपन को प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति उस पर अपनी प्रक्रिया देता है। इस तकनीक की मान्यता है कि व्यक्ति अपनी पसन्द, नापसन्द, विचार आदि को अपनी प्रतिक्रिया में आरोपित कर देता है जिनका विश्लेक्षण करके व्यक्ति के गुणों को जाना जा सकता है। रोशा का मसि लक्ष्य परीक्षण, टी0ए0टी0 , पूर्ति परीक्षण इस तकनीक के प्रयोग के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण है।

स्वयं मूल्यांकन हेतु प्रश्न :-

पाठ्यक्रम को शिक्षा का क्या माना जाता है ?

पाठ्यक्रम कितने प्रकार के होते हैं ?

विद्यालय प्रकाशन में किस गुण का विकास होता है ?

मूल्यांकन की प्रक्रिया किस पर आधारित होनी चाहिए ?

12.10 सारांश

विभिन्न प्रकार के विषयों जैसे सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम का निर्माण छात्र की आयु, स्तर तथा कक्षा के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिये। पाठ्यक्रम को सार्थक बनाने में मूल्यांकन तथा मूल्यांकन में प्रयोग होने वाले उपकरणों व तकनीकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन ही उपकरणों ताकि तकनीकों के द्वारा ही किसी भी छात्र की योग्यता तथा क्षमताओं का सही आंकलन किया जा सकता है। अत: कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मूल्यांकन की सतत् तथा व्यापक विधियों का प्रयोग कर सार्थक परीणामों को प्राप्त किया जा सकता है।

12.11 शब्दावली

स्वव्याख्या	-	अपने बारे में स्वंय सूचना देना
अभिलेख	-	सूचना प्रपत्र
सतत्	-	लगातार चलने वाला

12.12 स्वमूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

1 पाठ्यक्रम को शिक्षा की धडकन माना जाता है।

2 पाठ्यक्रम पॉच प्रकार का होता है।

3 विद्यालय प्रकाशन में लेखन शैली के गुण का सर्वाधिक विकास होता है।

4 मूल्यांकन की प्रक्रिया बालक पर अर्थात् बालकेन्द्रित होनी चाहिये।

12.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 सिंह के0बी0 (2008) शिक्षा पाठ्यक्रम का निर्माण एवं मूल्यांकन नई दिल्ली, एन0बर0बुक्स मधुबन पडपडगंज।

2 शर्मा आर0ए0 (2007) सामाजिक विज्ञान शिक्षण (सामाजिक विकास) मेंरठ, निय रखेजा आर0लाल बुक डिपों (निकट गवर्नमेण्ट कॉलेज)।

3 सक्सेना सरोज (2010) विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा आगरा , साहित्य प्रकाशन।

4 गुप्ता एस0पी0 (2006) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।

5 Google.com

12.14 निबन्धात्मक प्रश्न

1 पाठ्यक्रम का अर्थ व परिभाषा बताइये, पाठ्यक्रम के कितने प्रकार होते हैं ?

2 सामाजिक विज्ञान में कितने प्रकार के सहपाठ्यक्रम होते हैं ?

3 सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन का क्या अर्थ होता है ?

इकाई-13 दिव्यांग बच्चों के लिए नैदानिक परिक्षण और संवर्धन तकनीक

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.2 सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांग ता का अर्थ और परिभाषा

13.4 सामाजिक विज्ञान अध्ययन के अनुसार दिव्यांग ता के प्रकार

13.5 विकलांगों के लिए शिक्षा का महत्व

13.6 संबर्धन तकनीक

13.7 सामाजिक विज्ञान के अनुसार पुनर्वास केन्द्र के उद्देश्य

13.8 समाजिक विज्ञान के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिये प्रावधान

13.9 सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांग बच्चों के लिये विशिष्ट विद्यालय व्यवस्था

13.10 सारांश

13.11 शब्दावली

13.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न के उत्तर

13.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

13.14 निबन्धात्मक प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

मनुष्य इस संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। उसके पास सोचने, समझने और करने की जो क्षमता है। वह किसी अन्य प्राणी की योजना के कारण वह अद्वत कार्य कर सकता है। वह अपने मानवीय गुणों तथा परोपकारी वृत्ति के माध्यम से दूसरे में आत्मविश्वास जगाकर उसे ही न भावना से देर कर सकता है। किसी भी सामाजिक और शैक्षिक प्रणाली की परिपक्वता की महत्वपूर्ण कसौटी है। कि वह समाज अपने अक्षमता और दिव्यांग सदस्यों की ओर कितना ध्यान देता है। यही कारण है कि शैक्षिक नवाचारों के माध्यम से सामाजिक विज्ञान की शिक्षा में सुधार लाया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप शैक्षिक तकनीकों के माध्यमों से विकलांगों के लिए शैक्षिक तकनीकों के माध्यमों से विकलांगों के लिए शैक्षिक प्रगति के नूतन आयाम प्रस्तुत किये हैं।

यदि सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से देख जाये दिव्यांग ता किसी भी प्रकार की निर्योग्यता हो सकती है। जो बालक विशेष की औसत बालकों की भॉति शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ बनाती है। ऐसे बालक सामान्य शिक्षा पद्वति से लाभन्वित नही हो पाते, दिव्यांग बालकों के अध्ययन से ज्ञात हुआ है। कि दिव्यांग बालक औसत बालक से सर्वथा भिन्न नही होते, कोई पक्ष विशेष ही ऐसा होता है। जिससे सीखने की स्थिति में विचलन उत्पन्न हो जाता है।

इस इकाई में आप समाजिक विज्ञान के अन्तर्गत बच्चों में दिव्यांग का अर्थ, परिभाषा, दिव्यांग ता के प्रकार तथा दिव्यांग ता के कारणों को जान पायेगें।

13.2 उद्वेश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप सामाजिक विज्ञज्ञन के अन्तर्गत दिव्यांग बच्चों के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझ पायेगें।

सामजिक अध्ययन में दिव्यांग बच्चों का अर्थ जान पायेगें।

सामजिक अध्ययन के अन्तर्गत दिव्यांग ता के विभिन्न प्रकारों को जान पायेगें।

सामाजिक अध्ययन में दिव्यांग बच्चों के नैदानिक परीक्षण का अर्थ जान पायेगें।

दिव्यांग बच्चों के नैदानिक परीक्षण का दिव्यांग बच्चों के लिये महत्व को समझ पायेगें।

दिव्यांग बच्चों के लिए प्रयोग होने वाली संवर्धन तकनीक का अर्थ समझ पायेगें।

सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत दिव्यांग बच्चों के लिये प्रयोग होने वाली संवर्धन तकनीक का महत्व जान पायेगें।

13.2 सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांगता का अर्थ और परिभाषा

दिव्यांगता का अर्थ ऐसे व्यक्ति से है। जो किसी अंग के न होने या उसके नकारा हो जाने पर एक सामान्य व्यक्ति के समान काम नहीं कर सकता, दिव्यांग ता एक असन्तुलन की स्थिति है। जोकि व्यक्ति विशेष के व्यवहार को प्रभावित कर उसको सामान्य व्यक्ति से अलग दर्शती है। दिव्यांग व्यक्ति शरीरिक रूप से असमर्थ होने के अलावा मानसिक रूप से भी असमर्थ हो सकता है।

दिव्यांग ता के अर्थ को और अधिकस्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। कुछ विद्वानों द्वारा परिभाषायें दी गई हैं।

बाल गेविन्द तिवारी- दिव्यांग ता एक ऐसी स्थिति है। जो किसी भी व्यक्ति को किसी भी अवस्था में उसके सामान्य व्यवहार, कार्यशक्ति, विचार एवं नियमित कार्यों को न्यूनाधिक प्रभावित कर आंगिक, मानसिक, सामाजिक व भावात्मक असन्तुलन उत्पन्न कर देती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन- अक्षमता या दिव्यांग ता मनोवैज्ञानिक , संवेगात्मक या शरीर के किसी अंग की क्षति होती है।

International classification of impairment Disability and handicapped के अनुसार- व्यक्ति में उम्र लिंग, सामाजिक, सांस्कृतिक कारकों में क्षति एवं अक्षमता के कारण जो नुकसान या पिछड़ापन हो जाता है। उसे दिव्यांग ता कहते हैं। उपयुक्त परिभाषा के आधार पर विलांगता के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं।

दिव्यांग व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक रूप से प्रभावित करती हैं।

सामाजिक विज्ञान की शिक्षा में बाधा उत्पन्न करती है।

दिव्यांग बालक की क्षमताओं में उसकी दिव्यांग ता का प्रभाव दिखाई देता है।

दिव्यांग ता बालक की सीखने की गति को प्रभावित करती है।

सामाजिक विज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में सवर्धन तकनीक का प्रयोग करके दिव्यांग व्यक्ति को सहायता प्रदान की जा सकती है।

13.4 सामाजिक विज्ञान अध्ययन के अनुसार दिव्यांगता के प्रकार

1. शारीरिक दिव्यांगता

2. मानसिक दिव्यांगता

3. सामाजिक दिव्यांगता

शारीरिक दिव्यांगता- सामाजिक विज्ञज्ञन के अनुसार, शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को शारीरिक दिव्यांग ता की श्रेणी में रखा गया है। जैसे गूगें, बहरे, अन्धे आदि।

मानसिक दिव्यांग ता- सामाजिक विज्ञान के अुनसार मानसिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को इस श्रेणी में रख गया है। जैसे- मोटी बुद्वि, मूर्ख या जड़बुद्वि आदि।

सामाजिक दिव्यांग ता- सामाजिक विज्ञान के अनुसार सामाजिक अक्षम व्यक्तियों को इस श्रेणी में रख गया है। जैसे- अनाथ, असहाय या बेसहारा आदि।

दिव्यांग ता के कारण- सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांग ता के प्रमुख तीन कारणों को बताया गया है। जो की निम्नलिखित हैं।

1. प्राकृतिक कारण

2. जन्मजात कारण

3. मानवकृत कारण

13.5 विकलांगों के लिए शिक्षा का महत्व

सामाजिक विज्ञान के अनुसार देश में करीब 25 लाख अन्धे, लॅगड़े-लूले, बहरे-गूॅग तथा अविकसित मस्तिष्क वाले बालक है। इनकी अपंगता या दिव्यांग ता इनके जीवन के लिए अभिशाप बन जाती है। इसलिए उनके व्यक्तिगत जीवन में सरलता, सौन्दर्य तथा सन्तुलन लाने के लिए उनको मानवीय सुख की अनुभूति करने योग्य बनाने के लिए इनकी यथासंभव शैक्षिक एवं व्यावसायिक सहायता की जाये।

सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से इनकी शिक्षा व्यवस्था करना न केवल आवश्यक ही है। वरन् महत्वपूर्ण भी है। यदि इस प्रकार इन लाखें विकलांगों की उचित शैक्षणिक तथा व्यावसायिक व्यवस्था न की गई तो जिन्दगी भर समाज पर एक भार स्वरूप बने रहेगें, कोई भी उत्पादक कार्य नहीं कर पायेगें। इतना ही नही इनको यू ही छोड़ दिया जाए तो वे अनेक सामाजिक समस्याओं का निमार्ण करेगें। जैसे- भिक्षावृत्ति अपनाना, अनैतिक कार्यों से जीविकोपार्जन करना, सामान्य बालकों मे गन्दी आदतों का निमार्ण करना आदि अत: कहा जा सकता हे। कि दिव्यांग व्यक्ति के लिये शिक्षा का महत्व एक सामान्य व्यक्ति से भी ज्यादा होती है।

विकलांगों की सहायता हेतु आवश्यक कदम- दिव्यांग ता कई प्रकार की होती है। इसलिये व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार व्यक्ति की दिव्यांग ता को पहचानने तथा उसकी आवश्यकता तथा योग्यता के अनुसार उसके योग्य शिक्षा या व्यवसाय के चुनाव के लिये कुछ नैदानिक परीक्षण तथा संवर्धन तकनीकों का सहारा लिया जा सकता है। जिससे किसी अक्षमता वाले व्यक्ति को समाज तथा सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं और व्यवस्थाओं का उचित लाभ प्राप्त हो सके।

सामाजिक विज्ञान के अनुसार एक दिव्यांग व्यक्ति को सहायता हेतु जिन मैदानिक परीक्षणों तथा संवर्धन तकनीकों का सहारा लिया जाता ह। उन नैदानिक परीक्षणों और संवर्धन तकनीकों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

नैदानिक परीक्षण- व्यक्ति में किसी प्रकार की असामान्यता, अयोग्यता, दिव्यांग ता या व्याधि के स्वरूप की ठीक महचान या निदान नैदानिक परीक्षण कहलाता है। यह मनोशारीरिक अव्यवस्थाओं की ज्ञात लक्षणावली के आधार पर करने के लिए विद्वानों द्वारा सुस्थिर की गई जॉच की विशिष्ट प्रणाली है।

सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से आधुनिक समय में नैदानिक परीक्षणों की हजार तरह की प्रश्नावलियॉ एवं पद्वतियॉ चलन में हैं। जिससे व्यक्ति के मनोजगत की सूक्ष्मजल विकृति की पहचान प्रायोगिक धरातल पर कर ली जाती है। ये परीक्षाऍं व्यक्तिगत रूप में भी होती है। और सामूहिक रूप में भी, आजकल समूह परीक्षाऍं, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से तता सैनिक विभाग और कार्यलयीय कर्मचारियों की सहायता से काफी मात्रा मे संपन्न की जा रही है।

व्यक्ति की अक्षमता, रोग या व्यक्ति की विशिष्ट कठिनाई आदि को जानने में ऐसी परीक्षाओं से बड़ी मदद मिलती है। मनोविज्ञान में इनका निर्धारण सामान्य शिक्षा, व्यक्तित्व मूल्यांकन या मनोरोग या रोग की विशेषावस्थाओं की दृष्टि से किया गया है। इस प्रकार के परीक्षण मे व्यक्ति परीक्षक द्वारा उपस्थित की गई समस्या के प्रति अपनी निजी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। यही प्रतिक्रिया नैदानिक मूल्यांकन के लिए सामाग्री प्रस्तुत करती है। उमगों अभिरूचियों तथा विशिष्ट कार्यक्षमताओं की प्रकृति ऑकने वाली कुछ सुनिश्चित परीक्षाऍं भी इनमे योग देती हैं।

नैदानिक परीक्षक तीन प्रकार के होते हैं।

1. प्रश्नोत्तर परक

2. प्रक्षेपित विचारों की स्वभाव मीमासा-परक

3. कार्य संपादन- परक

प्रश्नोत्तर परक परीक्षण- इस परीक्षण में पीक्षात्मक कसौटी पर कसे कुछ मानक प्रश्न पूछे जाते हैं। अथवा व्यक्ति को निश्चित उत्तरों मे से चुनना या प्रतिक्रिया व्यक्त करना पड़ता है। इस परीक्षण में

निम्नलिखित प्रकार की परीक्षा ली जाती हे। जैसे बुद्विमाप परीक्षा तथा अनुवृत्तिज्ञापक प्रश्नावलियॉ आदि।

प्रक्षेपित विचारों की स्वभाव मीमासा परीक्षण – इस परीक्षण मे व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया जो प्राय: रचनात्मक तथा विश्लेषधात्मक प्रकृति की होती हें। इन परीक्षाओं का विषय बनती हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ज्ञान होता है। इस परीक्षण के सहारे व्यक्तित्व की खास कमियों का ज्ञान होता है। क्योंकि व्यक्ति के उन्ही कुछ विचारों का प्रक्षेपण बाहर की ओर प्रस्तुत वस्तुओं के माध्यम से हो जाता है। इस परीक्षण में रोर्शक पद्वति, विषय वस्तु के विशिष्ट बोध की परीक्षा (TAT) तथा शब्द एवं वाक्य संबंधी पद्वति का प्रयोग किया जाता है।

कार्य संपादन परक परीक्षण- इन प्रकार की परीक्षाओं में एक समस्यामूलक कार्य व्यक्ति को जॉच के लिए दिया जाता है। जैसे- किसी व्यूहमय पहली को सुलझाने कार्य या किसी वस्तु को ढुढ़ने का कार्य आदि। विशिष्ट क्षमताओं की जॉच के लिये ये परीक्षण अत्यधिक लाभकारी है। इसके अन्तर्गत थर्स्टन की विविध जॉच प्रणालियॉ यिा डयूरल की पठन-असुविधा-विश्लेषण आदि पद्वतियों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार किसी भी मानसिक अक्षमता वाले व्यक्यिों के लिये नैदानिक परीक्षण अधिक उपयोगी सिद्व हो सकता है। यदि सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से देख जाये तो इन क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक बच्चों को महत्वपूर्ण सहायता प्रदानप की जा सकती है।

13.6 संबर्धन तकनीक

वर्तमान समय मे विकलागों को समाज से जोड़ने तथा जीवन की मुख्यधारा में मिलाने के लिये संवर्धन तकनीक के अन्तर्गत अनेक योजनायें और कल्याण कार्यक्रम चलायी जा रही है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना में विकलागों को कमजोर वर्ग का एक भाग माना है। भारत के संविधान में अनुच्छेद 41 तथा 46 में भी दिव्यांग व्यक्तियों के कल्याण पर जोर दिया गया है। पंचवर्षीय योजना मे विकलांगों के लिए अलग से रूपये का प्रावधान किया जाता है। और इस पैसे के द्वार अनके योजनाएँ तथा कार्यक्रम चलाये जाते हैं। इन योजनाओं के अन्तर्गत देश के सभी राज्यों में व्यावसायिका पूनर्वास एवं रोजगार केन्द्रों की स्थापना की गई है। कुछ प्रमुख दिव्यांग व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र इस प्रकार निम्नलिखित है।

1. आई.ओ.आई. कैम्पस कुवेरनगर अहमदाबाद(गुजरात)

2. ए.टी.आई. कैम्पस सिओन मुम्बई(महाराष्ट्र)

3. होसुर रोड बंगलौर (कर्नाटक)

4. 38, वदन राथी लेन, वेलिया घाटा, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

5. आई.टी.आई कैम्पस पूसा, नई दिल्ली

6. ए.ए. जवाहर जयपुर (राजस्थान)

7. द्वारा रोजगार कार्यालय पटना(बिहार)

8. रहेवानी गुबाहारी(असम) आदि

13.7 सामाजिक विज्ञान के अनुसार पुनर्वास केन्द्र के उद्वेश्य

1 विकलागों का व्यावसायिक दृष्टि से मूल्यांकन करना व उन्हें समायोजन क्षमता प्रदान करना।

2 व्यावसायिक पुनर्वास केन्द्र पर आये व्यक्तियों की चिकित्सकीय, सामाजिक, रोजगार सम्बन्धी व मनोविज्ञान सम्बन्धी आवश्यकताओं को ज्ञान करना व उनको उन आवश्यकताओं को पूरा कर सकने वाले अस्पताल, सामाजिक संस्थओं, रोजगार केन्द्रों व मनोवैज्ञानिकों आदि के विषय में सूचना व सलाह प्रदान करना।

3 दिव्यांग ता की प्रकृति के आधार पर स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा परीक्षणों के विषय में सूचना देना।

4 रोजगार केन्द्रों को विकलांगों को व्यवसाय देने वाली संस्थाओं से जोड़ना।

5 वयस्क विकलांगों का मनोवैज्ञानिक, शारीरिक एवं व्यवसायिक मूल्यांकन के उपरान्त उनके पुनर्वास हेतु नौकरी, प्रशिक्षण, रोजगार आदि क्रिया में सहयोग पहुचाना।

13.8 समाजिक विज्ञान के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के लिये प्रावधान

सामाजिक विज्ञान के अनुसार हमारे देश में विकलागों की संख्या 1.5 करोड़ के लगभग है इन बच्चों का मात्र 5 प्रतिशत ही विशेष विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करके रोजगार योग्य बन पाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस प्रकार के बच्चों के लिये निम्नलिखित कदम उठायें जा रहे हैं।–

1. जहॉ तक सम्भव हो शारीरिक रूप से थोड़े दिव्यांग बच्चों की शिक्षा व्यवस्था अन्य सामान्य बच्चों के साथ की जाये।

2. गम्भीर रूप से दिव्यांग बच्चों के लिये जिला स्तर पर छात्रावास सहित विशेष विद्यालयों की यथा सम्भवा स्थापना की जायें।

3. विभिन्न प्रकार के विकलांगों के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण के उपयुक्त प्रबन्ध किये जायें।

4. दिव्यांग बच्चों की विशेष कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुये प्रशिषित शिक्षकों की व्यवस्था प्राथमिक स्तर से ही की जायें।

5. विकलांगों बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में स्वैच्छिक प्रयासों को प्रत्येक सम्भव तरीकों से प्रोत्साहित किया जायें।

13.9 सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांग बच्चों के लिये विशिष्ट विद्यालय व्यवस्था

1. जिला एवं उपजिला स्तर पर विशिष्ट विद्यालय खोले जायें। इसके साथ ही एक औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र भी खोला जायेगा।

2. लड़के-लड़कियॉ के लिये पृथक-पृथक छात्रावास होते हैं।

3. इन विद्यालयों मे पाठयक्रम इनकी विशेष समस्याओं को ध्यान में रखकर संशोधित और परिष्कृत किया जाता है।

4. दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर एन.सी.ई.आर.टी, आई.सी.एस.आर, सू.जी.सी व नेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर हैण्डीकेण्ड आदि संस्थाओं से भारतीय परिस्थिति में अनुसान्धान कराये जाते हैं।

5. मानव संसाधन विकास मंत्रालय मे एकीकृत, सूचना प्रणाली की स्थापना की जाती हे। तथा समय-समय पर शैक्षिक सर्वेक्षण करवाये जाते हैं।

स्वयं मूल्यांकन हेतु प्रश्न-

दिव्यांग ता व्यक्ति को कितने प्रकार से प्रभावित करती है?

शारीरिक विलांगता क्या होती है?

दिव्यांग ता का सबसे महला कारण क्या है?

गम्भीर दिव्यांग छात्रों के लिये किस प्रकार के विद्यालयों की व्यवस्था होनी चाहियें?

13.10 सारांश

वर्तमान में दिव्यांग शिक्षा के सन्दर्भ में जन जागरूकता बढ़ी है। इस दिशा में अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। सामाजिक विज्ञान के अुनसार दिव्यांग बच्चों के लिये जो भी नैदानिक परीक्षणों तथा संवर्धन तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है। ताकि दिव्यांग बच्चों को उनके द्वारा स्वनिर्मित आवरण से बाहर निकालकर बाहर की खूबसूरत और शानदार दुनिया में शामिल किया जा सके तथा उनको इस हीन भावना से बाहर निकाला जा सके जिसमें वे स्वयं को ओरों से भिन्नन समझतें हैं। विश्व में सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय दिव्यांग व्यक्तियों का ही हैं। जिन्हें गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दिव्यांग बच्चों के प्रति विश्व में चेतना लाने के उद्वेश्य से 20 सितम्बर 1959 को ज्यूरिक सम्मेलन मे विश्व दिव्यांग दिवस का प्रारम्भ किया गया। तक से ही प्रत्येक वर्ष मार्च के तृतीय रविवार को यह दिवस विश्व के कई राष्ट्रों मे मनाया जाता है। भारत में भी 1982 वे वर्ष को राष्ट्रीय दिव्यांग वर्ष घोषित किया गया है। राष्ट्र हित की दृष्टि से देखा जाये तो दिव्यांग बच्चों के जीवन मे नैदानिक परीक्षण तथा संवर्धन तकनीके बहुत ही महत्वमूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

13.11 शब्दावली

नैदानिक – निदान हेतु

संवर्धन - प्रोत्साहन

बोध - ज्ञान या जानना

13.12 स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न के उत्तर

1. दिव्यांगता व्यक्ति को शरीरिक, मानसिक तथा सामाजिक तीन रूप से प्रभावित करती है।

2. शरीरिक रूप से अक्षमता या अपंगता शरीरिक दिव्यांगता कहलाती है।

3. गम्भीर रूप से दिव्यांग बच्चों के लिये छात्रावास सहित विशेष विद्यालयों की व्यवस्था होनी चाहिये।

13.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भार्गव महेश (2005) विशिष्ट बालक (शिक्षा एवं पुर्नवास) आगरा, प्रिन्ट पैलेस E-697 कमल नगर

2. श्रीवास्तव प्रवीण चन्द्र (2006) प्रारम्भिक शिक्षा के मूलभूत तत्व वाराणसी, वाराणसी एंलेक्टक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा0लि0 चौक

3. मिश्रा सुधार कुमार, मिश्रा अपर्णा लिंग, विद्यालय और समाज मेरठ, राज पिण्टर्स गढ़रोड

4. Google.com

13.14 निबन्धात्मक प्रश्न

1. बच्चों में दिव्यांगता का अर्थ तथा परिभाषा बताइये।

2. सामाजिक विज्ञान के अनुसार दिव्यांगता के क्या कारण होते हैं

3. नैदानिक परीक्षण क्या होता है यह कितने प्रकार का होता है।

4. संवर्धन के अन्तर्गत पुनर्वास केन्द्र के क्या-क्या उद्वेश्य निश्चित किये गये हैं।